... श्रील भक्तिविनोद ठाकुर और श्रील नरोत्तमदास ठाकुर ने अनेक प्रामाणिक भजन गाये हैं। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर कहते थे कि नरोत्तमदास ठाकुर के भजन वैदिक प्रमाण हैं। सभी वैष्णवों के भजन ऐसे ही हैं, वैदिक प्रमाण। इनमें कोई त्रुटि, धोखा, अपूर्णता अथवा भ्रम नही है। बद्धजीव अपनी मनोकल्पना से रचना करता है। वे अपूर्णता, भ्रम, त्रुटि तथा धोखे से भरे होते हैं। किन्तु जब हम वैष्णवों द्वारा रचित भजन सुनते हैं तो वे मुक्ति के लिए होते हैं...

(श्रील प्रभुपाद, डेनेवर, २७ जून १९७५)

।। श्री श्रीगुरु गौराङ्ग जयतः ।।

गौड़ीय वैष्णव गीत

वैष्णव आचार्यों की प्रार्थनायें एवं भजन

(निजी वितरण हेतु)

समर्पण

सम्पूर्ण विश्व में गौड़ीय वैष्णव संस्कृति का सरल-
सहज रूप से प्रचार करने वाले अंतर्राष्ट्रीय
कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य
श्री श्रीमद् ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
के चरणकमलों पर समर्पित

भूमिका

यह पुस्तिका गौड़ीय वैष्णव आचार्यों द्वारा रचित प्रार्थनाओं और भजनों का लघु संग्रह है। इसका उद्देश्य नये भक्तों को उन संस्कृत और बंगाली प्रार्थनाओं एवं भजनों से अवगत करवाना है जो प्रतिदिन हमारे मंदिरों में गाये जाते हैं। इसमें दैनिक, साप्ताहिक तथा वार्षिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों के दौरान गाये जाने भजनों का संग्रह किया गया है। साथ ही कुछ अन्य लोकप्रिय भजनों को भी स्थान दिया गया है।

भक्तियोग के मार्ग पर आध्यात्मिक प्रगति हेतु प्रार्थनायें करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्रील रूप गोस्वामी अपने ग्रंथ भक्तिरसामृतसिन्धु में नृसिंह पुराण से उद्धृत करते है – ''भगवान् श्रीकृष्ण के विग्रह के समक्ष आकर विभिन्न प्रार्थनाओं का उच्चारण करने वाला व्यक्ति तुरन्त समस्त पापफलों से मुक्त हो जाता है और अवश्यमेव वैकुण्ठ में प्रवेश करता है।''

ब्रह्मसंहिता में ब्रह्माजी द्वारा भगवान् कृष्ण की स्तुतियों के विषय में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती लिखते हैं, ''पाठकों से आग्रह है कि वे दैनिक कार्य के रूप में इन स्तुतियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और इनकी भावनाओं में प्रवेश करने का प्रयास करें।''

प.पू.सत्स्वरूपदास गोस्वामी अपनी पुस्तक *वन्दनम्* में शास्त्रोक्त प्रार्थनाओं के विषय में लिखते हैं – ''गाते हुए उनका अभ्यास करो, उन्हें याद करो, उनके साथ जीओ, अपने जीवन की परिस्थितियों में उनका प्रयोग करो। उनकी शरण लो।''

हम उन सभी भक्तों का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में इस पुस्तिका के प्रकाशनार्थ सहायता की है, और हृदय से प्रार्थना करते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण उनपर अपनी कृपावृष्टि करें।

– *प्रकाशक*

मंगलाचरण

श्रीगुरु प्रणाम

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अज्ञानरूपी अंधकार से अंधे हुए मेरे नेत्रों को प्रकाशमय ज्ञानांजनरूपी शास्त्रों की दृष्टि प्रदान करने वाले श्रीगुरु के चरणकमलों की मैं वंदना करता हूँ।

श्रील रूप गोस्वामी प्रणाम

श्रीचैतन्यमनोऽभिष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्।।

श्रील रूप गोस्वामी, जिन्होंने इस संसार में श्रीचैतन्य महाप्रभु की इच्छा पूर्ण करने वाले आन्दोलन की स्थापना की है, वे कब मुझे अपने चरणकमलों का आश्रय प्रदान करेंगे?

सपरिकर-श्रीहरि-गुरु-वैष्णव-वंदनम्

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललिता श्रीविशाखान्वितांश्च।।

मैं अपने गुरुदेव एवं सभी वैष्णवों के चरणकमलों पर सादर प्रणाम करता हूँ। मैं श्रीरूप गोस्वामी और उनके बड़े भाई श्रीसनातन गोस्वामी सहित श्रीरघुनाथ दास, श्रीरघुनाथ भट्ट, श्रीगोपाल भट्ट और श्रीजीव गोस्वामी के चरणकमलों पर सादर प्रणाम करता हूँ। मैं श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु के साथ श्रीअद्वैताचार्य, श्रीगदाधर, श्रीवास और उनके अन्य सभी पार्षदों को सादर प्रणाम करता हूँ। मैं श्रीललितादेवी, श्रीविशाखादेवी एवं अन्य सखी-मंजरियों सहित श्री श्रीराधा-कृष्ण के पदकमलों की वंदना करता हूँ।

श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद प्रणति

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले ।
श्रीमते भक्तिवेदान्त स्वामिनिति नामिने ।।

मी कृष्णकृपाश्रीमूर्ती अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद यांना सादर प्रणाम करतो. भगवान श्रीकृष्णांच्या चरणकमलांचा पूर्ण-आश्रय घेतल्याने ते भगवान श्रीकृष्णांना अतिशय प्रिय आहेत.

नमस्ते सारस्वते देवे गौरवाणी प्रचारिणे ।
निर्विशेष शून्यवादी पाश्चात्य देश तारिणे ।।

गुरुदेव! आप श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी के प्रिय सेवक हैं। आप कृपा करके श्रीचैतन्य महाप्रभु के संदेश का प्रचार कर रहे हैं तथा निर्विशेष और शून्यवाद से व्याप्त पाश्चात्य जगत् का उद्धार कर रहे हैं। आपके चरणों पर मेरा सादर प्रणाम है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रणति

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले ।
श्रीमते भक्तिसिद्धांत सरस्वती इति नामिने ।।

मैं कृष्णकृपाश्रीमूर्ति भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी श्रील प्रभुपाद के चरणों पर सादर प्रणाम अर्पण करता हूँ। भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों का पूर्ण आश्रय लेने के कारण वे उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं।

श्रीवार्षभानवीदेवी दयिताय कृपाब्धये ।
कृष्णसम्बन्धविज्ञानदायिने प्रभवे नमः।।

श्रीवार्षभानवीदेवी दयित दास (श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती के दीक्षा का नाम) के चरणकमलों पर मेरा प्रणाम है। वे श्रीमती राधारानी के विशेष कृपापात्र हैं तथा कृपावश सभी जीवों को श्रीकृष्ण सम्बन्धी विज्ञान प्रदान करते हैं।

माधुर्योज्ज्वल प्रेमाढ्य श्रीरूपानुगभक्तिद।
श्रीगौरकरुणाशक्ति विग्रहाय नमोऽस्तुते।।

जो श्रीचैतन्य महाप्रभु की करुणाशक्ति के मूर्तिमान् स्वरूप हैं, जो श्रीराधाकृष्ण की माधुर्यभावयुक्त भक्ति प्रदान करते हैं, और जो श्रील रूप गोस्वामी प्रदत्त भक्तिमार्ग का पूर्ण पालन करते हैं, मैं उन श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद को सादर प्रणाम करता हूँ।

नमस्ते गौरवाणी-श्रीमूर्तये दीन-तारिणे।
रूपानुग विरुद्धाऽपसिद्धान्त-ध्वान्त-हारिणे।।

मैं बारम्बार श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद को सादर प्रणाम करता हूँ, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं के मूर्तिमान् स्वरूप हैं। आप पतित जीवों का उद्धार करते हैं और श्रीरूपानुग तत्त्वज्ञान के विरुद्ध कुसिद्धांतरूपी अंधकार का विनाश करने वाले हैं।

श्रील गौरकिशोरदास बाबाजी प्रणति

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्यमूर्तये।
विप्रलम्भरसाम्बोधे पादाम्बुजाय ते नमः।।

जो साक्षात् वैराग्य और विप्रलम्भ-रस के सागरस्वरूप हैं, मैं उन श्रील गौरकिशोरदास बाबाजी महाराज को प्रणाम करता हूँ।

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर प्रणति

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द नामिने।
गौरशक्तिस्वरूपाय रूपानुगवराय ते।।

जो श्रील रूप गोस्वामी के अनुयायियों में श्रेष्ठ हैं तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के शक्तिस्वरूप हैं, मैं उन सच्चिदानन्द श्रील भक्तिविनोद ठाकुर को सादर प्रणाम करता हूँ।

श्रील जगन्नाथदास बाबाजी प्रणति

गौराविर्भावभूमेस्तं निर्देष्टा सज्जनप्रियः।
वैष्णवसार्वभौमः श्रीजगन्नाथाय ते नमः।।

मैं वैष्णवसार्वभौम श्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराज के चरणों पर सादर प्रणाम करता हूँ, जो सम्पूर्ण वैष्णव समाज में आदरणीय हैं और श्रीचैतन्य महाप्रभु की जन्मभूमि के निर्देशक हैं।

श्रीवैष्णव प्रणाम

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ।।

मैं सभी वैष्णवों के चरणकमलों पर प्रणाम करता हूँ, जो कल्पवृक्ष के समान सभी

इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं, करुणा के सागर हैं और पतित जीवों का उद्धार करने वाले हैं।

श्रीगौरांग महाप्रभु प्रणाम

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम-प्रदायते ।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य-नाम्ने गौरत्विषे नमः ।।

हे परम उदार अवतार! श्रीचैतन्य महाप्रभु के रूप में प्रकट हुए आप स्वयं श्रीकृष्ण हैं। आपने श्रीमती राधारानी का गौरवर्ण स्वीकार किया है और आप सभी को श्रीकृष्ण-प्रेम वितरित कर रहे हैं। मैं आपको सादर नमन करता हूँ।

श्रीपंचतत्त्व प्रणाम

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्।।

भक्तरूप (श्रीचैतन्य महाप्रभु), भक्तस्वरूप (श्रीनित्यानन्द), भक्तावतार (श्रीअद्वैताचार्य), भक्त (श्रीवास ठाकुर) और भक्तशक्ति (श्रीगदाधर), मैं इन पाँच तत्त्वों में प्रकट होने वाले भगवान् श्रीकृष्ण को सादर प्रणाम करता हूँ।

श्रीकृष्ण प्रणाम

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तुते।।

हे कृष्ण! करुणासिंधु! आप दीनजनों के सुहृद, सृष्टि के स्रोत, गोप-गोपियों के स्वामी और विशेष रूप से श्रीमती राधारानी के अत्यन्त प्रिय हैं। आपके चरणकमलों पर मेरा सादर प्रणाम है।

श्रीसम्बन्धाधिदेव प्रणाम

जयतां सूरतौ पङ्गोर्मम मन्दमतेर्गती।
मत्सर्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ।।

मधुर लीलाओं में निमग्न श्रीराधा-मदनमोहन की जय हो, क्योंकि वे अत्यन्त दयालु हैं और मेरे जैसे पंगु, अज्ञानी और अल्पबुद्धि के रक्षक हैं। उनके दोनों चरणकमल ही मेरे सर्वस्व हैं और मैं उनकी वंदना करता हूँ।

श्रीअभिधेयाधिदेव प्रणाम

दिव्यद्वृन्दारण्य कल्पद्रुमाध:
श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्ददेवौ
प्रेष्ठालीभि: सेव्यमानौ स्मरामि।।

मैं श्री श्रीराधा-गोविन्ददेव का स्मरण करता हूँ, जो परम रमणीय श्रीवृंदावन धाम में स्थित एक कल्पवृक्ष के नीचे दिव्य रत्नजड़ित भवन में मणियों के सिंहासर पर विराजमान हैं तथा अपनी प्रिय सखियों द्वारा सेवित हैं।

श्रीप्रयोजनाधिदेव प्रणाम

श्रीमान् रासरसारंभी वंशीवटतटस्थित:।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथ: श्रियेऽस्तु न:।।

श्री श्रीराधागोपीनाथ सदैव हमारे कल्याणार्थ विराजमान रहें। वे राससम्बन्धित रसों के स्रोत हैं और वंशीवट पर अपनी बाँसुरी की ध्वनि से किशोरी गोपियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

श्रीराधा प्रणाम

तप्तकाञ्चनगौरांगी राधे वृन्दावनेश्वरी।
वृषभानुसुते देवी प्रणमामी हरिप्रिये।।

हे तप्तकांचन गौरांगी (जिनकी अंगकान्ति सोने के समान है)! हे वृन्दावन की राज-राजेश्वरी! हे वृषभानु पुत्री! हे हरिप्रिये! हे देवी! हे राधारानी! मैं बारम्बार आपको प्रणाम करता हूँ।

श्रीपंचतत्त्व मंत्र

(जय) श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानंद।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृंद ।।

मैं श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैताचार्य प्रभु, श्रीगदाधर पण्डित प्रभु तथा श्रीवास प्रभु सहित अन्य सभी गौरभक्तों को प्रणाम करता हूँ। *(इस मंत्र का जप करने से हमें हरे कृष्ण महामंत्र के जप में होने वाले अपराधों से मुक्त होने में सहायता मिलती है।)*

हरे कृष्ण मंत्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

इस महामंत्र के उच्चारण से स्थापित दिव्य ध्वनितरंग हमारी कृष्णभावना को पुनर्जागृत करने का सर्वोत्कृष्ट उपाय है। चेतन आध्यात्मिक जीवात्मा होने के कारण हम सब मूल रूप से कृष्णभावनामृत हैं, किन्तु अनादि काल से जड़ पदार्थ से संग करने के कारण हमारी चेतना भौतिक वातावरण से दूषित हो गई है। इस भौतिक वातावरण, जिसमें हम रह रहे हैं, इसे माया कहा जाता है। माया का अर्थ है 'वह जो नहीं है'। और वह भ्रम क्या है? भ्रम यह है कि हम सब भौतिक प्रकृति के स्वामी बनने में प्रयासरत हैं, जबकि वास्तव में हम उसके कड़े नियमों द्वारा बँधे हुए हैं। जब सेवक कृत्रिम रूप से सर्वशक्तिमान स्वामी की नकल करना चाहता है तो उसे भ्रम कहा जाता है। अतः, यद्यपि जीवन की इस दूषित अवस्था में हम प्रकृति पर विजय प्राप्त करने हेतु कठिन संघर्ष कर रहे हैं, फिर भी हम पूरी तरह उसी प्रकृति पर निर्भर हैं। भौतिक प्रकृति के प्रति यह भ्रामक संघर्ष हमारी कृष्णभावना के पुनर्जागरण द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

कृष्णभावना मन पर कोई कृत्रिम आरोपण नहीं है। यह भावना तो जीव की मूल शक्ति है। जब हम अप्राकृत ध्वनितरंग को सुनते हैं तो यह भावना पुनर्जागृत हो जाती है। और प्रामाणिक सूत्रों ने इस युग के लिए इस पद्धति की संस्तुति की है। व्यवहारिक अनुभव से भी हम देख सकते हैं कि इस महामंत्र के उच्चारण से व्यक्ति तत्काल आध्यात्मिक स्तर से आ रहे दिव्य परमानन्द को प्राप्त कर सकता है। और जब व्यक्ति इन्द्रियों, मन और बुद्धि की अवस्थाओं को नियंत्रित करके वास्तव में आध्यात्मिक ज्ञान के स्तर पर होता है तो वह दिव्य स्तर पर स्थित हो जाता है। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे का यह जप सीधे आध्यात्मिक स्तर से प्रसारित होता है और इसलिए इस महामंत्र की ध्वनि-तरंगे चेतना के निम्न स्तरों यथा ऐन्द्रिक, मानसिक तथा बौद्धिक स्तरों को पीछे छोड़ देती हैं। अतः इस महामंत्र का जप करने में इस मंत्र की भाषा आदि समझने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही मानसिक अटकलबाजी अथवा बौद्धिक ऊहापोह की आवश्यकता है। यह मंत्र सहज ही आध्यात्मिक स्तर से प्रवाहित होता है और इस प्रकार कोई भी व्यक्ति बिना किसी पूर्वयोग्यता के इसमें भाग ले सकता है और भावविभोर होकर नृत्य कर सकता है।

हमने इसे व्यवहारिक रूप से देखा है। एक बालक भी, और यहाँ तककि एक कुत्ता भी इसमें भाग ले सकता है। निःसन्देह, भौतिक जीवन में फँसे हुए व्यक्ति को इस स्तर तक आने के लिए थोड़ा समय लगेगा, परन्तु भौतिकता में बद्ध ऐसा व्यक्ति भी बहुत शीघ्र आध्यात्मिक स्तर पर पहुँच जाता है। जब यह महामंत्र किसी शुद्ध भगवद्भक्त द्वारा प्रेम से उच्चारित होता है तो श्रोताओं पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, और इसलिए इस महामंत्र के कीर्तन को शुद्ध भक्तों के मुख से ही सुनना चाहिए जिससे इसका तात्कालिक प्रभाव प्राप्त हो सके। जहाँ तक संभव हो अभक्तों द्वारा किये गये कीर्तन को नहीं सुनना चाहिए, क्योंकि साँप के होठों से स्पर्श होने के पश्चात् दूध विषैला हो जाता है।

हरा शब्द भगवान् की शक्ति को सम्बोधित करने का स्वरूप है, और कृष्ण व राम शब्द स्वयं भगवान् को सम्बोधित करने के स्वरूप हैं। कृष्ण और राम दोनों का अर्थ होता है ''परम अह्लाद'' और हरा भगवान् की परम आह्लादिनी शक्ति हैं, जिसे सम्बोधनार्थ हरे में परिवर्तित किया जाता है। भगवान् की परम आह्लादिनी शक्ति हमें भगवान् तक पहुँचाने में सहायता करती है।

माया नामक भौतिक शक्ति भी भगवान् की बहुशक्तियों में से एक है। और हम जीवात्मायें भगवान् की तटस्था शक्ति हैं। जीवात्मायें भौतिक शक्ति से उत्तम मानी जाती हैं। जब उत्तम शक्ति निम्न शक्ति का संस्पर्श करती है तो एक बेमेल परिस्थिति उत्पन्न होती है, किन्तु जब उत्तम तटस्था शक्ति हरा नामक उत्तम शक्ति के सम्पर्क में होती है तो जीवात्मा अपनी स्वाभाविक सुखद स्थिति में होता है।

हरे, कृष्ण और राम - ये तीन शब्द महामंत्र के दिव्य बीजाक्षर हैं। इनका जप या कीर्तन भगवान् एवं उनकी अंतरंगा शक्ति हरा के प्रति बद्धजीवात्मा को संरक्षण देने हेतु आध्यात्मिक पुकार है। यह पुकार बालक द्वारा अपनी माता के प्रति कातर भाव से रोदन के समान है। माँ 'हरा' (राधारानी) भक्त को परमपिता हरि अथवा श्रीकृष्ण की कृपाप्राप्ति में सहायता करती है और भगवान् इस महामंत्र को गम्भीरतापूर्वक उच्चारने वाले के प्रति स्वयं को प्रकट कर देते हैं। अतएव, आत्मसाक्षात्कार की अन्य कोई पद्धति इस युग में महामंत्र के जप और कीर्तन के समान प्रभावशाली नहीं है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रीगुर्वाष्टकम्

(श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर कृत)

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै-ब्राह्मे मुहूर्ते पठति प्रयत्नात्।
यस्तेन वृन्दाविपननाथ साक्षात् सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव।।

''जो भी ब्रह्ममुहूर्त की शुभ बेला में श्रीगुरु को समर्पित इन प्रार्थनाओं को ध्यानपूर्वक गाता है, उसे मनुष्य जीवन के अन्त में वृन्दावननाथ भगवान् श्रीकृष्ण की चरणसेवा करने का लाभ प्राप्त होता है।

संसारदावानललीढलोक
त्राणाय कारुण्य घनाघनत्वम्।
प्राप्तस्य कल्याण गुणार्णवस्य
वंदे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।१।।

सांसारिक जीवन रूपी जंगल में लगी आग को शान्त करने के लिए जो कृपा रूपी विशाल मेघों की वर्षा से इस अग्नि का शमन करते हैं, ऐसे दिव्य गुणों के सागर श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।'

महाप्रभोः कीर्तन नृत्यगीत
वादित्रमाद्यान् मनसो रसेन।
रोमांच कंपाश्रुतरंग भाजो
वंदे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।२।।

श्रीचैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन आन्दोलन में कीर्तन, नृत्य, गायन तथा वाद्ययन्त्र बजाते हुए जो भावविभोर हो उठते हैं, तथा अपने मन में विशुद्ध भक्ति के रसों का आस्वादन करते हुए जो अश्रुपात, कम्पन तथा रोमाञ्चादि भावों का अनुभव करते हैं, ऐसे श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।'

श्रीविग्रहाराधननित्यनाना
श्रृंगार तन मंदिरमार्जनादौ।
युक्तस्य भक्तांश्चनियुञ्जतोऽपि
वंदे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।३।।

श्रीगुरुदेव मंदिर में श्री श्रीराधा-कृष्ण के अर्चाविग्रहों के पूजन में स्वयं रत रहते हैं एवं अपने शिष्यों को भी पूजन, श्रृंगार तथा मंदिर के मार्जन में संलग्न करते हैं, ऐसे श्रीगुरुदेव

के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।'

चतुरर्विध श्रीभगवद्प्रसाद
स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्त सङ्घान्।
कृत्त्वैव तृप्तिं भजत: सदैव
वंदे गुरो: श्रीचरणारविन्दम्।।४।।

जब श्रीगुरुदेव भक्तों को आनन्दपूर्वक चार प्रकार के भगवद्प्रसाद ग्रहण कर तृप्त होते देखते हैं, तो वे भी तृप्त हो जाते हैं, ऐसे श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।

श्रीराधिकामाधवयोर् अपार
माधुर्यलीला गुण रूप नाम्नाम्।
प्रतिक्षणा स्वादन लोलुपस्य
वंदे गुरो: श्रीचरणारविन्दम्।।५।।

श्रीगुरुदेव प्रतिक्षण श्री श्रीराधा-माधव की दिव्य लीलाओं, गुणों, रूप तथा नामों की असीमित मधुरता का आस्वादन करने के लिए लालायित रहते हैं, ऐसे श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।

निकुञ्जयुनो रति-केलि-सिद्धयै
या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्रातिदाक्ष्याद् अतिवल्लभस्य
वंदे गुरो: श्रीचरणारविन्दम् ।।६।।

श्रीगुरुदेव अतिप्रिय हैं, क्योंकि वे श्रीराधा-कृष्ण की माधुर्य लीलाओं को अत्यन्त श्रेष्ठता से सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार का आयोजन करती हुई गोपियों की सहायता करने में निपुण हैं। ऐसे श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै-
र्उक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भि:।
किंतु प्रभोर्य: प्रिय एव तस्य
वंदे गुरो: श्रीचरणारविन्दम्।।७।।

समस्त शास्त्र स्वीकार करते हैं कि श्रीगुरु में भगवान् श्रीहरि के समस्त गुण विद्यमान रहते हैं और महान् सन्त भी उन्हें इसी रूप में स्वीकार करते हैं। किन्तु वास्तव में वे

भगवान् को अत्यन्त प्रिय हैं, ऐसे श्रीगुरुदेव के चरणकमलों में मैं सादर वन्दना करता हूँ।'

यस्यप्रसादाद् भगवदप्रसादो
यस्याप्रसादान् न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायन्स्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं
वंदे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।८।।

श्रीगुरुदेव की कृपा से ही भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त होती है। श्रीगुरुदेव की कृपा के बिना कोई भी सद्गति प्राप्त नहीं कर सकता। मैं दिन में कम से कम तीन बार उनका स्मरण, गुणगान एवं उनके चरणों में वन्दना करता हूँ।

प्रेमध्वनि

कीर्तन की समाप्ति पर एक वरिष्ठ भक्त ये प्रार्थना कहते हैं और उपस्थित सभी भक्त दण्डवत् करते हुए प्रत्येक उद्घोष के बाद 'जय' उच्चारित करते हैं।

१. जय ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद्कृष्णकृपाश्रीमूर्ति अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद की... जय!

(आचार्य ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री त्रिदंडी गोस्वामी अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद की जय हो, जिन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण की महिमाओं के प्रचार हेतु सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण किया और जो संन्यास के परम स्तर पर स्थित हैं।)

(इस्कॉन, बी.बी.टी. संस्थापकाचार्य ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद की... जय!)

२. जय ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद्कृष्णकृपाश्रीमूर्ति भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर श्रील प्रभुपाद की... जय!

३. अनन्त कोटि वैष्णववृंद की... जय!

४. नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुर की... जय!

५. प्रेमसे कहो श्रीकृष्णचैतन्य, प्रभु नित्यानंद, श्रीअद्वैत, गदाधर, श्रीवासादि गौरभक्त वृंद की... जय!

६. श्री श्रीराधा कृष्ण, गोप-गोपीनाथ, श्यामकुंड, राधाकुंड, गिरि-गोवर्धन की... जय!

७. वृंदावन धाम की... जय!

८. नवद्वीप धाम की... जय!

९. गंगादेवी की... जय!

१०. यमुनादेवी की... जय!
११. तुलसीदेवी की... जय!
१२. भक्तिदेवी की... जय!
१३. हरिनाम संकीर्तन की... जय!
१४. गौर प्रेमानंदे - हरि हरि बोल!
१५. समवेत भक्त वृंद की... जय! (३ बार)
१६. श्री श्री गुरु गौरांग की... जय!

श्रीनृसिंह प्रणाम

नमस्ते नरसिंहाय
प्रह्लादह्लाद दायिने।
हिरण्यकशिपोर्वक्ष:
शिलाटंक नखालये।।
इतो नृसिंह: परतो नृसिंहो
यतो यतो यामि ततो नृसिंह:।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो
नृसिंहमादि शरणं प्रपद्ये ।।

मैं भगवान् नृसिंह को प्रणाम करता हूँ जो प्रह्लाद महाराज को आनन्द प्रदान करने वाले हैं तथा जिनके नाखून असुरराज हिरण्यकशिपु के पाषाण सदृश वक्षस्थल के ऊपर छैनी के समान प्रहार करते हैं।

नृसिंह भगवान् यहाँ हैं और वहाँ भी हैं। मैं जहाँ कहीं भी जाता हूँ वहाँ नृसिंह भगवान् हैं। वे हृदय में हैं और बाहर भी हैं। मैं नृसिंह भगवान् की शरण लेता हूँ।

श्रीनृसिंह प्रार्थना

तव कर कमलवरे नखम् अद्भुत शृङ्गम्
दलितहिरण्यकशिपु तनुभृङ्गम्।
केशव धृत नरहरि-रूप जय जगदीश हरे !
जय जगदीश हरे! जय जगदीश हरे !!

हे केशव! हे जगत्पते! हे हरि! आपने नर-सिंह का रूप धारण किया है। आपकी जय हो! जिस प्रकार कोई अपने नाखूनों से भ्रमर को सरलता से कुचल सकता है, उसी सरलता से आपने भ्रमर के समान असुर हिरण्यकशिपु का शरीर अपने सुन्दर करकमलों के नुकीले नाखूनों से चीर डाला है।

श्रीतुलसी प्रणाम

वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
विष्णुभक्ति प्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः ।।

हे वृन्दे! हे तुलसीदेवी! आप भगवान् केशव की प्रिया हैं। कृष्णभक्ति प्रदान करने वाली हे सत्यवती देवी, आपको बारम्बार मेरा प्रणाम है।

श्रीतुलसी कीर्तन

नमो नमः तुलसी कृष्णप्रेयसी नमो नमः ।
राधाकृष्ण सेवा पाबो एइ अभिलाषी ।।

ये तोमार शरण लय, तार वांच्छा पूर्ण हय ।
कृपा करि कर तारे वृंदावनवासी।।

मोर एइ अभिलाष, विलास कुंजे दियो वास ।
नयने हेरिबो सदा युगलरूप-राशि।।

एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कर ।
सेवा अधिकार दिये कर निज दासी ।।

दीन कृष्ण दास कय, एइ येन मोर हय।
श्रीराधा-गोविन्द प्रेमे, सदा येन भासि ।।

१. भगवान् श्रीकृष्ण की प्रियतमा हे तुलसी देवी! मैं आपको बारम्बार प्रणाम करता हूँ। मेरी एकमात्र इच्छा है कि मैं श्री श्रीराधाकृष्ण की प्रेममयी सेवा प्राप्त कर सकूँ।

२. जो कोई भी आपकी शरण लेता है उसकी कामनायें पूर्ण होती हैं। उसपर आप अपनी कृपा करती हैं और उसे वृन्दावनवासी बना देती हैं।

३. मेरी यह अभिलाषा है कि आप मुझे भी वृन्दावन के कुंजों में निवास करने की

अनुमति दें, जिससे मैं सदैव श्रीराधाकृष्ण की सुन्दर लीलाओं का दर्शन कर सकूँ।

४. आपके चरणों में मेरा यही निवेदन है कि मुझे किसी व्रजगोपी की अनुचरी बना दीजिए तथा सेवा का अधिकार देकर मुझे आपकी निज दासी बनने का अवसर दीजिए।

५. अति दीन कृष्णदास आपसे प्रार्थना करता है, ''मैं सदा सर्वदा श्री श्रीराधागोविन्द के प्रेम में डूबा रहूँ।''

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

श्रीमती तुलसीदेवी की परिक्रमा करने से प्रत्येक पद पर ब्रह्महत्या तक सभी पापों का नाश हो जाता है।

श्रीशिक्षाष्टकम्

(श्रीचैतन्य महाप्रभु विरचित)

चेतोदर्पण-मार्जनं भव-महादावाग्नि-निर्वापणं
श्रेय:कैरव-चंद्रिका-वितरणं विद्यावधू-जीवनम् ।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम्।।१।।

१. श्रीकृष्ण-संकीर्तन की परम विजय हो, जो हमारे चित्त में वर्षों से संचित मल को साफ करने वाला तथा बारम्बार जन्म-मृत्यु रूपी महाग्नि को शान्त करने वाला है। यह संकीर्तनयज्ञ मानवता का परम कल्याणकारी है क्योंकि यह मंगलरूपी चन्द्रिका का वितरण करता है। समस्त अप्राकृत विद्यारूपी वधु का यही जीवन (पति) है। यह आनन्द के समुद्र की वृद्धि करने वाला है और यह श्रीकृष्ण-नाम हमें नित्य वांछित पूर्णामृत का आस्वादन कराता है।

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति:-
तत्रार्पिता नियमित: स्मरणे न काल: ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्! ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नाऽनुराग: ।।२।।

२. हे भगवन्! आपका अकेला नाम ही जीवों का सब प्रकार से मंगल करने वाला है। 'कृष्ण', 'गोविन्द' जैसे आपके लाखों नाम हैं। आपने इन अप्राकृत नामों में अपनी समस्त अप्राकृत शक्तियाँ अर्पित कर दी हैं। इन नामों का स्मरण और कीर्तन करने में देश-कालादि का कोई भी नियम नहीं है। हे प्रभो! आपने तो अपनी कृपा के कारण हमें भगवन्नाम द्वारा अत्यन्त ही सरलता से भगवद्प्राप्ति कर लेने में समर्थ बना दिया है, किन्तु मैं इतना दुर्भाग्यशाली हूँ कि आपके नाम में मेरा तनिक भी अनुराग नहीं है।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिन मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ।।३।।

३. स्वयं को मार्ग में पड़े हुए तृण से भी अधिक नीच मानकर, वृक्ष से भी अधिक सहनशील होकर, मिथ्या मान की भावना से सर्वथा शून्य रहकर दूसरों को सदा मान देने वाला होना चाहिए। ऐसी मनःस्थिति में ही व्यक्ति हरिनाम का सतत कीर्तन कर सकता है।

न धनं न जनं न सुंदरीं, कवितां वा जगदीश! कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे, भवताद्-भक्तिरहैतुकी त्वयि ।।४।।

४. हे सर्वसमर्थ जगदीश! मुझे धन एकत्र करने की कोई कामना नहीं है, न मैं अनुयायियों, सुन्दर स्त्री अथवा सालंकार कविता का ही इच्छुक हूँ। मेरी तो एकमात्र कामना यही है कि मेरे हृदय में जन्म-जन्मान्तर तक आपकी अहैतुकी भक्ति बनी रहे।

अयि नन्दतनुज! किमरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पादपंकजस्थितधूलीसदृशं विचिन्तय ।।५।।

५. हे नन्दतनुज श्रीकृष्ण! मैं तो आपका नित्य दास हूँ, किन्तु किसी-न-किसी प्रकार से मैं जन्म-मृत्यु रूपी सागर में गिर पड़ा हूँ। कृपया इस विषम मृत्यु सागर से मेरा उद्धार करके मुझे अपने चरणकमलों की धूलि का एक कण बना लीजिए।

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गद्रुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति?।।६।।

६. हे प्रभो! आपका नाम-कीर्तन करते हुए कब मेरे नेत्र अविरल प्रेमाश्रुओं की धारा से विभूषित होंगे? कब आपके नाम-उच्चारण करने मात्र से ही मेरा कण्ठ गद्गद् वाक्यों से रुद्ध हो जायेगा और मेरा शरीर रोमांचित हो उठेगा?

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्दविरहेण मे ।।७।।

७. हे गोविन्द! आपके विरह में मुझे एक निमेष काल (पलक झपने का समय) एक युग के समान प्रतीत हो रहा है। नेत्रों से मूसलाधार वर्षा के समान निरन्तर अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं और आपके विरह में मुझे सम्पूर्ण जगत् शून्य ही दीख पड़ता है।

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु माम्,
अदर्शनान्मर्महतां करोतु वा ।
यथा तथा वा विद्धातु लंपटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ।।८।।

८. एकमात्र श्रीकृष्ण के अतिरिक्त मेरे कोई प्राणनाथ हैं ही नहीं और वे मेरे लिए यथानुरूप ही बने रहेंगे, चाहे वे मेरा गाढ़ आलिंगन करें अथवा दर्शन न देकर मुझे मर्माहत करें। वे लम्पट कुछ भी क्यों न करें, वे तो सभी कुछ करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण मेरे नित्य, प्रतिबन्धरहित आराध्य प्राणेश्वर हैं।

भगवन्नाम के प्रति होने वाले दस नामापराध

(पद्मपुराण के ब्रह्मखण्ड से)

१. सतां निन्दा नाम्नः परमं अपराधं वितनुते।
यतः ख्यातिं यातं कथम् उ सहते तद्विगर्हाम्।।

भगवन्नाम का प्रचार करने वाले महाभागवतों की निन्दा करना।

२. शिवस्य श्रीविष्णोर् य इह गुण-नामादि सकलं।
धिया भिन्नं पश्येत् स खलु हरि-नामाहित-करः।।

शिव-ब्रह्मादि देवों के नाम को भगवन्नाम के समान अथवा उनसे भिन्न समझना।

३. गुरोर् -अवज्ञा

गुरु की अवज्ञा।

४. श्रुति-शास्त्र-निन्दनम्

वैदिक शास्त्रों अथवा प्रमाणों का खण्डन करना।

५. हरिनाम्नि-कल्पनम्

हरे कृष्ण महामंत्र के जप की महिमा को काल्पनिक समझना।

६. तदर्थवादः

पवित्र भगवन्नाम में अर्थवाद का आरोप।

७. नाम्नो बलाद् यस्य हि पापबुद्धि
न विध्यते तस्य यमैर्हि शुद्धि

नाम के बल पर पाप करना।

८. धर्म-व्रत-त्याग-हुतादि-सर्व शुभक्रिया-साम्यमपि-प्रमादः

हरे कृष्ण महामंत्र के जप को वेदों में वर्णित एक शुभ सकाम कर्मकाण्ड के समान समझना।

९. अश्रद्धाने विमुखेऽपि अशृण्वति यश्चोपदेशः शिव-नामापराधः

अश्रद्धालु व्यक्ति को कृष्णनाम की महिमा का उपदेश करना।

१०. श्रुत्वापि नाम माहात्म्यं यह प्रीति रहितो-अधमः।
अंह-ममादि-परमो नाम्नि सोऽप्यपराध-कृत।।

हरे कृष्ण महामंत्र के जप में पूर्ण विश्वास न होना और इसकी इतनी अगाध महिमा सुनने पर भी विषयासक्ति बनाये रखना। ध्यानपूर्वक जप न करना भी एक अपराध है।

स्वयं को वैष्णव समझने वाले सभी भक्तों को इन नामापराधों से बचना चाहिए जिससे जीवन की अभीष्ट सिद्धि शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त हो।

श्रीगुरुवंदना

श्री गुरुचरण पद्म, केवल भकति-सद्म,
वन्दो मुइ सावधान मते ।
याँहार प्रसादे भाई, ए भव तरिया याइ,
कृष्ण प्राप्ति हय याँहा हइते ।।१।।

गुरुमुख पद्म वाक्य, चित्तेते करिया ऐक्य,
आर न करिह मने आशा।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से उत्तम-गति,
ये प्रसादे पूरे सर्व आशा ।।२।।

चक्षुदान दिलो येइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ,

दिव्य ज्ञान हृदे प्रकाशित।
प्रेम-भक्ति याँहा हइते, अविद्या विनाश जाते,
वेदे गाय याँहार चरित ।।३।।

श्रीगुरु करुणा-सिन्धु, अधम जनार बंधु,
लोकनाथ लोकेर जीवन।
हा हा प्रभु कोरो दया, देह मोरे पद छाया,
एबे यश घुषुक त्रिभुवन।।४।।

१. आध्यात्मिक गुरु के चरणकमल ही एकमात्र साधन हैं जिनके द्वारा हम शुद्ध भक्तिमय सेवा प्राप्त कर सकते हैं। मैं उनके चरणकमलों में अत्यन्त भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होता हूँ। उनकी कृपा से जीव भौतिक क्लेशों के महासागर को पार कर सकता है तथा श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त कर सकता है।

२. मेरी एकमात्र इच्छा है कि उनके मुखकमल से निकले हुए शब्दों द्वारा अपनी चेतना को शुद्ध करूँ। उनके चरणकमलों में अनुराग ऐसी सिद्धि है जो समस्त मनोरथों को पूर्ण करती है।

३. वे मेरी बन्द आँखों को खोलते हैं तथा मेरे हृदय में दिव्य ज्ञान भरते हैं। जन्म-जन्मान्तरों में वे मेरे प्रभु हैं। वे प्रेमाभक्ति प्रदान करते हैं और अविद्या का विनाश करते हैं। वैदिक शास्त्र उनके चरित्र का गान करते हैं।

४. हे गुरुदेव! करुणासिन्धु तथा पतितात्माओं के मित्र! आप सबके गुरु एवं सभी लोगों के जीवन हैं। हे गुरुदेव! मुझपर दया कीजिए तथा मुझे अपने चरणकमलों की छाया दीजिए। आपका यश तीनों लोकों में फैला हुआ है।

श्रीब्रह्म-संहिता

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः।
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम्।।१।।

श्रीगोविन्द के नाम से विख्यात् श्रीकृष्ण ही परम भगवान् हैं। उनकी देह सत् (शाश्वतता), चित् (ज्ञान) और आनन्द से परिपूर्ण है। वे प्रत्येक वस्तु के स्रोत हैं और स्वयं उनका कोई स्रोत नहीं है। वे समस्त कारणों के परम कारण हैं।

चिन्तामणिप्रकरसद्मसु कल्पवृक्ष
लक्षावृतेषु सुरभीरभिपालयन्तम्।
लक्ष्मीसहस्रशतसम्भ्रमसेव्यमानं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो ऐसे गोलोक में कामधेनु गायों का पालन करते हैं जो चिन्तामणि से निर्मित है और लाखों कल्पवृक्षों से घिरा है। वहाँ श्रीगोविन्द लक्ष्मीस्वरूपा हजारों गोपांगनाओं द्वारा सेवित होते रहते हैं।

वेणुं क्वणन्तमरविन्ददलायताक्षं
बर्हावतंसमसिताम्बुदसुन्दराङ्गम्।
कन्दर्पकोटिकमनीयविशेषशोभम्
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।३।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ, जो अपने नित्य वृन्दावन धाम में सदैव वेणु बजाते रहते हैं, जिनके नेत्र कमलदल के समान विशाल हैं जो मोरमुकुट धारण करते हैं, जिनका श्रीविग्रह श्याम मेघ के समान मनोहर है एवं जिनकी शोभा करोड़ों कामदेवों की अपेक्षा भी विशेष मनोहर है।

आलोलचन्द्रकलसद्-वनमाल्यवंशी
रत्नांगदं प्रणयकेलिकलाविलासम्।
श्यामं त्रिभंगललितं नियतप्रकाशं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।४।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ, जिनके मस्तक पर मोरमुकुट शोभित है, गले में वनमाला, अधर पर वंशी, भुजाओं में रत्नजड़ित बाजूबंद शोभायमान हैं एवं जिनका विलास स्नेहभरे परिहास की कला से युक्त है तथा जिनका श्यामस्वरूप त्रिभंगललित बाँकी झाँकी से युक्त है एवं जो एकरस रहने वाले प्रकाश से युक्त हैं।

अङ्गानियस्य सकलेन्द्रियवृत्तिमन्ति
पश्यन्ति पान्ति कलयन्ति चिरं जगन्ति।
आनन्दचिन्मयसदुज्ज्वलविग्रहस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।५।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ, जिनका श्रीविग्रह

सच्चिदानन्दमय एवं सदा उज्ज्वल है, अतएव जिनके प्रत्येक अंग समस्त इन्द्रियों की वृत्ति से युक्त होकर अन्य अंगों का कार्य कर सकते हैं, अर्थात् भगवान् का हाथ भी देख सकता है, बोल सकता है, एवं नेत्र भी रक्षा कर सकते हैं, सुन सकते हैं, इसी प्रकार अन्य इन्द्रियाँ भी अन्य इन्द्रियों के कार्यों को कर सकती हैं।

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्तरूपं-
आद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च।
वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।६।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो अद्वैत (जिनके समान कोई नहीं है), अच्युत (जिनका कभी पतन नहीं होता), अनादि-अनन्त रूप वाले एवं सर्वाधिक पुराणपुरुष होने पर भी नित्य नवयौवन से युक्त रहते हैं। उनका ज्ञान वेदों में भी दुर्लभ है, किन्तु वे शुद्धभक्ति द्वारा सरलता से समझे जा सकते हैं।

पन्थास्तु कोटिशतवत्सरसम्प्रगम्यो
वायोरथापि मनसो मुनिपुङ्गवानाम्।
सोऽप्यस्ति यत्प्रपदसीम्न्यविचिन्त्यतत्त्वे
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।७।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिन्हें प्राप्त करने के लिए योगी और मुनिगण वायु और मन की गति से सैकड़ों-करोड़ों वर्ष यात्रा करने के पश्चात् भी केवल उनके चरणारविन्दों के अग्रभाग का ही दर्शन कर पाते हैं।

एकोऽप्यसौ रचयितुं जगदण्डकोटिं-
यच्छक्तिरस्ति जगदण्डचया यदन्तः।
अण्डान्तरस्थपरमाणुचयान्तरस्थं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।८।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिनकी शक्ति करोड़ों ब्रह्माण्ड की रचना करने के लिए समर्थ है एवं अनन्त ब्रह्माण्ड समूह भी जिनके भीतर विचराजमान हैं, अतः स्वरूपतः जो एक ही हैं; तथा जो इस ब्रह्माण्ड के प्रत्येक परमाणु के भीतर स्थित हैं।

यद्भावभावितधियो मनुजास्तथैव
सम्प्राप्य रूपमहिमासनयानभूषा:।
सूक्तैर्यमेव निगमप्रथितै: स्तुवन्ति
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।३।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिनके भाव से भावित बुद्धिवाले भावुकप मनुष्यजन, जिनकी कृपा से उन्हीं के समान रूप-महिमा-आसन-यान एवं वस्त्राभूषण आदि को प्राप्त करके, वेद प्रसिद्ध पुरुषसूक्तों द्वारा जिनकी स्तुति करते रहते हैं।

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्
ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभि:।
गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१०।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो प्राणीमात्र के आत्मस्वरूप होकर भी अथवा गोलोक-निवासी अन्य प्रियवर्गों के परमश्रेष्ठ होने के नाते, जीवात्मा की तरह, उनके निकट रहकर भी आनन्दचिन्मयरस, अर्थात् परमप्रेममय उज्ज्वल-नामक रस के द्वारा सराबोर स्वरूपवाली एवं निजस्वरूप होने के कारण, ह्लादिनी शक्ति की वृत्तिस्वरूपा गोपियों के साथ, गोलोक धाम में ही निवास करते हैं।

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्त: सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।११।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो यद्यपि गोलोक में ही निवास करते हैं, तथापि अचिन्त्यगुण स्वरूपवाले श्यामसुन्दर विग्रहवाले जिन गोविन्द को सन्तजन, प्रेम रूपी अंजन से युक्त भक्तिपूरित नेत्रों द्वारा सदैव अपने हृदय में देखते हैं।

रामादिमूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन्
नानावतारमकरोद् भुवनेषु किन्तु।
कृष्ण: स्वयं समभवत्परम: पुमान् यो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१२।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो अपनी कलाओं के

नियम से अर्थात् शक्तियों के परिमित प्रकाश द्वारा, श्रीराम आदि मूर्तियों में स्थित होकर, भुवनों में अनेक अवतार धारण करते रहते हैं; किन्तु अट्ठाईसवें द्वारपर के अन्त में वे स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण परिपूर्णतम रूप से प्रकट होते हैं।

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि-
कोटिष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम्।
तद् ब्रह्म निष्कलमनंतमशेषभूतं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१३।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों में, पृथ्वी आदि समस्त विभूतियों से भिन्न अखण्ड-अनन्त एवं निखिल स्वरूप जो ब्रह्म है; वह ब्रह्म भी अनेक अवतार लेने वाले परम प्रभावशाली जिन गोविन्द की प्रभा-रूप कहा जाता है।

माया हि यस्य जगदण्डशतानि सूते
त्रैगुण्यतद्विषयवेदवितायमाना।
सत्त्वावलम्बिपरसत्त्वं विशुद्धसत्त्वं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१४।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र आधार हैं और जिनकी माया तीन गुणों यथा सतो, रजो और तमोगुण का रूप लेती है और जो इस भौतिक संसार से सम्बन्धित वैदिक ज्ञान का प्रसार करते हैं।

आनन्दचिन्मयरसात्मतया मनःसु
यः प्राणिनां प्रतिफलन् स्मरतामुपेत्य।
लीलायितेन भुवनानि जयत्यजस्रं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१५।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो अपना स्मरण करने वाले प्राणियों के मन में उपस्थित होकर एवं आनन्द-चिन्मय-रसमय स्वरूप से प्रतिफलित होकर अपने लीला-विलास के द्वारा अनेक भुवनों को निरन्तर अपने वश में करते रहते हैं।

गोलोकनाम्नि निजधाम्नि तले च तस्य
देवीमहेशहरिधामसु तेषु तेषु।

ते ते प्रभावनिचया विहिताश्च येन
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१६।।

इस भौतिक सृष्टि में सबसे नीचे देवीधाम है, उसके ऊपर महेश धाम और फिर हरिधाम है। इन सबके ऊपर भगवान् श्रीकृष्ण का निजधाम गोलोक वृन्दावन है। मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिन्होंने इन सभी लोकों के अधिष्ठाता देवों को शासन करने का अधिकार प्रदान किया है।

सृष्टिस्थितिप्रलयसाधनशक्तिरेका
छायेव यस्य भुवनानि विभर्ति दुर्गा।
इच्छानुरूपमपि यस्य च चेष्टते सा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१७।।

भगवान् की चित् शक्ति की छाया स्वरूप बाह्यशक्ति को माया नाम से जाना जाता है और लोग दुर्गादेवी के रूप में उनकी पूजा करते हैं। दुर्गादेवी इस भौतिक जगत् के सृजन, पालन एवं संहार की अधिकारणी हैं। मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिनकी आज्ञा से दुर्गादेवी ये सब कार्य करती हैं।

क्षीरं यथा दधि विकारविशेषयोगात्
सञ्जायते न हि ततः पृथगस्ति हेतोः।
यः शम्भुतामपि तथा समुपैति कार्याद्
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१८।।

जिस प्रकार जामन मिलाने से दूध दही में परिवर्तित हो जाता है; जबकि दही का प्रभाव न तो अपने स्रोत दूध के समान होता है और न ही विपरीत होता, उसी प्रकार मैं भगवान् गोविन्द का भजन करता हूँ जो संहार के कार्य को करने के लिए स्वयं को शम्भु रूप में परिवर्तित करते हैं।

दीपार्चिरेव हि दशान्तरमभ्युपेत्य
दीपायते विवृतहेतुसमानधर्मा।
यस्तादृगेव हि च विष्णुतया विभाति
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।१९।।

एक दीपक से अन्य-अनेक दीपक प्रज्वलित किये जाते हैं और यद्यपि वे आपस में भिन्न होते हैं उन सबसे समान प्रकाश प्रस्फुटित होता है। मैं आदि भगवान् श्रीगोविन्द का

भजन करता हूँ जो अपने विभिन्न द भगवान् का भजन करता हूँ जो ब्रह्माजी को इस सृष्टि का संचालन करने की शक्ति प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य अपने प्रकाश के कुछ अंश द्वारा सूर्यकान्त नामक मणि को प्रकाशित करता है।

यत्पादपल्लवयुगं विनिधाय कुम्भ
द्वन्द्वे प्रणामसमये स गणाधिराजः।
विघ्नान् विहन्तुमलमस्य जगत्रयस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२३।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जिनके चरणकमल गणेशजी सदैव अपने दो कुम्भों पर धारण करके तीनों जगत् के समस्त विघ्नों को विनाश करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।

अग्निर्महो गगनमम्बु मरुद्दिशश्च
कालस्तथात्ममनसीति जगत्त्रयाणि।
यस्माद् भवन्ति विभवन्ति विशन्ति यं च
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२४।।

अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, समस्त दिशायें, काल, आत्मा, एवं मन आदि इन द्रव्यों से बने तीनों लोक भी जिन गोविन्द से उत्पन्न होते हैं, पुष्ट होते हैं एवं प्रलयकाल में जिन गोविन्द में ही प्रविष्ट हो जाते हैं, मैं उन आदिपुरुष श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ।

यच्चक्षुरेष सविता सकलग्रहाणां
राजा समस्तसुरमुर्तिरशेषतेजाः।
यस्याज्ञया भ्रमति सम्भृतकालचक्रो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२५।।

समस्त ग्रहों के राजा सूर्यदेव असीमित प्रकाश से परिपूर्ण हैं, सभी देवताओं के मूर्तिस्वरूप एवं इस संसार के नेत्रस्वरूप हैं। मैं उन आदि पुरुष श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ जिनकी आज्ञा का पालन करते हुए सूर्यदेव कालचक्र पर आरुढ़ होकर निरन्तर भ्रमण करते हैं।

धर्मोऽथ पापनिचयः श्रुतयस्तपांसि
ब्रह्मादिकीटपतगावधयश्च जीवाः।

यद्दत्तमात्रविभवप्रकटप्रभावा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२६।।

श्रुतिशास्त्रोक्त धर्म, पापों का समुदाय, समस्त वेद, एवं सब प्रकार के तप तथा ब्रह्मा से लेकर कीट-पतंगपर्यन्त जीवनगण भी जिन गोविन्द द्वारा दिये गये वैभव से ही अपने-अपने प्रभाव को प्रकाशित कर पाते हैं, मैं उन आदि पुरुष श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ।

यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहो स्वकर्म-
बन्धानुरूपफलभाजनमातनोति।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२७।।

मैं उन आदि पुरुष श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ जो इन्द्रगोप नामक लाल रंग के बरसाती कीड़े को अथवा इन्द्रदेव को अपने-अपने कर्मबन्धन के अनुरूप फल का भागी बनाते रहते हैं, किन्तु जो भक्तों के कर्मफलों को समूल भस्मीभूत कर देते हैं।

यं क्रोधकामसहजप्रणयादिभीति
वात्सल्यमोहगुरुगौरवसेव्यभावैः।
सञ्चित्य तस्य सदृशीं तनुमापुरेते
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।२८।।

क्रोध, काम, मित्रता, भय, वात्सल्य, मोह गुरु के समान गौरव, और दास्यभाव आदि भावों के द्वारा जिन गोविन्द का स्मरण करके, स्मरण करने वाले जन उस-उस भाव के अनुसार तदनुरूप शरीर को प्राप्त कर चुके हैं, मैं उन आदि पुरुष श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ।

श्रियः कान्ताः कान्तः परमपुरुषः कल्पतरवो
द्रुमा भूमिश्चिन्तामणिगणमयी तोयममृतम्।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखी
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्वाद्यमपि च।।
स यत्र क्षीराब्धिः स्रवति सुरभीभ्यश्च सुमहान्
निमेषार्धाख्यो वा व्रजति न हि यत्रापि समयः।
भजे श्वेतद्वीपं तमहमिह गोलोकमिति यं
विदन्तस्ते सन्तः क्षितिविरलचाराः कतिपये।।२९।।

मैं दिव्य धाम श्वेतद्वीप की आराधना करता हूँ जहाँ भगवान् की नित्य संगिनियाँ अनेकानेक लक्ष्मी श्रीकृष्ण की अपने एकमात्र प्रेमी के रूप में सेवा करती हैं। वहाँ प्रत्येक वृक्ष कल्पवृक्ष है; मिट्टी का प्रत्येक कण चिन्तामणि है, जल अमृत है, प्रत्येक शब्द गीत है, प्रत्येक पग नृत्य है, वंशी नित्य संगिनी है, प्रकाश दिव्य आनन्द से परिपूर्ण है, जहाँ असंख्य सुरभी गायें दूध के समुद्रों का निर्माण करती हैं, जहाँ काल अपने दिव्य रूप (भूत और भविष्य से रहित सदैव वर्तमान) में विद्यमान रहता है, और जहाँ कभी आधा क्षण भी नहीं बीतता। इस संसार के विरले आत्मज्ञानी व्यक्ति ही उस स्थान को गोलोक नाम से जानते हैं।

प्रसाद-प्रार्थना

महाप्रसादे गोविन्दे नमोब्रह्मणि वैष्णवे।
स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायेते।।

जिन लोगों के पुण्य कम होते हैं उनका भगवान् गोविन्द के महाप्रसाद, हरिनाम तथा वैष्णवभक्तों में विश्वास उत्पन्न नहीं हो पाता।

शरीर अविद्या जाल, जडेन्द्रिय ताहे काल,
जीवे फेले विषय-सागरे।
तार मध्ये जिह्वा अति, लोभमय सुदुर्मति,
ताके जेता कठिन संसारे।।
कृष्ण बड दयामय, करिबारे जिह्वा जय,
स्वप्रसाद-अन्न दिल भाइ।
सेइ अन्नामृत पाओ, राधाकृष्ण-गुण गाओ,
प्रेमे डाको चैतन्य-निताई ।।

१. शरीर अविद्या का जाल है और जड़ इन्द्रियाँ जीव की कट्टर शत्रु हैं, क्योंकि वे उसे भौतिक विषयों के भोग के इस सागर में फेंक देती हैं। इन इन्द्रियों में जिह्वा अत्यन्त लोभी तथा दुर्मति है। संसार में इसे जीत पाना अत्यन्त दुष्कर है।

२. भगवान् श्रीकृष्ण अत्यन्त दयालु हैं और उन्होंने जिह्वा को जीतने के लिए अपना प्रसाद अन्न दिया है। अब कृपया उस अमृतमय प्रसाद को ग्रहण करो, श्री श्रीराधाकृष्ण

का गुणगान करो और प्रेमपूर्वक जोर से ''चैतन्य निताई!'' पुकारो।

ध्यान दें - एकादशी के दिन केवल पहले मंत्र का ही उच्चारण करें।

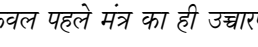

भोग आरती

भज भकत-वत्सल श्रीगौरहरि
श्रीगौरहरि सोही गोष्ठ-बिहारी
नन्द-यशोमती चित्तहारी।।१।।

बेला होऽलो दामोदर ऐस एखन
भोग-मंदिरे बोसी कोरहो भोजन।।२।।

नंदेर निदेशे वैसे गिरिवरधारी
बलदेव सह सखा वैसे सारी-सारी।।३।।

शुक्त-शाकादि भाजी नालिता कुष्माण्ड
डाली डाल्ना दुग्ध तुम्बी दधि मोचाखाण्ड।।४।।

मुद्गबोड़ा माषबोड़ा रोटिका घृतान्न
शष्कुली पिष्टक क्षीर पुलि पायसान्न।।५।।

कर्पूर अमृतकेलि रम्भा क्षीरसार
अमृत रसाल अम्ल द्वादश प्रकार।।६।।

लुचि चिनि सर्पुरी लाड्डु रसावली
भोजन करेन कृष्ण होए कुतूहली।।७।।

राधिकार पक्क अन्न विविध व्यंजन
परम आनन्दे कृष्ण करेन भोजन।।८।।

छले-बले लाड्डु खाय श्रीमधुमंगल
बगल बाजाय आर देय हरि-बोलो।।९।।

राधिकादि गणे हेरि नयनेर कोणे
तृप्त होय खाये कृष्ण यशोदा भवने।।१०।।

भोजानन्ते पिये कृष्ण सुवासित वारि

सबे मुख प्रक्षालये होय सारि-सारि।।११।

हस्तमुख प्रक्षालिया यत सखागणे
आनन्द विश्राम करे बलदेव सने।।१२।।

जाम्बुल रसाल आने ताम्बूल मसाला
ताहा खेये कृष्णचन्द्र सुखे निद्रा गेला।।१३।।

विशालख शिखि पुच्छ-चामर ढुलाय
अपूर्व शय्याय कृष्ण सुखे निद्रा जाय।।१४।।

यशोमती आज्ञा पेये धनिष्ठा-आनीत
श्रीकृष्ण-प्रसाद राधा भुञ्जे हये प्रीत।१५।।

ललितादि सखीगण अवशेष पाय
मने मने सुखे राधा-कृष्ण गुण गाय।।१६।।

हरिलीला एकमात्र याहार प्रमोद
भोगारति गाय ठाकुर भक्तिविनोद।।१७।।

१. अरे भाइयों! भक्तवत्सल श्रीगौरसुन्दर का भजन करो, जो और कोई नहीं, श्रीनन्द एवं यशोदा मैया के चित्त को हरने वाले तथा गोचारण के लिए वन-वन में विचरण करने वाले श्रीकृष्ण ही हैं।

२. माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को पुकारा, ''हे दामोदर, बहुत देर हो चुकी है। तुरन्त आओ और भोगमंदिर में भोजन के लिए बैठो।

३. नन्दमहाराज के निर्देश पर गिरिवरधारी अपने बड़े भाई बलदेव एवं अन्य सखाओं के साथ पंक्तिबद्ध होकर बैठ गये।

४. तब उन्हें विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गये जिनमें शुकता और हरे शाक थे; तले हुए व्यंजन और हरे पत्तों का सलाद था। साथ ही कद्दू की सब्जी, फल, डालना, लौकी की खीर, दही और केले के फूल की सब्जी थी।

५. तब उन्हें मूंग दाल की वड़ियाँ, उड़द दाल की वड़िया और घी के साथ चावल परोसे गये। उसके पश्चात् दूध की मिठाई, चावल के आटे के व्यंजन, रबड़ी और पायसन्न दिया गया।

६. व्यंजनों में कपूर मिश्रित खीर थी जो अमृत के समान स्वादिष्ट थी। केले और

बारह प्रकार के खट्टे व्यंजन परोसे गये जो इमली, नींबू, संतरों और अनार से बने थे।

७. आटे और शक्कर की पूरियाँ थी, लड्डु थे और चावल एवं चाशनी में तैरते दाल के पकौड़े थे। कृष्ण ने उत्सुकता से इन सब व्यंजनों को खाया।

८. श्रीकृष्ण ने आनन्दपूर्वक श्रीमती राधारानी द्वारा बनाये गये चावल, सब्जियों और मिठाइयों को खाया।

९. श्रीकृष्ण के मजाकिये ब्राह्मण मित्र मधुमंगल, जिसे लड्डु अतिप्रिय हैं, छल-बल से उन्हें प्राप्त कर ही लेता है। लड्डु खाकर वह चिल्लाता है, ''हरि बोल! हरि बोल!'' और अपने हाथ से काख को दबाते हुए विचित्र आवाज निकालता है।

१०. कृष्ण यशोदाभवन में अत्यन्त संतोष से भोजन कर रहे थे और राधारानी और उनकी सखियाँ अपने नेत्रों के कोनों से इस मधुर लीला को देख रही थीं।

११. भोजन के बाद कृष्ण सुगन्धित जल पीते हैं और सभी बच्चे पंक्ति में खड़े होकर अपने मुख धोते हैं।

१२. जब सभी ग्वाल-बाल हाथ-मुँह धो लेते हैं, वे अत्यन्त आनन्द के साथ बलरामजी के साथ विश्राम करते हैं।

१३. दो ग्वाल-बाल जाम्बुल और रसाल तब कृष्ण के लिए लौंग, इलायची, कर्पूर आदि सुगन्धित मसालों वाला पान लाते हैं, जिसे खाकर श्रीकृष्ण सुखपूर्वक सो जाते हैं।

१४. श्रीकृष्ण अपनी अपूर्व शय्या पर प्रसन्नतापूर्वक सो रहे थे और उनके सेवक विशालाक्ष मोरपंख के पंखे से उन्हें हवा झलने लगे।

१५. यशोदा मैया की आज्ञा से धनिष्ठा गोपी श्रीकृष्ण के महाप्रसाद की थाली को श्रीमती राधारानी के पास लाती हैं, जिसे वे प्रेमपूर्वक ग्रहण करती हैं।

१६. ललिता देवी और अन्य गोपियाँ तब शेष महाप्रसाद को स्वीकार करती हैं और अपने हृदय में आनन्दपूर्वक श्रीराधा-कृष्ण के गुण गाती हैं।

१७. ठाकुर भक्तिविनोद, जिनके जीवन का एकमात्र आनन्द भगवान् हरि की लीलायें हैं, यह भोग-आरती गाते हैं।

यशोमति नंदन

यशोमति नंदन, ब्रज बर-नागर,
गोकुल रंजन कान।
गोपी पराण-धन, मदन मनोहर,
कालिया दमन विधान ।।१।।

अमल हरिनाम अमिय विलासा,
विपिन पुरंदर, नवीन नागर-वर, वंशीवदन सुवासा।।२।।

ब्रज जन पालन, असुरकुलनाशन,
नंद गोधन रखवाला ।
गोविंद, माधव, नवनीत-तस्कर,
सुंदर नंद गोपाला ।।३।।

यमुना तट चर, गोपी वसन हर,
रास रसिक, कृपामय।
श्रीराधा-वल्लभ, वृंदावन नटवर,
भक्तिविनोद आश्रय ।।४।।

१. कृष्ण यशोदा मैया के पुत्र हैं। वे ब्रजभूमि में निवास करने वाले दिव्य प्रेमी हैं; वे गोकुलवासियों को आकर्षित करने वाले कान्हा हैं; गोपियों के प्राणधन हैं; मदन (कामदेव) का मन हरने वाले तथा कालियानाग का दमन करने वाले हैं।

२. श्रीकृष्ण के इन पवित्र नामों के कीर्तन से अमृतसदृश आनन्द प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण ब्रज के बारह वनों के अधिपति हैं तथा उनके सौन्दर्य में सदैव अति नवीनता रहती है। वे मुरली बजाते हैं तथा अतिसुन्दर वस्त्र पहनते हैं।

३. श्रीकृष्ण ब्रजवासियों के रक्षक तथा सम्पूर्ण असुर वंश का नाश करने वाले हैं। वे नन्द महाराज की गायों की रखवाली करने वाले तथा लक्ष्मीपति हैं। वे माखनचोर हैं तथा नन्द महाराज के सुन्दर गोपाल हैं।

४. श्रीकृष्ण यमुना के तट पर विचरने वाले तथा गोपियों का चीर हरण करने वाले हैं। उन्हें अपने भक्तों से प्रेमालाप करना अत्यन्त भाता है। श्रीकृष्ण कृपामय हैं, राधारानी के प्रेमी हैं, वृन्दावन में सबसे कुशल नर्तक हैं तथा भक्तिविनोद के एकमात्र आश्रय हैं।

प्रसाद सेवा

भाई रे!
एक दिन शान्तिपुरे, प्रभु अद्वैतेर घरे,
दुइ प्रभु भोजने बोसिलो।
शाक कोरि आस्वादन, प्रभु बले भक्तगण,
एइ शाक कृष्ण आस्वादिलो।।१।।

१) हे भाई! एक दिन शान्तिपुर में श्रीअद्वैताचार्य के घर पर श्रीचैतन्य महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु भोजन के लिए बैठे थे। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने शाक का आस्वादन किया और भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा, ''यह शाक अत्यन्त स्वादिष्ट है! निश्चित् रूप से श्रीकृष्ण ने इसका आस्वादन किया है!''

हेनो शाक आस्वादने, कृष्णप्रेम ऐसे मने,
सेइ प्रेमे कोरो आस्वादन।
जडबुद्धि परिहरि, प्रसाद भोजन करि,
'हरि, हरि' बोलो सर्वजन।।२।।

२) ''इस प्रकार के शाक के आस्वादन से हृदय में कृष्णप्रेम उदित हो जाता है। ऐसे प्रेम में आप इस प्रसाद का आस्वादन करो। अपनी जड़-भौतिक विचारों को त्यागकर भगवान् के प्रसाद को ग्रहण करो और केवल ''हरि! हरि!'' का उच्चारण करो। ''

जय राधा माधव

(जय) राधा माधव (जय) कुंजविहारी।
(जय) गोपीजन वल्लभ (जय) गिरिवरधारी ।।
(जय) यशोदा नंदन (जय) व्रजजनरंजन।
(जय) यमुनातीर वनचारी ।।

वृन्दावन के कुंजवनों में विहार करने वाले श्री श्रीराधामाधव की जय हो! श्रीकृष्ण गोपियों के प्रियतम तथा गिरिराज पर्वत को धारण करने वाले श्रीकृष्ण की जय हो! यशोदा के प्रिय पुत्र श्रीकृष्ण की जय हो! तथा समस्त व्रजवासियों के प्रिय हैं और यमुना के तट पर स्थित वनों में विचरण करने वाले श्रीकृष्ण की जय हो!

गौर आरती

जय जय गौराचाँदेर आरतिक शोभा
जाह्नवी तट वने जगमन लोभा ।।१।।

दक्षिणे निताईचाँद बामे गदाधर
निकटे अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर ।।२।।

बसियाछे गौराचाँदेर रत्न-सिंहासने
आरति करेन ब्रह्मा-आदि देवगणे ।।३।।

नरहरि आदि कोरि चामर ढुलाय
सञ्जय मुकुंद वासुघोष आदि गाय ।।४।।

शंख बाजे घण्टा बाजे, बाजे करताल
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल ।।५।।

बहुकोटि चन्द्र जिनि वदन उज्ज्वल
गलदेशे वनमाला करे झलमल ।।६।।

शिव-शुक नारद प्रेमे गद्‌गद् ।
भकति-विनोद देखे गौरार सम्पद।।७।।

१. श्रीचैतन्य महाप्रभु की सुन्दर आरती की जय हो, जय हो। यह गौर-आरती गंगा के तट पर स्थित एक कुंज में हो रही है तथा संसार के समस्त जीवों को आकर्षित कर रही है।

२. उनके दाहिनी ओर नित्यानन्द प्रभु हैं तथा बाईं ओर श्रीगदाधर हैं। श्रीचैतन्य महाप्रभु निकट श्रीअद्वैत प्रभु तथा छत्र धारण किये श्रीनिवास प्रभु खड़े हैं।

३. श्रीचैतन्य महाप्रभु सोने के सिंहासन पर विराजमान हैं तथा ब्रह्माजी उनकी आरती कर रहे हैं। इस अवसर पर अन्य देवगण भी उपस्थिति हैं।

४. श्रीचैतन्य महाप्रभु के अन्य पार्षद जैसे नरहरि आदि चाँवर डुला रहे हैं तथा कुशल गायक जैसे मुकुन्द एवं वासुघोष कीर्तन कर रहे हैं।

५. शंख, करताल एवं मृदंग की मधुर ध्वनि सुनने में अत्यन्त प्रिय लग रही है।

६. श्रीचैतन्य महाप्रभु का मुखमण्डल करोड़ो चन्द्रमा की भाँति दैदीप्यमान हो रहा है तथा उनके गले में वनफूलों की माला झलमल कर रही है।

७. महादेव शिवजी, श्रीशुकदेव गोस्वामी तथा श्रील नारदमुनि के कण्ठ प्रेममय दिव्य आवेग से अवरुद्ध हैं। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कहते हैं, ''तनिक श्रीचैतन्य महाप्रभु का ऐश्वर्य तो देखो!''

श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिन्दितट-विपिन-सङ्गीतकरवो
मुदाभीरीनारी-वदनकमलास्वाद-मधुपः।
रमा-शम्भु-ब्रह्मामरपति-गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।१।।

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि-कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावन-वसति-लीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।२।।

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज-बलभद्रेण बलिना।
सुभद्रा-मध्यस्थः सकल-सुर-सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।३।।

कृपा-पारावारः सजल-जलद-श्रेणि-रुचिरो
रमावाणीरामः स्फुरदमल-पंकेरुहमुखः।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा-गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।४।।

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित-भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया
जगाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।५।।

परंब्रह्मापीडः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि।

रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।६।।

न वै याचे राज्यं न च कनक-माणिक्य-विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल-जन-काम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।७।।

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते!।
अहो दीनेऽनाथे निहित-चरणो निश्चितमिदं
जगाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे।।८।।

जगाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचि।
सर्वपाप-विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति।।९।।

१. कभी-कभी अत्यन्त आनन्द में भगवान् जगन्नाथ अपनी बाँसुरी बजाते हुए यमुना के तटपर मधुर संगीत बजाते हैं। वे एक भ्रमर के समान हैं जो व्रज की कमलमुख सदृश गोपियों के मधु का आस्वादन करते हैं और उनके चरणकमल लक्ष्मीजी, शिवजी, ब्रह्माजी, इन्द्र एवं गणेश द्वारा वंदनीय हैं। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

२. भगवान् जगन्नाथ अपने बायें हाथ में वेणु धारण करते हैं। उनके सिर पर मोरपंख एवं कटि पर पीला रेशमी वस्त्र है। अपने नेत्रों के कोनों से वे अपने प्रेमी भक्तों पर कृपा-कटाक्ष करते हैं और अपने दिव्य धाम वृन्दावन में अपनी लीलाओं के माध्यम से स्वयं को उजागर करते हैं। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

३. महासमुद्र के तट पर स्थित सुनहरे निलाचल पर्वत पर अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ निवास करने वाले भगवान् जगन्नाथ सभी भक्तों को भक्ति करने का सौभाग्य प्रदान करते हैं। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

४. भगवान् जगन्नाथ कृपा के समुद्र हैं और जल से भरे बादलों की श्रृंखला के समान प्रतीत होते हैं। वे श्रीमती लक्ष्मी एवं सरस्वती के लिए आनन्द के भण्डार हैं और उनका मुख निर्मल कमल के समान सुन्दर है। वे देवाधिदेवों और ऋषियों द्वारा पूजित हैं और उपनिषद् उनकी महिमाओं का गान करते हैं। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

५. जब भगवान् जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान रथ पर सवार होकर मार्ग पर निकलते हैं तो प्रत्येक पग पर ब्राह्मणों के समूह उनकी स्तुति में गीत गाते हैं। उन्हें सुनकर भगवान् जगन्नाथ उनके प्रति दया से भर जाते हैं। वे दया के सागर हैं और सम्पूर्ण जगत् के बन्धु हैं। वे भगवान् जगन्नाथ, अमृत के सागर से जन्म लेने वाली अपनी संगिनी श्रीमती लक्ष्मी के साथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

६. वे ब्रह्माजी के सिर के रत्न हैं और उनके नेत्र पूरे खिले कमल की पंखुड़ियों के समान विशाल हैं। वे नीलाचल पर्वत पर निवास करते हैं और उनके चरणकमल अनन्तदेव अपने सिर पर धारण करते हैं। भगवान् जगन्नाथ प्रेम के रसों में आनन्दित रहते हैं और उन्हें श्रीमती राधारानी की शीतल कुण्ड सदृश दिव्य देह के आलिंगन से परमसुख की अनुभूति होती है। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

७. मैं राज्य की याचना नहीं करता और न ही सोने, मणियों अथवा वैभव की। मैं सभी पुरुषों द्वारा अभिलाषित सुन्दर पत्नी की कामना भी नहीं करता। मैं केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि भगवान् जगन्नाथ, जिनकी महिमा भगवान् शिव सदा गाते हैं, वे मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

८. हे देवों के देव, कृपया इस व्यर्थ भौतिक जीवन को तुरन्त समाप्त कर दें। हे यदुपति, कृपया मेरे पापों के सीमारहित समुद्र को नष्ट कर दे। अहो, यह सत्य है कि भगवान् जगन्नाथ के चरणकमल उन्हें निश्चित् प्राप्त होते हैं जो स्वयं को दीन मानते हैं तथा भगवान् के अतिरिक्त किसी अन्य आश्रय को स्वीकार नहीं करते। वे भगवान् जगन्नाथ मेरे नेत्रमार्गों के पथिक बनें।

९. जो इस पुण्य जगन्नाथाष्टकम् को पढ़ता है वह पूर्णतः पवित्र हो जाता है। सभी पापों से मुक्त होकर वह शुद्धात्मा भगवान् विष्णु के धाम में प्रवेश करता है।

श्रीशचीसुताष्टकम्

(श्रील सार्वभौम भट्टाचार्य कृत)

नव गौरवरं नवपुष्प-शरम्
नवभाव-धरमं नवलास्य-परम।
नवहास्य-करं नवहेम-वरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।१।।

नवप्रेम-युतं नवनीत-शुचम्
नववेश-कृतं नवप्रेम-रसम्।
नवधा विलसत शुभप्रेममयम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।२।।

हरिभक्ति-परं हरिनाम-धरम्
कर-जाप्य-करं हरिनाम-परम्।
नयने सततं प्रणयाश्रु-धरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।३।।

सततं जनता-भव-ताप-हरम्
परमार्थ-परायण-लोक-गतिम्।
नव-लेह-करं जगत्-ताप-हरम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।४।।

निज-भक्ति-करं प्रिय-चारुतरम्
नट-नर्तन-नागर-राज-कुलम्।
कुल-कामिनी-मानस-लास्य-करम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।५।।

करताल-वलं कल-कण्ठ-रवम्
मृदु-वाद्य-सुवीणिकया मधुरम्।
निज-भक्ति-गुणावृत-नाट्य-करम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।६।।

युगधर्म-युतं पुनर्नन्द-सुतम्
धरणी-सुचित्रं भव-भावोचितम्।
तनु-ध्यान-चितं निज-वास-युतम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।७।।

अरुणं नयनं चरणं वसनम्
वदने स्खलितं स्वक्-नाम-धरम्।
कुरुते सुरसं जगतः जीवनम्
प्रणमामि शचीसुत-गौरवरम्।।८।।

१. उनकी देह का रंग कुमकुम मिश्रित ताजे माखन की कान्ति के समान है। वे नवपुष्पों के बाणों से प्रहार करने वाले सुन्दर कामदेव हैं। वे सदैव भक्तिरस के नये-नये भावों का प्रदर्शित करते हैं। भाव-भंगिमाओं के साथ नृत्य उन्हें भाता है। वे हर समय नये-नये मजाक करते हैं जिससे सभी हँसते हैं। उनका रंग पिघले सोने के समान है। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

२. वे सदैव भगवद्प्रेम के नवनवायमान प्रेम से युक्त रहते हैं। उनकी कान्ति नवनीत के समान है। वे सदैव नये स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और श्रीकृष्ण-प्रेम के नये-नये रसों का आस्वादन करते हैं। भक्ति की नौ-विधियों का पालन करते हुए वे नौ प्रकार से प्रकाशित होते हैं। वे सर्वाधिक शुभकारी प्रेम से युक्त हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

३. वे श्रीहरि की भक्ति में लीन रहते हैं। वे नियमित रूप से हरि के नामों का जप करते हैं। जप करते समय वे अपनी अँगुलियों से उसे गिनते हैं। वे हरिनाम से आसक्त हैं और उनकी आँखों में सदैव प्रेम के आँसु भरे रहते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

४. वे सदैव मनुष्यों के त्रितापों को हरते हैं। अपने परम लाभ को समझने वाले लोगों के लिए वे सर्वोच्च लक्ष्य हैं। वे लोगों को मधुमक्खी बनने के लिए प्रेरित करते हैं (जो कृष्णप्रेम रूपी शहद के लिए आतुर रहती है)। वे भौतिक जगत् की दावाग्नि को दूर करते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

५. वे स्वयं अपनी भक्ति को बढ़ावा देते हैं। वे अपने प्रिय सेवकों के लिए सर्वाकर्षक हैं। अपने मधुर नृत्य से वे नटवर-नागर-राज के लक्षण दर्शाते हैं। वे गाँव की युवा स्त्रियों

के मनों को नृत्य करने के लिए बाध्य करते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

६. वे करताल बजाते हैं और उनके कण्ठ से मधुर ध्वनि प्रवाहित होती है तथा वीणा के राग धीरे-धीरे बजते हैं। इस प्रकार वे भक्तों को ऐसे नाट्य करने के लिए प्रेरित करते हैं जो स्वयं उनकी भक्ति से युक्त होते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

७. वे युगधर्म संकीर्तन लेकर आये हैं, जो कलियुग का एकमात्र धर्म है। उनके रूप में नन्द महाराज के पुत्र पुनः प्रकट हुए हैं। वे पृथ्वी के असाधारण प्रदिप्त आभूषण हैं। जन्म-मृत्यु के संसार में उनके प्रचार का भाव अत्यन्त उपयुक्त है। उनका मन स्वयं अपने कृष्ण-रूप के चिन्तन पर स्थित रहता है। वे सदैव अपने धाम में निवास करते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

८. उनके नेत्र, उनके तलवे और उनके वस्त्र प्रातःकालीन सूर्य के समान लालिमायुक्त हैं। जब वे स्वयं अपने नामों का उच्चारण करते हैं तो उनकी वाणी कम्पकम्पा उठती है। सम्पूर्ण जगत् में वे मधुर रसों को उजागर करते हैं। मैं शचीमाता के पुत्र श्रीगौरांग महाप्रभु को प्रणाम करता हूँ।

श्रीदामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानंदरूपं
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं
परामृष्टमत्यं ततो द्रुत्य गोप्या ।।१।।

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं
कराम्भोज-युग्मेन सातंक नेत्रम्।
मुहुःश्वास कम्प-त्रिरेखामकण्ठ
स्थित ग्रैव-दामोदरं भक्तिबद्धम् ।।२।।

इतीदृक् स्वलीलाभिरानंद कुण्डे
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।

तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ।।३।।

वरं देव ! मोक्षं न मोक्षावधिं वा
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।।।
इदं ते वपुर्नाथ गोपाल बालं
सदा मे मनस्याविरस्तां किमन्यैः।।४।।

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलै-
र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे
मनस्याविरस्तामलं लक्षलाभैः।।५।।

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो
प्रसीद प्रभो दुःख जलाब्धिमग्नम् ।
कृपादृष्टि-वृष्ट्यातिदीनं बतानु
गृहाणेश मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः।।६।।

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्
त्वयामोचितौ भक्तिभाजौकृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ
न मोक्षे गृहो मेऽस्ति दामोदरेह।।७।।

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने ।
नमो राधिकायै त्वदीय-प्रियायै
नमो अनंत लीलाय देवाय तुभ्यम्।।८।।

१. शाश्वत ज्ञान और आनन्द के मूर्तिमान् स्वरूप परम भगवान्, जिनके कुण्डल इधर-उधर हिल-डुल रहे हैं, जो गोकुल में अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होते हैं, जो (माता यशोदा द्वारा मथी जा रही दही के बर्तन को तोड़ने और माखन चुराने के दण्ड से बचने के लिए) ऊखल से कूदकर तेजी से दौड़ जाते हैं, किन्तु अन्ततः यशोदा द्वारा अधिक तेजी से दौड़कर पकड़े जाते हैं - अनन्त लीला करने वाले ऐसे भगवान् दामोदर को मैं प्रणाम करता हूँ।

२. अपनी माता के हाथ में छड़ी देखकर वे रोते हैं और बारम्बार अपने हस्तकमलों से नेत्रों को मसलते हैं। उनकी आँखें दहशत से भरी हैं और तेजी से साँस लेने के कारण तीन रेखाओं से अंकित उनके गले में पड़ी मोतियों की माला हिल रही है। उन परम भगवान् दामोदर को, जिनका उदर अपनी माता के शुद्ध प्रेम से बँधा है, मैं प्रणाम करता हूँ।

३. इन अद्‌भुत बाल्यलीलाओं से श्रीकृष्ण सभी गोकुलवासियों का आनन्द के सागर में निमग्न कर देते हैं। इस प्रकार वे भगवान् के ऐश्वर्य ज्ञान में लीन लोगों के समक्ष घोषणा करते हैं, ''मैं केवल अपने प्रेमी भक्तों द्वारा ही जीता जा सकता हूँ।'' मैं प्रेमपूर्वक ऐसे दामोदर भगवान् को शत-शत प्रणाम करता हूँ।

४. हे भगवन्! यद्यपि आप सभी प्रकार के वर देने में सक्षम हैं, मैं न तो मुक्ति की, न वैकुण्ठ निवास की और न ही अन्य किसी वरदान की आशा करता हूँ। हे भगवन्! मेरी केवल यही इच्छा है कि आपका यह बाल-गोपाल रूप सदैव मेरे हृदय में प्रकट होता रहे। इसके अतिरिक्त अन्य वरदानों का मेरे लिए क्या लाभ?

५. हे भगवन्! माता यशोदा बारम्बार आपके कमलमुख का चुम्बन लेती हैं, जो लालिमायुक्त कोमल काली लटाओं तथा आपके बिम्ब फल के समान सुन्दर होंठो से सुसज्जित है। आपके कमलमुख का यह रूप सदैव मेरे हृदय में प्रकट होता रहे। मेरे लिए अन्य हजारों-हजारों वरदानों का कोई लाभ नहीं है।

६. हे देव, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे दामोदर! हे अनन्त! हे विष्णु! हे नाथ! हे भगवन्, कृपया मुझपर प्रसन्न होइये। अपनी कृपादृष्टि मुझपर डालिये और इस सांसारिक कष्टों के सागर में डूबे इस दीन-हीन का उद्धार कीजिए तथा मेरे आँखों के समक्ष प्रकट होइये।

७. हे दामोदर! ऊखल से बँधे अपने शिशु रूप में आपने नारद द्वारा शापित दो कुवेर-पुत्रों को मुक्त करके उन्हें महान् भक्त बना दिया। इसी प्रकार कृपया मुझे भी अपनी शुद्ध प्रेमभक्ति प्रदान कीजिए। मैं केवल इसकी कामना करता हूँ और मुक्ति की कोई इच्छा नहीं करता।

८. हे दामोदर, आपके उदर को बाँधने वाली दैदीप्यमान रस्सी को प्रणाम! आपके उदर को प्रणाम जो सम्पूर्ण जगत् का धाम है! आपकी सर्वप्रिया श्रीमती राधारानी को प्रणाम! और अनन्त लीला करने वाले हे भगवन्, आपको भी मेरा प्रणाम है।

श्रीषड्गोस्वाम्यष्टकम्

कृष्णोत्कीर्तन-गान-नर्तन-परौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराऽधीरजन-प्रियौ प्रियकरौ निर्मत्सरौ पूजितौ।
श्रीचैतन्यकृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।१।।

नानाशास्त्र-विचारणैक-निपुणौ सद्धर्म-संस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ-शरण्याकरौ।
राधाकृष्ण-पदारविन्द-भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे-रूप सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।२।।

श्रीगौराङ्ग-गुणानुवर्णन-विधौ श्रद्धा-समृद्ध्यान्वितौ
पापोत्ताप-निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्द-गानामृतैः।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनैक-निपुणौ कैवल्य-निस्तारकौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।३।।

त्यक्त्वा तूर्णमशेष-मण्डलपति-श्रेर्णी सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीनगणेशकौ करुणया कौपीन-कन्थाश्रितौ।
गोपीभाव-रसामृताब्धि-लहरी-कल्लोळ-मग्नौ मुहुः-
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।४।।

कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्णे मयूराकुले
नानारत्न-निबद्ध-मूल-विटप-श्रीयुक्त-वृन्दावने।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।५।।

संख्यापूर्वक-नामगाननतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहार-विहारकादि-विजितौ चात्यन्त-दीनौ च यौ।
राधाकृष्ण-गुणस्मृतेर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।६।।

राधाकुण्ड-तटे कलिन्द-तनया तीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद-वशादशेष-दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा

गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाविभूतौ मुदा
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।७।।

हे राधे! व्रजदेविके! च ललिते! हे नन्दसूनो! कुतः
श्रीगोवर्धन-कल्पपादप-तले कालिन्दिवन्ये कुतः
घोषन्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।८।।

१. मैं श्रील रूप, सनातन, रघुनाथभट्ट, रघुनाथदास, श्रील जीव एवं गोपालभट्ट नामक छः गोस्वामियों की वन्दना करता हूँ कि, जो श्रीकृष्ण के नाम-रूप-गुण-लीलाओं के कीर्तन, गायन एवं नृत्यपरायण थे, प्रेमामृत के समुद्रस्वरूप थे, सज्जन एवं दुर्जन सभी प्रकार के लोगों में प्रिय थे तथा सभी के प्रिय कार्यों को करने वाले थे। वे ईर्ष्यारहित एवं सभी द्वारा पूजित थे। वे श्रीचैतन्यदेव की अतिशय कृपा से युक्त थे और भूतल पर भक्ति का विस्तार करके भूमि का भार उतारने वाले थे।

२. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो अनेक शास्त्रों के गूढ़ अर्थों पर विचार करने में परमनिपुण थे, भक्तिरूप-परमधर्म के संस्थापक थे, जनमात्र के परमहितैषी थे, तीनों लोगों में माननीय थे, शरणागतवत्सल थे एवं श्रीराधाकृष्ण के पदारविन्द के भजनरूप आनन्द से मत्त मधुप के समान थे।

३. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ कि जो श्रीगौरांगदेव के गुणानुवाद की विधि में श्रद्धारूप-सम्पत्ति से युक्त थे, श्रीकृष्ण के गुणगानरूप-अमृत वृष्टि के द्वारा प्राणीमात्र के पाप-ताप को दूर करने वाले थे तथा आनन्दरूप-समुद्र को बढ़ाने में परमकुशल थे, भक्ति का रहस्य समझाकर जीवों को कैवल्य मुक्ति से बचाने वाले थे।

४. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो लोकोत्तर वैराग्य से समस्त मण्डलों के आधिपत्य के पद को शीघ्र ही तुच्छ की तरह सदा के लिए छोड़कर, कृपापूर्वक अतिशय दीन होकर, कौपीन एवं कंथा (गुदड़ी) को धारण करने वाले थे तथा गोपीभावरूप रसामृत सागर की तरंगों में आनन्दपूर्वक निमग्न रहते थे।

५. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो कलरव करने वाले कोकिल-हंस-सारस आदि पक्षियों से व्याप्त तथा मयूरों के स्वर से आकुल, तथा अनेक प्रकार के रत्नों से निबद्ध मूलवाले वृक्षों के द्वारा शोभायमान श्रीवृन्दावन में,

रात-दिन श्रीराधाकृष्ण का भजन करते रहते थे तथा जीवनमात्र के लिए हर्षपूर्वक भक्तिरूप परम पुरुषार्थ देने वाले थे।

६. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो अपने समय को संख्यापूर्वक नामजप, नाम-संकीर्तन एवं प्रणाम आदि के द्वारा व्यतीत करते थे, जिन्होंने निद्रा-आहार-विहार आदि पर विजय प्राप्त कर ली थी एवं जो स्वयं को अत्यन्त दीन मानते थे तथा श्रीराधाकृष्ण के गुणों की स्मृति से प्राप्त माधुर्यमय आनन्द के द्वारा विमुग्ध रहते थे।

७. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो प्रेमोन्माद के वशीभूत होकर विरह की समस्त दशाओं के द्वारा ग्रस्त होकर, प्रभादी की भाँति, कभी राधाकुण्ड के तट पर, कभी यमुना के तट पर, तो कभी वंशीवट पर सदैव घूमते रहते थे, और कभी श्रीहरि के उत्तम गुणों को हर्षपूर्वक गाते हुए भावविभोर रहते थे।

८. मैं श्रील रूप-सनातनादि उन छः गोस्वामियों की वंदना करता हूँ जो ''हे व्रज की पूजनीय देवी, राधिके! आप कहाँ हैं? हे ललिते! आप कहाँ हैं? हे व्रजराजकुमार! आप कहाँ हैं? श्रीगोवर्धन के कल्पवृक्षों के नीचे बैठे हैं अथवा कालिन्दी के सुन्दर तटों पर स्थित वनों में भ्रमण कर रहे हैं?'' इस प्रकार पुकारते हुए वे विरहजनित पीड़ाओं से महान् विह्वल होकर व्रजमण्डल में सर्वत्र भ्रमण करते थे।

तिलक लगाते समय मंत्र

ललाटे केशवं ध्यायेन्नारायणमथोदरे।
वक्षःस्थले माधवं तु गोविन्दं कण्ठकूपके।।
विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ बाहु च मधुसूदनम्।
त्रिविक्रमं कन्धरे तु वामनं वामपार्श्वके।।
श्रीधरं वामबाहु तु हृषीकेशं तु कन्धरे।
पृष्ठे च पद्मनाभं च कट्यां दामोदरं न्यसेत्।।

माथे पर - श्रीकेशवाय नमः

उदर पर - श्रीनारायणाय नमः

छाती पर - श्रीमाधवाय नमः

कण्ठ पर - श्रीगोविन्दाय नमः

दाईं कमर पर - श्रीविष्णवे नमः

दाईं बाँह पर - श्रीमधुसूदनाय नमः

दायें कंधे पर - श्रीत्रिविक्रमाय नमः

बाईं कमर पर - श्रीवामनाय नमः

बाईं बाँह पर - श्रीश्रीधराय नमः

बायें कंधे पर - श्रीहृषीकेशाय नमः

पीछे गर्दन के नीचे - श्रीपद्मनाभाय नमः

कमर के निचले भाग में - श्रीदामोदराय नमः

गौड़ीय वैष्णव गीत
(भाग दो)

कृष्ण तब पुण्य हबे भाइ.....४७
बोड़ो कृपा कोइले कृष्ण ५०
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु ५४
जे आनिल प्रेम-धन ५५
एइबार करुणा ५५
जय जय जगन्नाथ शचीर नंदन ५६
जय राधे, जय कृष्ण ५७
भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन ५९
अनादि करम-फले ६०
उदिलो अरुण.....६२
जीव जागो.....६४
ओहे! वैष्णव ठाकुर ६५
परम करुणा ६६
अक्रोध परमानंद ६७
कृष्ण जिनका नाम है ६८
राधे जय जय.....६९
विभावरी-शेष ६९

हरि हरये नमः ७१
'गौरांग'' बोलिते ह'बे ७३
हरि हरि! विफले ७४
श्रीरूपमञ्जरी-पद ७५
बोड़ो सुखरे.....७६
नदिया गोद्रुमे.....७८
दुर्लभ मानव-जन्म ७६
गोपीनाथ ७८
भुलिया तोमारे ८३
आमार जीवन ८५
मानस, देह, गेह ८७
एखन बुझिनू प्रभू! ८८
तुमि सर्वेश्वरेश्वर ९०
शुद्ध भकत ९१
गुरुदेव! ९३
निताइ-पद-कमल ९४
दशावतार स्तोत्र ९६

श्रीकृष्ण के चरणकमलों पर प्रार्थना

'जलदूत' जहाज पर १३ सितम्बर, १९६५ में कृष्णकृपाश्रीमूर्ति
ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद द्वारा रचित

शुक्रवार १० सितम्बर १९६५ में अमरीका की यात्रा करते समय अटलांटिक महासागर के मध्य श्रील प्रभुपाद अपनी डायरी में लिखते हैं, ''आज जहाज अत्यन्त सुगमता से चल रहा है। मुझे पहले से अच्छा लग रहा है। किन्तु मुझे श्रीवृन्दावन तथा मेरे इष्टदेवों - श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ और श्रीराधा-दामोदर से विरह का अनुभव हो रहा है। ऐसे समय में एकमात्र श्रीचैतन्य चरितामृत मुझे सांत्वना दे रही है, जिसमें मैं श्रीचैतन्य महाप्रभु की लीलारूपी अमृत का आस्वादन कर रहा हूँ। मैंने श्रीचैतन्य महाप्रभु के आदेशानुगामी श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती की आज्ञा का पालन करने के लिए भारतभूमि को छोड़ा है। कोई योग्यता न होते हुए भी मैंने अपने गुरुदेव का आदेश उठाते हुए खतरा मोल लिया है। वृन्दावन से इतनी दूर मैं उन्हीं की कृपा पर पूर्णाश्रित हूँ।''

तीन दिन पश्चात्, शुद्ध भक्ति के इस भाव में श्रील प्रभुपाद ने निम्नलिखित प्रार्थना की रचना की।

कृष्ण तब पुण्य हबे भाइ।
ए पुण्य करिबे जबे राधारानी खुशी हबे
ध्रुव अति बोलि तोमा ताइ।।

श्रीसिद्धान्त सरस्वती, शचीसुत प्रिय अति
कृष्ण सेवाय जार तुल नाइ।
सेइ से महंत गुरु, जगतेर मधे उरु
कृष्णभक्ति देय ठाइ ठाइ।।१।।

तार इच्छा बलवान, पाश्चात्येते ठान ठान
होय जाते गौरांगेर नाम।
पृथ्वीते नगरादि आसमुद्र नद नदी
सकलेइ लोए कृष्ण नाम।।२।।

ताहले आनन्द होए, तबे होए दिग्विजय
चैतन्येर कृपा अतिशय।
माया दुष्ट जत दुःखी, जगते सबाइ सुखी

वैष्णवेर इच्छा पूर्ण हय।।३।।

से कार्य ये करिबारे, आज्ञा यदि दिलो मोरे
योग्य नहि अति दीन हीन।
ताइ से तोमार कृपा, मागितेछि अनुरूपा
आजि तुमि सबार प्रवीण।।४।।

तोमार से शक्ति पेले, गुरु सेवाय वस्तु मिले
जीवन सार्थक यदि होए।
सेइ से सेवा पाइले, ताहले सुखी हले
तब संग भाग्यते मिलोए।।५।।

एवं जन्म निपतितं प्रभवाहि-कूपे
कामाभिकामं अनु यः प्रपतन प्रसंगात
कृत्वात्मसात् सुरर्षिणा भगवत गृहीतः
सोऽहं कथं नु विसृजे तब भृत्यसेवाम्।।६।।

तुमि मोर चिर साथी, भूलिया मायार लाठी
खाइयाछी जन्म-जन्मान्तरे।
आजि पुनः ए सुयोग, यदि होय योगायोग
तबे पारि तुहे मिलिबारे।।७।।

तोमार मिलने भाइ, आबार से सुख पाइ
गोचारणे घुरि दिन भोर।
कत वने छुटाछुटि, वने खाय लुटापुटि
सेइ दिन कबे हबे मोर।।८।।

आजि से सुविधाने, तोमार स्मरण भेलो
बोड़ो आशा डाकिलाम ताय।
आमि तोमार नित्यदास, ताई करि एत आस
तुमि बिना अन्य गति नाय।।९।।

हे भाइयों, मैं तुमसे निश्चित् रूप से कहता हूँ कि तुम्हें भगवान् श्रीकृष्ण से पुण्यलाभ तभी प्राप्त होगा जब श्रीमती राधारानी तुमसे प्रसन्न हो जायेंगी।

१. शचीपुत्र (श्रीचैतन्य महाप्रभु) के अतिप्रिय श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर द्वारा की गई श्रीकृष्ण की सेवा अतुलनीय है। वे ऐसे महान् सद्गुरु हैं जो सम्पूर्ण विश्व में श्रीकृष्ण के प्रति प्रगाढ़ भक्ति का वितरण करते हैं।

२. उनकी बलवती इच्छा से श्रीगौरांग महाप्रभु का नाम पाश्चात्य जगत् के सब देशों में फैलेगा। पृथ्वी के सब नगरों व गाँवों में, समुद्रों, नदियों आदि सभी में रहने वाले लोग श्रीकृष्ण के नामों का कीर्तन करेंगे।

३. जब श्रीचैतन्य महाप्रभु की अतिशय कृपा सभी दिशाओं को जीत लेगी तो पृथ्वी आनन्द से आप्लावित हो जायेगी। जब सब पापी एवं दुष्ट जीव सुखी हो जायेंगे तो इसे देखकर वैष्णवों की इच्छा पूरी हो जायेगी।

४. यद्यपि मेरे गुरु महाराज ने मुझे इस अभियान को पूरा करने की आज्ञा दी है, तथापि मैं इसके योग्य नहीं हूँ। मैं तो अति दीन व हीन हूँ। अतएव, हे नाथ, अब मैं आपकी कृपा की भिक्षा माँगता हूँ जिससे मैं योग्य बन सकूँ, क्योंकि आप तो प्रत्येक कार्य में प्रवीण हैं।

५. यदि आप शक्ति प्रदान करते हैं तो गुरु की सेवा से परमसत्य की प्राप्ति होती है और जीवन सार्थक हो जाता है। यदि वह सेवा मिल जाये तो व्यक्ति सुखी हो जाता है और सौभाग्य से उसे आपका संग मिल जाता है।

६. हे भगवन्! सामान्य लोगों का अनुगमन करते हुए एक-के-बाद-एक भौतिक इच्छाओं के संग के कारण मैं सर्पों के अंधे कुएँ में गिरता जा रहा था। किन्तु आपसे सेवक श्रील नारदमुनि ने मुझेअपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया तथा दिव्य स्तर प्राप्त करने हेतु आवश्यक निर्देश दिये। इसलिए मेरा पहला कर्तव्य उनकी सेवा करना है। भला मैं उनकी यह सेवा कैसे छोड़ सकता हूँ? (प्रह्लाद महाराज ने नृसिंहदेव से कहा, श्रीमद्भागवतम् ७.९.२८)

७. हे श्रीकृष्ण, तुम मेरे चिर साथी हो। जन्म-जन्मान्तर से तुम्हें भुलाकर मैंने माया की लाठियाँ ही खाई हैं। यदि आज तुमसे मिलने का सुअवसर मुझे पुनः प्राप्त हो जाये तो निश्चित् हमारा पुनर्मिलन होगा।

८. हे भाई, तुमसे मिलकर मुझे फिर से महान् सुख का अनुभव होगा। भोर वेला में मैं गोचारण हेतु निकलूँगा। व्रज के वनों में भागता-खेलता हुआ मैं अलौकिक हर्षोन्माद में भूमि पर लोटूँगा। अहा! वह दिन कब आयेगा?

९. आज मुझे तुम्हारा स्मरण बड़ी भली प्रकार से हुआ। मैंने तुम्हें बड़ी आशा से पुकारा था। मैं तुम्हारा नित्य दास हूँ और इसलिए तुम्हारे संग की इतनी आशा करता हूँ। हे कृष्ण, तुम्हारे बिना मेरी अन्य कोई गति नहीं है।

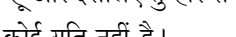

मार्किने भागवत-धर्म

(अमरीका में भागवत-धर्म का प्रचार

कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद कृत)

बोड़ो कृपा कोइले कृष्ण अधमेर प्रति।
कि लागियानिले हेथा करो इबे गति।।१।।
आछे किछु कार्य तव एइ अनुमाने।
नाहे केनो आनिबेन एइ उग्र स्थाने।।२।।
रजस तमोगुणे ऐरा सबाइ आच्छन्न।
वासुदेव कथा रुचि नहे से प्रसन्न।।३।।
तबे यदि तव कृपा होए अहैतुकी।
सकल-इ-संभव होए तुमि से कौतुकी।।४।।
कि भावे बुझाले तारा बुझे सेइ रस।
एत कृपा करो प्रभु करि निजवश।।५।।
तोमार इच्छाय सब होए माया-वश।
तोमार इच्छाय नाश मायार परश।।६।।
तब इच्छा होए यदि तादेर उद्धार।
बुझिबे निश्चय तबे कथा से तोमार।।७।।
भागवतेर कथा से तव अवतार।
धीर हइया सुने यदि काने बार-बार।।८।।
शृण्वतां स्वकथाः कृष्णः पुण्यश्रवण कीर्तनः।
हृद्यन्तःस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम्।।
नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया।
भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी।।
तदा रजस्तमोभावाः कामलोभादयश्च ये।

चेत एतैरनाविद्धं स्थितं सत्व प्रसीदति।।
एवं प्रसन्नमनसो भगवद्भक्तियोगतः।
भगवत्तत्वविज्ञानं मुक्तस'स्य जायते।।
भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि दृष्ट एवात्मनीश्वरे।
रजस तमो हते हबे पाइबे निस्तार।
हृदयेर अभद्र सब घुचिबे ताहार।।१०।।
कि कोरे बुझाबो कथा वर सेइ चाहि।
क्षुद्र आमि दीन हीन कोनो शक्ति नाहि।।११।।
अथच एनेछो प्रभु कथा बोलिबारे।
जे तोमार इच्छा प्रभु कोरो एइ बारे।।१२।।
अखिल जगत-गुरु! वचन से आमार।
अलंकृत कोरिबार क्षमता तोमार।।१३।।
तव कृपा हले मोर कथा शुद्ध हबे।
शुनिया सबार शोक दुःख जे घुचिबे।।१४।।
आनियाछो यदि प्रभु आमारे नाचाते।
नाचाओ नाचाओ प्रभु नाचाओ से-मते
काष्ठेर पुत्तलि यथा नाचाओ से मते।।१५।।
भक्ति नाइ वेद नाइ नामे खूब धरो।
''भक्तिवेदान्त'' नाम एबे सार्थक करो।।१६।।

१. हे श्रीकृष्ण! आप इस पतित जीव पर अत्यन्त कृपालु हैं, किन्तु मैं नहीं जानता कि आप मुझे यहाँ क्यों लेकर आये हैं। अब आप साथ जैसा चाहें वैसा व्यवहार करें।

२. किन्तु मेरा अनुमान है कि आपका यहाँ कुछ कार्य है, अन्यथा आप मुझे ऐसे उग्रस्थान में भला क्यों लाते?

३. यहाँ की अधिकांश जनता रजो और तमोगुण से आच्छादित है। भौतिक जीवन में मग्न होकर वे अपने-आपको बहुत सुखी मान रहे हैं और इसलिए भगवान् वासुदेव की दिव्य कथाओं में उनकी कोई रुचि नहीं है। मैं नहीं जानता कि वे किस प्रकार इसे समझ पायेंगे।

४. किन्तु मैं इतना जानता हूँ कि आपकी अहैतुकी कृपा से सबकुछ सम्भव हो सकता है, क्योंकि आप इस प्रकार के कौतुक करने में निपुण हैं।

५. वे भक्ति के सूक्ष्म भावों को कैसे समझेंगे? हे प्रभु! मैं केवल आपकी कृपा के लिए प्रार्थना करता हूँ जिससे मैं उन्हें आपके संदेश के प्रति आश्वस्त कर सकूँ।

६. सब जीव आपकी इच्छा से माया के वशीभूत हैं और इसलिए यदि आप चाहें तो वे इसके चंगुल से मुक्त हो सकते हैं।

७. यदि उनका उद्धार करने की आपकी इच्छा होगी तो निश्चय ही वे आपकी कथा को समझने में समर्थ हो सकेंगे।

८. श्रीमद्भागवतम् की कथा आपका अवतार है और यदि कोई धीर व्यक्ति नम्रतापूर्वक बार-बार इसे सुनता है तो वह इसे समझ सकता है।

९. ध्यानपूर्वक श्रवण एवं कीर्तन करने पर कृष्णकथा अत्यन्त पवित्रकारी है और जो भक्त उस कृष्णकथा को सुनने की तीव्र इच्छा उत्पन्न कर लेता है, सभी के हृदय में परमात्मा रूप में स्थित एवं गम्भीर भक्तों के शुभेच्छु मित्र परम भगवान् श्रीकृष्ण ऐसे भक्त के हृदय को समस्त भौतिक इच्छाओं से शुद्ध कर देते हैं। नियमित रूप से भागवत श्रवण करने एवं शुद्ध भक्त की सेवा करने से हृदय में स्थित अनर्थ प्रायः नष्ट हो जाते हैं और उत्तम श्लोकों से महिमान्वित परम भगवान् की प्रेममयी सेवा दृढ़ता से हृदय में स्थित जाती है। जैसे ही हृदय में दृढ़ भक्ति स्थित होती है रजोगुण एवं तमोगुण के प्रभाव जैसे काम, लोभ आदि अदृश्य होने लगते हैं। तब वह भक्त सत्त्वगुण में स्थित हो जाता है और पूर्णतः प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार शुद्ध सतोगुण में स्थित होकर वह व्यक्ति जिसका मन भगवान् की भक्ति के सम्पर्क में आने से ज्ञान से प्रकाशित हुआ था, समस्त भौतिक बन्धनों से मुक्त होकर भगवद्तत्त्व को पूर्णतः समझ जाता है। इस प्रकार हृदय की ग्रन्थि कट जाती है और सभी संशय नष्ट हो जाते हैं। उसकी कर्मबंधन की श्रृंखला कट जाती है और वह आत्मा को स्वामी के रूप में देखने लगता है। (श्रीमद्भागवतम् १.२.१७-२१)

१०. वह व्यक्ति रजो एवं तमोगुण के प्रभाव से निस्तार पा लेगा और उसके हृदय के सभी अभद्र दूर हो जायेंगे।

११. मैं उन्हें कृष्णभावना का संदेश आखिर कैसे समझाऊँगा? मैं अत्यन्त अभागा, अयोग्य एवं अधम हूँ। तभी तो मैं आपकी कृपा चाहता हूँ जिससे मैं उन्हें आश्वस्त कर

सकूँ, क्योंकि स्वयं अपने बलबूते पर ऐसा करना मेरे लिए असम्भव है।

१२. फिर भी, हे प्रभु! आप मुझे यहाँ अपनी कथा का प्रसार करने हेतु लायें हैं। अब यह आप पर निर्भर है कि आप मुझे अपनी इच्छानुसार सफल बनायें या असफल।

१३. हे अखिल जगत् के गुरु! मैं तो केवल आपके वचनों को दोहरा सकता हूँ, इसलिए यदि आप चाहें तो मेरे वचनों को उनकी समझ के अनुकूल बना दीजिए।

१४. केवल आपकी अहैतुकी कृपा से ही मेरे वचन शुद्ध होंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब यह दिव्य संदेश उनके हृदयों में जायेगा तो उनका सब शोक और दुःख दूर हो जायेगा।

१५. हे प्रभु! मैं तो केवल आपके हाथों में एक कठपुतली हूँ। इसलिए यदि आप मुझे यहाँ नचाने लाये हैं तो मुझे नचाइये, मुझे नचाइये, हे प्रभु जैसा आप चाहें मुझे नचाइये।

१६. मुझमें न तो भक्ति है और न ही ज्ञान। परन्तु मुझे श्रीकृष्ण के पवित्र नाम में दृढ़ विश्वास है। मुझे ''भक्तिवेदान्त'' की उपाधि दी गई है, इसलिए हे भगवन्! यदि आप चाहें तो मेरा यह नाम सार्थक कर दें।

हस्ताक्षर
सर्वाधिक दुर्भागा तुच्छ भिक्षुक,
ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी
जलदूत जहाज, कॉमनवैल्थ पीयर,
बोस्टन, मैसाचुसेट्स, अमरीका
तिथि १८ सितम्बर १९६५

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दया कर मोरे ।
तोमा बिना के दयालु जगत् संसारे ।।१।।

पतित पावन हेतु तव अवतार।
मो सम पतित प्रभु ना पाइबे आर।।२।।

हा हा प्रभु नित्यानंद प्रेमानंद सुखी।
कृपावलोकन करो आमि बड दुःखी ।।३।।

दया करो सीतापति अद्वैत गोसाइ।
तव कृपाबले पाई चैतन्य निताई ।।४।।

हा हा स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ।
भट्ट युग श्रीजीव हा प्रभु लोकनाथ ।।५।।

दया करो श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास।
रामचंद्र संग मांगे नरोत्तम दास ।।

१. हे श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु! कृपया मुझपर दया करो। आपके बिना इस संसार में अन्य कोई दयालु नहीं है।

२. हे प्रभु! पतित जीवों का पवित्र करने के लिए आपका अवतार हुआ है और आपको मेरे समान पतित और कहीं नहीं मिलेगा।

३. हे श्रीनित्यानन्द प्रभु! आप तो प्रेम के दिव्य आनन्द में सदैव सुखी रहते हैं। कृपया मुझपर थोड़ी कृपा करें, क्योंकि मैं अत्यन्त दुःखी हूँ।

४. हे सीता ठकुरानी के पतिदेव श्रीअद्वैत गोसाईं! मेरे ऊपर दया कीजिए। आपकी कृपा के बल से ही श्रीचैतन्य महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु की प्राप्ति सम्भव है।

५. हे श्रील स्वरूपदामोदर गोस्वामी, हे श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील रूप गोस्वामी, श्रील रघुनाथदास गोस्वामी, श्रील रघुनाथभट्ट गोस्वामी, श्रील गोपालभट्ट गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी और श्रील लोकनाथ गोस्वामी प्रभु!

६. हे श्रील श्रीनिवास आचार्य प्रभु, दया करो! नरोत्तमदास श्रील रामचन्द्र कविराज का संग माँगता है।

जे आनिल प्रेम-धन

जे आनिल प्रेम-धन करुणा प्रचुर ।
हेन प्रभु कोथा गेला आचार्य ठाकुर ।।१।।

काँहा मोर स्वरूप-रूप काँहा सनातन ।
काँहा दास रघुनाथ पतित पावन ।।२।।

काँहा मोर भट्टयुग काँहा कविराज।
एक काले कोथा गेला गोरा नटराज ।।३।।

पाषाणे कुटिबो माथा, अनले पशिब।
गौरांग गुणेर निधि कोथा गेले पाबो ।।४।।

से सब संगीर संगे जे कैला विलास ।
से संग ना पाइया काँदे नरोत्तम दास ।।५।।

१. दिव्य प्रेम का धन लेकर आने वाले तथा करुणा के असीमित भण्डार श्रील श्रीनिवास आचार्य ठाकुर कहाँ चले गये?

२. मेरे श्रील स्वरूप दामोदर और श्रील रूप गोस्वामी कहाँ हैं? श्रील सनातन गोस्वामी कहाँ हैं? और पतित-पावन श्रील रघुनाथदास गोस्वामी कहाँ हैं?

३. मेरे श्रील रघुनाथभट्ट और श्रील गोपालभट्ट गोस्वामी कहाँ हैं? श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी कहाँ हैं? महान् नर्तक श्रीमन् गौरांग महाप्रभु एकाएक कहाँ चले गये?

४. मैं अपना सिर चट्टान पर पीट-पीटकर फोड़ दूँगा और अग्नि में प्रविष्ट हो जाऊँगा। सभी दिव्य गुणों के निधिस्वरूप श्रीगौरांग महाप्रभु को अब मैं कहाँ पाऊँगा?

५. श्रीगौरांग महाप्रभु एवं उनके साथ लीला करने वाले सभी संगियों के संग से वंचित नरोत्तमदास केवल रो रहे हैं।

एइबार करुणा

एइबार करुणा कर वैष्णव गोसाईं।
पतितपावन तोमा बिने केह नाइ।।१।।

जाँहार निकटे गेले पाप दूरे जाय।

एमन दयाल प्रभु केबा कोथा पाय? ।।२।।

गंगार परश हैले पश्चाते पावन।
दर्शने पवित्र कर एइ तोमार गुण।।३।।

हरिस्थाने अपराधे तारे' हरिनाम।
तोमा स्थाने अपराधे नाहि परित्राण।।४।।

तोमार हृदये सदा गोविन्द-विश्राम।
गोविन्द कहेन-मोर वैष्णव पराण।।५।।

प्रति जन्मे करि आशा चरणेर धूलि।
नरोत्तमे कर दया आपनार बलि।।६।।

१. हे वैष्णव ठाकुर! कृपया इस बार मुझपर कृपा कीजिए। आपके अतिरिक्त पतितों का उद्धार करने वाला अन्य कोई नहीं है।

२. हम ऐसे दयालु प्रभु को अन्यत्र कहाँ पायेंगे, जिनके मात्र निकट जाने से समस्त पाप दूर हो जाते हैं?

३. गंगा में तो स्नान करने के पश्चात् व्यक्ति पवित्र होता है, किन्तु आपके दर्शनमात्र से व्यक्ति पवित्र हो जाता है। आपके गुण इतने महान् हैं।

४. यदि कोई भगवान् हरि के प्रति अपराध करता है तो हरिनाम उसे शुद्ध कर सकता है, किन्तु आपके प्रति अपराध करने वाले के लिए कोई मुक्ति नहीं है।

५. आपके हृदय में सदैव श्रीगोविन्द विश्राम करते हैं और भगवान् गोविन्द कहते हैं, ''वैष्णवगण मेरे प्राण है।''

६. मेरी एकमात्र आशा है कि मैं जो भी जन्म लूँ मुझे आपके चरणकमलों की धूलि प्राप्त हो। कृपया नरोत्तम को अपना समझिये और उसपर कृपा कीजिए।

जय जय जगन्नाथ शचीर नंदन

जय जय जगन्नाथ शचीर नंदन
त्रिभुवने करे जार चरण वंदन।।१।।

नीलाचले शंख-चक्र-गदा-पद्म धर

नदिया नगरे दण्डा कमण्डलु-कर ।।२।।

केह बोले पूरबे रावण बधिला
गोलोकेर वैभव लीला प्रकाश करिला ।।३।।

श्री-राधार भावे एबे गोरा अवतार
हरे कृष्ण नाम गौर करिला प्रचार ।।४।।

वासुदेव घोष बोले करि जोड हाथ
जेइ गौर सेइ कृष्ण सेइ जगाथ ।।५।।

१. श्रीजगन्नाथ मिश्र और श्रीमती शचीदेवी के प्रिय पुत्र की जय हो! सम्पूर्ण त्रिभुवन उनके चरणकमलों की वन्दना करता है।

२. नीलाचल क्षेत्र में वे शंख, चक्र, गदा और कमलपुष्प धारण करते हैं, जबकि नदिया नगर में उन्होंने संन्यासी का त्रिदण्ड और कमण्डलु धारण किया हुआ है।

३. कहा जाता है कि पूर्वकाल में श्रीरामचन्द्र भगवान् ने रावण का वध किया था। और बाद में श्रीकृष्ण रूप में उन्होंने अपनी गोलोक लीलाओं के वैभव को प्रकट किया।

४. अब वही भगवान् श्रीकृष्ण राधारानी के दिव्य भाव एवं अंगकान्ति के साथ श्रीगौरांग महाप्रभु के रूप में पुनः अवतीर्ण हुए हैं और उन्होंने चारों दिशाओं में ''हरे कृष्ण'' नाम का प्रचार किया है।

५. अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए वासुदेव घोष कहते हैं, ''श्रीगौरांग महाप्रभु ही कृष्ण हैं और वे ही जगन्नाथ हैं।''

जय राधे, जय कृष्ण

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृन्दावन
श्रीगोविन्द, गोपीनाथ, मदन-मोहन ।।१।।

श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गिरि-गोवर्धन
कालिन्दी यमुना जय, जय महावन ।।२।।

केशी घाट, वंशीवट, द्वादश कानन
याहा सब लीला कोइलो श्रीनन्दनन्दन ।।३।।

श्रीनन्द-यशोदा जय, जय गोपगण
श्रीदामादि जय, जय धेनुवत्स-गण ।।४।।

जय वृषभानु, जय कीर्तिदा सुन्दरी
जय पौर्णमासी, जय आभीर-नागरी ।।५।।

जय जय गोपीश्वर, वृन्दावन माझ
जय जय कृष्ण सखा, बटु द्विज-राज ।।६।।

जय रामघाट, जय रोहिणीनन्दन
जय जय वृन्दावनवासी यत जन ।।७।।

जय द्विज पत्नी जय नाग कन्या-गण
भक्तिते जाहार पाइलो, गोविन्द-चरण ।।८।।

श्रीरास-मण्डल जय जय राधा-श्याम
जय जय रास लीला सर्व मनोरम ।।९।।

जय जयोज्ज्वल-रस सर्व रससार
परकीया भावे याहा, व्रजेते प्रचार ।।१०।।

श्रीजाह्नवी-पादपद्म करिया स्मरण
दीन कृष्णदास कहे, नाम-संकीर्तन ।।११।।

१. श्री श्रीराधा-कृष्ण तथा वृन्दावन धाम की जय हो। श्रीगोविन्द, श्रीगोपीनाथ तथा श्रीमदनमोहन - वृन्दावन के इन तीन अधिष्ठाता विग्रहों की जय हो।

२. श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गिरिराज गोवर्धन तथा यमुना की जय हो। श्रीकृष्ण तथा बलरामजी की क्रीड़ास्थली महावन की जय हो।

३. जहाँ श्रीकृष्ण ने केशी राक्षस का वध किया था उस केशीघाट की जय हो। जहाँ श्रीकृष्ण ने अपनी मुरली से सब गोपिकाओं को आकर्षित किया, उस वंशीवट की जय हो। व्रज के बारह वनों की जय हो जहाँ नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ने सब लीलायें की।

४. श्रीकृष्ण के माता-पिता नन्द और यशोदा की जय हो। श्रीराधारानी और अनंग मंजरी के बड़े भाई श्रीदामा सहित सब गोपबालकों की जय हो। व्रज के सब गाय-बछड़ों की जय हो।

५. राधारानी के माता-पिता वृषभानु और कीर्तिदा की जय हो। पौर्णमासी की जय हो। व्रज की युवा गोपिकाओं की जय हो।

६. पवित्र धाम के संरक्षणार्थ निवास करने वाले गोपीश्वर शिवजी की जय हो। श्रीकृष्ण के ब्राह्मण-सखा मधुमंगल की जय हो।

७. जहाँ बलरामजी ने रास रचाया था उस रामघाट की जय हो। रोहिणीनन्दन बलरामजी की जय हो। सब वृन्दावनवासियों की जय हो।

८. घमण्डी याज्ञिक ब्राह्मणों की पत्नियों की जय हो। कालिया नाग की पत्नियों की जय हो। इन सभी ने अपनी भक्ति द्वारा भगवान् गोविन्द के चरणकमलों को प्राप्त किया।

९. श्रीरासमण्डल की जय हो। राधा और श्याम की जय हो। श्रीकृष्ण की लीलाओं में की जय हो।

१०. समस्त रसों के सारस्वरूप माधुर्यरस की जय हो, परकीय भाव में जिसका प्रचार श्रीकृष्ण ने व्रज में किया।

११. श्रीनित्यानन्द प्रभु की संगिनी श्रीजाह्नवादेवी के चरणकमलों का स्मरण करके यह दीन-हीन कृष्णदास नाम-संकीर्तन कर रहा है।

भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन

भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन,
अभय चरणारविन्द रे।
दुर्लभ मानव-जनम सत्संगे,
तरह ए भव सिन्धु रे।।१।।

शीत आतप, वात बरिषण,
ए दिन यामिनी जागि' रे।
विफले सेबिनु कृपण दुर्जन,
चपल सुख-लव लागि' रे।।२।।

ए धन, यौवन, पुत्र परिजन,
इथे कि आछे परतीति रे।

कमलदल-जल, जीवन टलमल,
भजहुँ हरिपद नीति रे।।३।।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण,
वन्दन, पादसेवन, दास्य रे।
पूजन, सखीजन, आत्मनिवेदन,
गोविन्द दास अभिलाष रे।।४।।

१. हे मेरे मन, तू केवल नन्दनन्दन श्रीकृष्ण के अभय प्रदान करने वाले चरणकमलों का भजन कर। इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाकर साधुसंग द्वारा इस भवसागर को पार कर लो।

२. मैं दिन-रात जागकर सर्दी-गर्मी, आँधी-तूफान, वर्षा में पीड़ित होता रहा। क्षणभंगुर सुख के लिए मैंने व्यर्थ ही दुष्ट और कृपण लोगों की सेवा की।

३. क्या भरोसा है कि हमारी सम्पत्ति, यौवन, पुत्र तथा परिजन हमें सच्चा सुख दे पायेंगे? यह जीवन कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूँद के समान अस्थिर है। अतः तुझे सदैव भगवान् श्रीहरि की सेवा एवं उनका भजन करना चाहिए।

४. गोविन्द दास की यह चिर अभिलाषा है कि वह नौ विधियों से युक्त भक्ति द्वारा भगवान् की सेवा में संलग्न हो, जो इस प्रकार है - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वंदन, पादसेवन, दास्य, पूजा-अर्चना तथा आत्मनिवेदन।

अनादि करम-फले

अनादि करम-फले, पडि' भवार्णव-जले,
तरिवारे ना देखि उपाय।
ए विषय-हलाहले, दिवा-निशि हिया ज्वले,
मन कभु सुख नाहि पाय।।१।।

आशा-पाश शतशत, क्लेश देय अविरत,
प्रवृत्ति-उर्मिर ताहे खेला।
काम-क्रोध आदि छय, बाटपाडे देय भय,
अवसान हैल आसि' बेला।।२।।

ज्ञान-कर्म-ठग दुइ, मोरे प्रतारिया लइ,
अवशेषे फेले सिन्धु-जले।
ए हेन समये बन्धु, तुमि कृष्ण कृपासिन्धु,
कृपा करि' तोल मोरे बले।।३।।

पतित किमरे धरि', पादपद्मधूलि करि',
देह भक्तिविनोद आश्रय।
आमि तव नित्यदास, भुलिया मायार पाश,
बद्ध ह'ये आछि दयामय।।४।।

१. अपने पूर्व कर्मफलों के कारण मैं अज्ञानता के इस महासागर में गिर पड़ा हूँ और इससे बाहर निकलने का मुझे कोई मार्ग नहीं सूझ रहा। दिन-रात मेरा हृदय सांसारिक विषयों की अग्नि से दग्ध रहता है और मेरा मन बिल्कुल भी शान्त नहीं है।

२. मैं सुखी बनने के लिए हर समय सैकड़ों-हजारों योजनायें बनाता रहता हूँ किन्तु वे योजनायें मुझे सदैव क्लेश देती हैं। मैं बार-बार भौतिकवाद रूपी समुद्र की लहरों के थपेड़े खा रहा हूँ। साथ ही अनेक लुटेरे मुझे भयभीत कर रहे हैं, जिनमें छह प्रमुख हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य। इस प्रकार मेरा जीवन अन्त होने को आया है।

३. ज्ञान और कर्म रूपी दो ठगों ने मुझे ठग लिया और मुझे पथभ्रष्ट करके कष्टों के सागर में धकेल दिया। इस दयनीय अवस्था में दया के सागर हे प्रिय श्रीकृष्ण, आप ही मेरे एकमात्र मित्र हैं। इस अंधकार के सागर से निकलने की मुझमें कोई शक्ति नहीं है, इसलिए मैं आपके चरणकमलों पर प्रार्थना करता हूँ कि कृपया अपने बल द्वारा मुझे इस कष्टों के सागर से बाहर निकाल लीजिए।

४. कृपया अपने इस पतित दास को उठाइये और अपने चरणकमलों पर धूली का एक कण बना लीजिए। कृपया भक्तिविनोद को अपने पादपद्मों पर आश्रय प्रदान कीजिए। मैं आपका नित्य सेवक हूँ, किन्तु जैसे-तैसे मैं आपको भूलकर इस माया के मोहजाल में गिर पड़ा हूँ। कृपया मेरी रक्षा कीजिए।

उदिलो अरुण

उदिलो अरुण पूरब भागे,
द्विजमणि गोरा अमनि जागे,
भकत समूह लोइया साथे,
गेला नगर ब्राजे

'ताथइ ताथइ' बाजलो खोल,
घन घन ताहे झाञ्झेर रोल,
प्रेमे ढल ढल सोणार अङ्ग,
चरणे नूपुर बाजे

मुकुन्द माधव यादव हरि,
बोलेन बोलो रे वदन भोरी,
मिछे निदबशे गेलो रे राति,
दिवस शरीर साजे

ऐमन दुर्लभ मानवदेहो.
पाइया कि कोरो भाव न केहो,
एबे न भजिले यशोदासुत,
चरमे पडिवे लाजे

उदित तपन होइते अस्त
दिन गोलो बोलि' होइबे ब्यस्त,
तबे केनो एबे अलस होय,
ना भज हृदोय राजे

जीवन अनित्य जानाह सार,
ताहे नानाविध विपदभार,
नामाश्रय कोरि' जतने तुमि,
थाकह आपन काजे

जीवेर कल्याण साधन काम,
जगते आसि' ए मधुर नाम,

अविद्या तिमिर तपन रूपे,
हृदगगने विराजे
कृष्णनाम सुधा कोरिया पान,
जुडाओ भकतिविनोद प्राण,
नाम विना किछु नाहिको आर,
चौद्दा भुवन माझे

१. पूर्व दिशा में सूर्योदय होते ही द्विजमणि श्रीगौरसुन्दर जाग गये और भक्तों के समूह को लेकर नगर भ्रमण के लिए चल पड़े।

२. मृदंग से मधुर 'ताथइ-ताथइ' की ध्वनि आ रही थी और उसी के ताल मिलाकर झाँझर इत्यादि अनेक वाद्ययंत्र बज रहे थे। उस समय प्रेम में आविष्ट होकर श्रीगौरसुन्दर का तप्त सोने के रंग का श्रीअंग ढल ढल करने लगा। और उनके इस प्रकार नृत्य करते समय उनके चरणों नुपूर मधुरतापूर्वक बजने लगे।

३. ये भाईयों! तुमने रात को सोने में और दिन को अपने शरीर को सजाने में गँवा दिया और भगवान् का भजन नहीं किया। इसलिए अभी तुम मुकुन्द, माधव, यादव और हरि के नामों का उच्चस्वर से कीर्तन करो। ४. जरा विचार करो कि ऐसा दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त होने पर भी आप क्या कर रहे हो? यह शरीर प्राप्त होने पर भी यदि आपने यशोदानन्दन श्रीकृष्ण का भजन नहीं किया तो यह अत्यन्त लज्जाजनक है।

५. सूर्यास्त होने पर संध्या को निकट आता देखकर (अर्थात् वृद्धावस्था में) तुम भगवान् का भजन आरम्भ करोगे, तो फिर अभी से अपने हृदयराज का भजन क्यों नहीं कर रहे, क्यों आलस कर रहे हो?

६. यह निश्चित् है कि जीवन नाना प्रकार की विपदाओं से भरा है इसलिए तुम सावधानीपूर्वक हरिनाम का आश्रय ग्रहण करो और केवल जीवन निर्वाह हेतु संसारी कार्यों में संलग्न होओ।

७. जीवों के कल्याण हेतु ही यह सुमधुर हरिनाम इस जगत् में अवतीर्ण हुआ है। यह अज्ञानरूपी अंधकार से भरे हृदय के आकाश में प्रकाशवान सूर्य के समान उदित होकर समस्त अज्ञानता को नष्ट करता है और शुद्ध प्रेमाभक्ति को प्रकाशित करता है।

८. श्रीलभक्तिविनोद ठाकुर कहते हैं आप सभी कृष्णनाम रूपी अमृत का निरंतर

पान करें जिससे मुझे अत्यन्त संतुष्टि प्राप्त होगी। सम्पूर्ण चौदह लोकों में श्रीहरि के नामों के अलावा अन्य कोई उपाय नहीं है।

जीव जागो

जीव जागो, जीव जागो, गौराचांद बोले।
कोत निद्रा याओ माया-पिशाचीर कोले।।

भजिबो बोलिया एसे संसारभितोरे।
भुलिया रोहिले सुमि अविद्यार भोरे।।

तोमारे लोइते आमि होइनु अवतार।
आमि विना बन्धु आर के आछे तोमार?

एनेछि औषधी माया नाशिबारो लागि'।
हरिनाम महामंत्र लओ तुमि मागि'।।

भकतिविनोद प्रभु चरणे पोडिया।
सेइ हरिनाम मंत्र लोइलो मागिया।।

१. भगवान् श्रीगौरचन्द्र पुकार रहे हैं, ''उठो, उठो! सोती आत्माओं उठ! लम्बे काल से तुम माया पिशाचिनी की गोद में सो रहे हो!

२. ''इस जन्म-मृत्यु के संसार में आते समय तुमने कहा था ''हे भगवन्! निश्चित् ही मैं आपका भजन करूँगा,' किन्तु अब तुम अपने उस वचन को भूल गये और अविद्या के अंधकार में डूब गये।

३. ''केवल तुम्हारे उद्धार हेतु मैंने अवतार लिया है। मेरे अतिरिक्त आखिर तुम्हारा कौन मित्र है?

४. ''मैं मायारूपी रोग को जड़ से उखाड़ने की औषधी लाया हूँ। अब प्रार्थना करते हुए यह हरे कृष्ण महामंत्र मुझसे ले लो।''

५. भक्तिविनोद श्रीगौरांग महाप्रभु के चरणों पर गिर पड़ते हैं और हरिनाम की भिक्षा माँगने के पश्चात् उन्हें महामंत्र प्राप्त होता है।

ओहे! वैष्णव ठाकुर

ओहे! वैष्णव ठाकुर, दयार सागर,
ए दासे करुणा करि'।
दिया पदछाया, शोध हे आमाय,
तोमार चरण धरि।।१।।

छय वेग दमि' छय दोष शोधि',
छय गुण देह दासे।
छय सत्संग, देह हे आमारे,
बसेछि संगेर आशे।।२।।

एकाकी आमार, नाहि पाय बल,
हरिनाम-संकीर्तने।
तुमि कृपा करि', श्रद्धाबिन्दु दिया,
देह कृष्ण-नाम-धने।।३।।

कृष्ण से तोमार, कृष्ण दिते पार,
तोमार शकति आछे।
आमि त' काङ्गाल, कृष्ण कृष्ण बलि',
धाइ तब पाछे पाछे।।४।।

१. हे वैष्णव ठाकुर, हे दया के सागर, कृपया अपने सेवक पर कृपा कीजिए। मुझे अपने चरणकमलों की छाया प्रदान करके मेरा शुद्धिकरण कीजिए। मैं आपके चरणों को अपने हृदय में धारण करता हूँ।

२. मुझे छह प्रकार के वेगों को सहन करना सिखाइये; मेरे छह दोषों में सुधार कीजिए, मुझे छह गुण प्रदान कीजिए और मुझे छह प्रकार का साधुसंग प्रदान कीजिए।

३. मुझमें अकेले भगवान् के पवित्र नामों का कीर्तन करने की शक्ति नहीं है। कृपया श्रद्धा की मात्र एक बूँद प्रदान करके मुझे सौभाग्यशाली बना दीजिए, क्योंकि उससे मैं कृष्णनाम रूपी खजाना प्राप्त कर सकता हूँ।

४. कृष्ण आपके हैं; आपके अन्दर जिसे चाहे उसे कृष्ण प्रदान करने की शक्ति है। मैं कंगाल हूँ और केवल ''कृष्ण! कृष्ण!'' चिल्लाता हुआ आपके पीछे-पीछे दौड़ रहा हूँ।

परम करुणा

परम करुणा, पहुँ दुइजन,
निताइ गौरचन्द्र।
सब अवतार, सार-शिरोमणि,
केवल आनन्द-कन्द।।१।।

भज भज भाई, चैतन्य-निताई,
सुदृढ़ विश्वास करि'।
विषय छाड़िया, से रसे मजिया,
मुखे बोलो हरि हरि।।२।।

देख ओरे भाई, त्रिभुवने नाइ,
एमन दयाल दाता।
पशु पक्षी झुरे, पाषाण विदरे,
शुनि' यार गुणगाथा।।३।।

संसारे मजिया, रहिले पड़िया,
से पदे नहिल आश।
आपन करम, भुञ्जाये शमन,
कहये लोचनदास।।४।।

१. श्रीगौरांग महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु दोनों ही अत्यन्त करुणामय हैं। वे सभी अवतारों के शिरोमणि हैं तथा आनन्द के अपूर्व भण्डार हैं।

२. हे भाई! तुम दृढ़ विश्वास के साथ श्रीचैतन्य और नित्यानन्द प्रभु का भजन करो। भोग-विषयों को त्यागकर तुम इन दोनों के प्रेमरस में डूबकर अपने मुख से केवल हरि-हरि का उच्चारण करो।

३. हे भाई! पूरे त्रिभुवन में तुम्हें इन दोनों से अधिक दयालु अन्य कोई नहीं मिलेगा। इनके गुणों की महिमा सुनकर पशु-पक्षियों का हृदय भी द्रवित हो जाता है तथा पत्थर भी विदीर्ण हो जाते हैं।

४. मैं तो सांसारिक विषयों में ही मग्न रहा और गौर-निताई के चरणकमलों के प्रति मेरी कोई रुचि जागृत नहीं हुई। लोचनदास कहते हैं कि मेरे कर्मफलों के कारण ही यमदूत मुझे यातनायें दे रहे हैं।

अक्रोध परमानंद

अक्रोध परमानंद नित्यानंद-राय।
अभिमान-शून्य निताइ नगरे बेड़ाय।।१।।

अधम पतित जीवेर द्वारे-द्वारे गिया।
हरिनाम महामंत्र दिच्छेन बिलाइया।।२।।

जारे देखे ता'रै कहे दन्ते तृण धरि।
आमारे किनिया लह, बोलो गौरहरि।।३।।

एत बलि, नित्यानंद भूमि गडि, जाय।
सोनार पर्वत येन धूलाते लोटाय।।४।।

हेन अवतारे जार रति ना जन्मिल।
लोचन बले सेइ पापी एलो आर गेलो।।५।।

१. दयालु श्रीनित्यानन्द राय कभी क्रोधित नहीं होते, क्योंकि वे सदैव परम आनन्द में निमग्न रहते हैं। अभिमान की समस्त भावनाओं से रहित वे नगर में भ्रमण करते रहते हैं।

२. सर्वाधिक अधम और पतित जीवों के द्वार-द्वार पर जाकर वे मुक्त रूप से हरिनाम महामंत्र का उपहार बाँटते हैं।

३. अपने दाँतों के बीच तृण धारण करके वे मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति से कहते हैं, ''श्रीगौरांग महाप्रभु की भक्ति करके मुझे खरीद लो।''

४. ऐसा कहकर नित्यानन्द प्रभु भूमि पर लोट-पोट होने लगते और ऐसा प्रतीत होता मानो सोने का पर्वत धूलि में लोट रहा हो।

५. लोचनदास ठाकुर कहते हैं, ''जिस किसी की इतने दयालु अवतार में आसक्ति जागृत नहीं हुई है, ऐसा पापी व्यक्ति तो जन्म-मृत्यु के बारम्बार चक्र में आया और चला गया है।''

कृष्ण जिनका नाम है

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका नाम है ।
ऐसे श्रीभगवान् को बारम्बार प्रणाम है ।।१।।

यशोदा जिनकी मैया है, नन्दजी बापैया है ।
ऐसे श्रीगोपाल को बारम्बार प्रणाम है ।।२।।

राधा जिनकी छाया है, अद्‌भुत जिनकी माया है ।
ऐसे श्रीघनश्याम को बारम्बार प्रणाम है ।।३।।

लुटलुट दधि माखन खायो, ग्वालबाल संग धेनु चरायो ।
ऐसे लीलाधाम को बारम्बार प्रणाम है ।।४।।

द्रुपद-सुता की लाज बचायो, ग्रह से गज को फंद छुडायो ।
ऐसे कृपाधाम को बारम्बार प्रणाम है ।।५।।

कुरु पांडव में युद्ध मचायो, अर्जुन को उपदेश सुनायो ।
ऐसे दीनानाथ को बारम्बार प्रणाम है ।।६।।

१. ऐसे भगवान् जिनका नाम कृष्ण है और जिनका धाम गोकुल वृन्दावन है, मैं उन्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ।

२. यशोदा जिनकी माता हैं और नन्दमहाराज जिनके पिता है, गायों को चराने वाले उन श्रीगोपाल को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

३. राधारानी जिनकी प्रिया हैं और जिनकी माया अत्यन्त अद्‌भुत है, काले बादलों के रंग वाले उन घनश्याम को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

४. जो गोपियों से लूट-लूटकर दही और माखन खाते, तथा जो अपने ग्वालमित्रों के साथ गायों को चराते, मधुर लीला करने वाले ऐसे भगवान् को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

५. जिन्होंने द्रुपद महाराज की पुत्री द्रौपदी की लाज बचाई और गजेन्द्र को मगरमच्छ के मुख से मुक्त किया, कृपा के अनन्त भण्डार ऐसे भगवान् को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

६. जिन्होंने कौरवों और पाण्डवों के बीच युद्ध करवाया और उस युद्ध के दौरान अर्जुन को भगवद्‌गीता के उपदेश दिये, दीन-हीन लोगों के ऐसे स्वामी को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

राधे! जय जय

राधे! जय जय माधव दयिते ।
गोकुल-तरुणी मण्डल-महिते ।।१।।

दामोदर-रतिवर्धन-वेशे ।
हरिनिष्कुट- वृन्दाविपिनेशे ।।२।।

वृषभानुदधि - नवशशिलेखे ।
ललिता सखीगण रमित विशाखे ।।३।।

करुणां कुरु मयि करुणा भरिते ।
सनक सनातन-वर्णित चरिते ।।४।।

१. हे श्रीमती राधारानी! हे माधव की प्रिया! गोकुल की समस्त तरुण गोपियों द्वारा वंदित हे देवी, आपकी जय हो, आपकी जय हो!

२. आप ऐसे वेश धारण करती हैं जो भगवान् दामोदर के प्रेम को बढ़ाते हैं। आप भगवान् श्रीहरि को आनन्द प्रदान करने वाले वृन्दावन धाम की महारानी हैं।

३. आप वह नवचन्द्र-स्वरूपा हैं जो महाराज वृषभानु रूपी सागर से उदित हुआ है। हे ललिता की सखी! आपके दिव्य गुण विशाखा को आनन्द प्रदान करते हैं।

४. हे परम करुणामयी देवी! सनक, सनातन आदि आपके दिव्य चरित्र का वर्णन करते हैं। हे परम दयालु राधारानी! कृपया मुझपर दया कीजिए।

विभावरी-शेष

विभावरी-शेष, आलोक-प्रवेश,
निद्रा छाडि' उठ जीव।
बोलो हरि हरि, मुकुन्द मुरारि,
राम-कृष्ण हयग्रीव।।१।।

नृसिंह वामन, श्रीमधुसूदन,
व्रजेन्द्रनन्दन श्याम।
पूतना-घातन, कैटभ-शातन,

जय दाशरथि-राम।।२।।

यशोदा-दुलाल, गोविन्द-गोपाल,
वृन्दावन-पुरन्दर।
गोपीप्रिय-जन, राधिका-रमण,
भुवन-सुन्दरवर।।३।।

रावणान्तकर, माखन-तस्कर,
गोपीजन-वस्त्रहारी।
ब्रजेर राखाल, गोपवृन्दपाल,
चित्तहारी वंशीधारी।।४।।

योगीन्द्र-वंदन, श्रीनन्द-नन्दन,
ब्रजजन भयहारी।
नवीन नीरद, रूप मनोहर,
मोहन-वंशीबिहारी।।५।।

यशोदा-नन्दन, कंस-निसूदन,
निकुञ्जरास विलासी।
कदम्ब-कानन, रास परायण,
वृन्दाविपिन-निवासी।।६।।

आनन्द-वर्धन, प्रेम-निकेतन,
फुलशर-योजक काम।
गोपांगनागण, चित्त-विनोदन,
समस्त-गुणगण-धाम।।७।।

यामुन-जीवन, केलि-परायण,
मानसचन्द्र-चकोर।
नाम-सुधारस, गाओ कृष्ण-यश,
राख वचन मन मोर।।८।।

१. अरे जीव! रात्रि समाप्त हो गई है और उजाला हो गया है। अतः निद्रा त्यागकर उठो तथा श्रीहरि, मुकुन्द, कृष्ण तथा हयग्रीव नामों का कीर्तन करो।

२. नृसिंह, वामन, मधुसूदन, पूतनाघातन (पूतना का वध करने वाले) तथा कैटभशातन (कैटभ नामक असुर का नाश करने वाले) व्रजेन्द्रनन्दन श्यामसुन्दर का नाम लो। वे रावण का वध करने के लिए दशरथनन्दन श्रीराम के रूप में अवतरित हुए थे।

३. यशोदा मैया के लाडले गोपाल का नाम लो। वे वृन्दावन में सर्वश्रेष्ठ हैं, वे गोपियों के प्रियतम हैं तथा श्रीमती राधारानी को आनन्द प्रदान करने वाले हैं। समस्त त्रिभुवन में अन्य कोई उनके समान सुन्दर नहीं है।

४. उन्होंने रावण का अन्त किया, गोपियों के घरों से माखन चुराया, गोपियों के वस्त्र चुराये। वे व्रज एवं व्रजवासियों के रखवाले हैं तथा वंशी बजाकर सभी का चित्त चुरा लेते हैं।

५. वे योगियों द्वारा वन्दनीय हैं तथा समस्त व्रजवासियों के भय का हरण करने वाले हैं। तुम उन नन्दनन्दन का नाम लो। उनका सुन्दर रूप नवीन मेघों के समान अत्यन्त मनोहर है और वे वंशी बजाते हुए विहार करते हैं।

६. वे यशोदा मैया के नन्दन परन्तु कंस के संहारक हैं। वे निकुंजों एवं कदम्ब के वनों में रासलीला करते हैं तथा वृन्दावन के वनों में निवास करते हैं।

७. वे गोपियों के आनन्द का विशेष रूप से वर्धन करने वाले हैं, प्रेम के अतुल भण्डार हैं तथा अपने पुष्पबाणों से गोपियों के काम को बढ़ाने वाले हैं। वे गोप बालकों के चित्त को आनन्दित करने वाले एवं समस्त गुणों के आश्रय हैं।

८. वे यमुना मैया के जीवनस्वरूप हैं और उसके तटों पर नाना क्रीड़ायें करने में रत रहते हैं। वे राधारानी के मनरूपी चन्द्रमा के चकोर हैं। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कह रहे हैं - हे मेरे मन! तुम मेरी बात मान लो और निरन्तर अमृतसदृश श्रीकृष्ण के इन नामों का यशोगान करो।

हरि हरये नमः

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः ।।१।।

गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन ।।२।।

श्रीचैतन्य नित्यानन्द श्रीअद्वैत-सीता
हरि गुरु वैष्णव भगवद्गीता।।३।।

श्रीरूप सनातन भट्ट रघुनाथ।
श्रीजीव गोपालभट्ट दास रघुनाथ।।४।।

एइ छय गोसाइर करि चरण वन्दन।
याहा हइते विघ्ननाश अभीष्ट पूरण।।५।।

एइ छय गोसाइ यार मुइ तार दास।
ता सबार पदरेणु मोर पंचग्रास।।६।।

तांदेर चरण सेवि भक्तसने वास।
जनमे-जनमे हय एइ अभिलाष।।७।।

एइ छय गोसाइ जबे ब्रजे कोइला वास।
राधा-कृष्ण नित्यलीला करिल प्रकाश।।।८।।

आनन्दे बोलो हरि भज वृन्दावन।
श्रीगुरु वैष्णव पदे मजाइया मन।।९।।

श्रीगुरु वैष्णव पदपद्म कोरि आस।
नाम संकीर्तन कहरे नरोत्तम दास।।।१०।।

१. हे भगवान् हरि! हे भगवान् कृष्ण! हरि, यादव, माधव और केशव के नाम से जाने वाले हे भगवन्! मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

२. हे गोपाल, गोविन्द, राम, श्रीमधुसूदन, गिरिधारी, गोपीनाथ एवं मदनमोहन!

३. श्रीचैतन्य महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीअद्वैताचार्य और उनकी पत्नी श्रीमती सीता ठाकुरानी की जय हो! भगवान् हरि, गुरु, वैष्णवों, श्रीमद्भागवतम् और श्रीमद्भगवद्गीता की जय हो!

४. श्रील रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, रघुनाथभट्ट गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी, गोपालभट्ट गोस्वामी और रघुनाथदास गोस्वामी की जय हो।

५. मैं छह गोस्वामियों के चरणकमल पर प्रणाम करता हूँ। उन्हें प्रणाम करने से भक्ति की सभी बाधायें नष्ट हो जाती हैं और समस्त आध्यात्मिक इच्छायें पूरी होती हैं।

६. जो इन छह गोस्वामियों का सेवक है मैं उसका दास हूँ। उनके चरणकमलों की धूल मेरा पाँच प्रकार का भोजन है।

७. मेरी यही अभिलाषा है कि जन्म-जन्मान्तर तक मैं उन भक्तों के संग में रहूँ जो इन छह गोस्वामियों के चरणकमलों की सेवा में रत हैं।

८. व्रज में रहते हुए इन छह गोस्वामियों ने यहाँ के लुप्त पवित्र स्थलों को उजागर किया और श्री श्रीराधा-कृष्ण की नित्य लीलाओं को प्रकाशित किया।

९. बस उच्चस्वर में आनन्दपूर्वक श्रीहरि के नामों का कीर्तन करो और अपने मन को श्रीगुरु एवं वैष्णवों के दिव्य पदकमलों पर केन्द्रित करके श्रीवृन्दावन धाम की पूजा करो।

१०. श्रीगुरु और वैष्णवों के चरणकमलों की सेवा की आस लिये नरोत्तम दास श्रीहरि के पवित्र नामों का संकीर्तन करता है।

'गौरांग'' बोलिते ह'बे

'गौरांग'' बोलिते ह'बे पुलक-शरीर।
'हरि हरि' बोलिते नयने ब'बे नीर।।१।।

आर क'बे निताईचांदेर करुणा होईबे।
संसार-वासना मोर कबे तुच्छ हबे।।२।।

विषय छाड़िया कबे शुद्ध ह'बे मन।
कबे हाम हेरबो श्रीवृंदावन।।३।।

रूप-रघुनाथ-पदे होइबे आकुति।
कबे हाम बुझबो से युगल-पीरिति।।४।।

रूप-रघुनाथ-पदे रहु मोर आश।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तम-दास।।५।।

१. वह दिन कब आयेगा जब केवल ''गौरांग'' बोलते ही मेरा शरीर पुलकित हो उठेगा तथा ''हरि, हरि'' बोलने पर मेरी आँखों से अश्रुधार प्रवाहित होने लगेगी?

२. कब श्रीनित्यानन्द की मुझपर कृपा होगी, जिसके द्वारा इस संसार को भोगने की मेरा इच्छा समाप्त हो जायेगी?

३. सांसरिक विषयभोगों को त्यागकर कब मेरा मन शुद्ध होगा? कब मैं वास्तविक रूप से श्रीवृन्दावन धाम के दर्शन कर पाऊँगा?

४. श्रील रूप गोस्वामी और श्रील रघुनाथदास गोस्वामी के चरणकमलों के प्रति कब मेरा अनुराग उत्पन्न होगा? कब मैं परम युगल श्री श्रीराधा-कृष्ण के प्रेम को समझ पाऊँगा?

५. नरोत्तमदास एकमात्र यही प्रार्थना करते हैं कि श्रीरूप और श्रीरघुनाथ के चरणकमलों में उनकी यह आशा बनी रहे।

हरि हरि! विफले

हरि हरि! विफले जनम गोंआइनु।
मनुष्य जनम पाइया राधाकृष्ण ना भजिया,
जानिया शुनिया विष खाइनु।।१।।

गोलोकेर प्रेमधन, हरिनाम-संकीर्तन
रति ना जन्मिल केने ताय।
संसार-विषानले, दिवानिशि हियाजले,
जुड़ाइते ना कोइनु उपाय।।२।।

ब्रजेन्द्रनन्दन जेइ; शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हइल निताइ।
दीन हीन यतछिल, हरिनामे उद्धारिल,
तार साक्षी जगाइ माधाइ।।३।।

हा हा प्रभु नन्दसुत, वृषभानुसुतयुत,
करुणा करह एइ बार।
नरोत्तमदास कए ना ठेलिह रांगा पाय,
तोमा बिने के आछे आमार।।४।।

१. हे श्रीहरि! मैंने अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया है। मानव जीवन पाकर भी मैंने श्री श्रीराधा-कृष्ण का भजन नहीं किया और जानबूझकर विष खा लिया।

२. गोलोक का प्रेमधन भगवान् हरि के नाम-सकीर्तन के रूप में अवतरित हुआ है।

किन्तु उस के प्रति मेरा कोई अनुराग उत्पन्न नहीं हुआ है। मेरा हृदय दिन-रात संसार के विषयों की अग्नि में दहक रहा है और दुर्भाग्य से मैंने इससे मुक्त होने का कोई उपाय भी नहीं ढूँढ़ा है।

३. इस कलियुग में व्रजेन्द्रनन्दन कृष्ण शचीमाता के पुत्र के रूप में अवतरित हुए हैं और बलरामजी श्रीनित्यानन्द प्रभु के रूप में। हरिनाम ने सभी पतित जीवों का उद्धार कर दिया है और जगाइ-मधाइ नामक दो पापी इसके प्रमाण हैं।

४. हे नन्दपुत्र श्रीकृष्ण! हे वृषभानुनन्दिनी श्रीराधारानी! कृपया इस बार मुझकर करुणा कीजिए! नरोत्तमदास कहते हैं, ''हे प्रभु! कृपया मुझे अपने लालिमायुक्त चरणकमलों से दूर न हटाना, क्योंकि आपके बिना मेरा है ही कौन?''

श्रीरूपमञ्जरी-पद

श्रीरूपमञ्जरी-पद, सेइ मोर संपद,
सेइ मोर भजन-पूजन।
सेइ मोर प्राणधन, सेइ मोर आभरण,
सेइ मोर जीवनेर जीवन।।१।।

सेइ मोर रसनिधि, सेइ मोर वाञ्छासिद्धि,
सेइ मोर वेदेर धरम।
सेइ व्रत, सेइ तप, सेइ मोर मंत्र जप,
सेइ मोर धरम करम।।२।।

अनुकूल हबे विधि, से-पदे हइबे सिद्धि,
निरखिब ए दुइ नयने।
से रूपमाधुरीराशि, प्राण-कुवलय-शशी,
प्रफुल्लित हबे निशिदिने।।३।।

तुया-अदर्शन-अहि, गरले जारल देहि,
चिरदिन तापित जीवन।
हा हा प्रभु! कर दया, देह मोरे पदछाया,
नरोत्तम लइल शरण।।४।।

१. श्रीरूप मंजरी (जो गौरलीला में श्रील रूपगोस्वामी के रूप में प्रकट हुए) के चरणकमल मेरी एकमात्र सम्पत्ति हैं। वही मेरा भजन और पूजन हैं। वही मेरे प्राणधन, मेरे आभूषण तथा मेरे जीवन के जीवनस्वरूप हैं।

२. वे चरणकमल ही मेरी रसनिधि हैं तथा मेरी समस्त इच्छाओं की सिद्धि हैं। मेरे लिए वेदों का धर्म वे ही हैं। वे ही मेरा व्रत, तप, मंत्रजप तथा धर्म-कर्म हैं।

३. उन चरणकमलों की कृपा से मेरे कार्य भक्ति के अनुकूल बन पायेंगे, मैं आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करूँगा और मैं अपने इन दों नेत्रों से वास्तव में देख पाऊँगा। दिन-रात श्रीरूप मंजरी के दिव्य चरणकमल मेरे कमलरूपी हृदय पर पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशित होंगे और मेरी पीड़ित आत्मा को राहत प्रदान करेंगे और मेरा मन प्रफुल्लित हो जायेगा।

४. हे रूप मंजरी! आपके विरह रूपी सर्प के विष ने मेरी आत्मा को जर्जर बना दिया है और अब मेरा जीवन पीड़ित और शापित है। हाय! कृपया मुझपर अपनी कृपा कीजिए और अपने पदकमलों की छाया प्रदान कीजिए। नरोत्तमदास आपकी शरण लेता है।

बोड़ो सुखेर खब

बोड़ो सुखेर खबर गाय,
सुरभि कुंजेते नामेर हाथ् खुले'छे, खोद निताइ।।

बोड़ो मोजार कोता ताय
श्रद्धा मूल्य शुद्धनाम सेइ हाटेते बिकाय।।

यत भक्त वृन्दबसि'
अधिकारी देखे' नाम बेच्छे दार कसि।।

यदि नाम किंबे भाइ
आमार संगे चल, महाजनेर काछे जाइ।।

तुमि किंबे कृष्णनाम
दस्तुरि लइब आमि पूर्ण हबे काम।।

बोड़ो दयाल नित्यानन्द
श्रद्धामात्र लेय देन परम आनन्द।।

एक बार देखले चखे जल
''गौर'' बले निताइ देन सकल सम्बल।।

देन शुद्ध कृष्ण शिक्षा
जाति, धन, विद्या, बल न करे अपेक्षा।।

अमनि छारि' माया जाल
गृहे थाको, वने थाको, न थाके जंजाल।।

आर नाइक कलिर भय
आचंडाले देय नाम निताइ दयामय।।

भक्तिविनोद डाकि कय
निताइ चरण बिना आर नाहि आश्रय।।

१. मैं अत्यन्त आनन्द में गा रहा हूँ! श्रीनवद्वीप के सुरभि कुंज में हरिनाम का बाजार खुला है और श्रीनित्यानन्द प्रभु उसके मालिक हैं।

२. उस आनन्द के बाजार में ऐसे अद्‌भुत कार्य हो रहे हैं! नित्यानन्द प्रभु शुद्ध हरिनाम वितरित कर रहे हैं और उसका मूल्य है आपकी श्रद्धा।

३. भक्तों को उत्सुकता से हरिनाम खरीदते देखकर पहले नित्यानन्द प्रभु उनकी योग्यताओं को परखेंगे और फिर उसके दाम को भाव-तोल करके वे उसे बेचेंगे।

४. हे मेरे मित्रों! यदि आप इस शुद्ध हरिनाम को खरीदना चाहते हो तो बस मेरे साथ आओ, क्योंकि मैं इन नित्यानन्द महाजन से मिलने जा रहा हूँ।

५. इस प्रकार तुम्हें शुद्ध हरिनाम प्राप्त हो जायेगा। इसके लिए मैं अपनी कमीशन भी लूँगा और इस प्रकार हम तीनों की इच्छायें पूरी हो जायेंगी।

६. श्रीनित्यानन्द प्रभु इतने दयालु हैं कि वे हरिनाम में व्यक्ति की श्रद्धा को स्वीकार करके उसे सर्वोच्च आनन्द प्रदान करते हैं।

७. जब निताई देखते हैं कि ''गौर'' नाम बोलते समय किसी की आँखों में आँसु आ रहे हैं, वे तुरन्त उसकी सहायता करते हैं और उसे सब दिव्य ऐश्वर्य प्रदान करते हैं।

८. वे उस व्यक्ति को भगवद्गीता और भागवतम् में दी गई श्रीकृष्ण की शुद्ध शिक्षायें प्रदान करते हैं। इस अचिन्त्य कृपा को प्रदान करते समय वे किसी की जाति, धन, भौतिक ज्ञान और शारीरिक क्षमता नहीं देखते।

९. हे मित्रों, कृपया माया के जंजाल को त्याग दो। यदि आप गृहस्थ हैं तो अपने घर पर ही रहो, यदि आप वैरागी हैं तो जंगल में रहो। कहीं भी रहो, कोई भी तुम्हें इस जंजाल में बाँध नहीं पायेगा।

१०. हमें कलि से डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सर्वाधिक कृपामय श्रीनित्यानन्द प्रभु बिना भेदभाव के सबको - यहाँ तककि सबसे अधम व्यक्ति को भी - हरिनाम दे रहे हैं।

११. भक्तिविनोद उच्चस्वर में घोषणा करते हैं, ''नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं है।''

नदिया गोद्रुमे

नदिया गोद्रुमे नित्यानन्द महाजन
पतियाछे नामहट्ट जीवेर कारण।।

(श्रद्धावान जन हे, श्रद्धावान जन हे)
प्रभुर आज्ञाय भाइ मागि एइ भिक्षा
बोलो 'कृष्ण', भजो 'कृष्ण', कर कृष्ण शिक्षा।।

अपराध-शून्य हये लह कृष्ण-नाम
कृष्ण माता, कृष्ण पिता, कृष्ण धन-प्राण।।

कृष्णेर संसार करि छाड़ि अनाचार
जीवे दया, कृष्ण-नाम सर्वधर्म सार।।

१. नदिया के गोद्रुम क्षेत्र में नित्यानन्द महाजन ने पतित जीवों के उद्धार के लिए हरिनाम का बाजार खोला है।

२. श्रद्धावान लोगों! श्रद्धावान लोगों! श्रीगौरांग महाप्रभु की आज्ञा से हे भाइयों, मैं आपसे तीन बातों की भिक्षा माँता हूँ - श्रीकृष्ण के नामों का कीर्तन करों, श्रीकृष्ण की

पूजा करो, और अन्यों को इसकी शिक्षा दो।

३. अपराधों से ध्यानपूर्वक बचो और केवल श्रीकृष्ण के नामों का कीर्तन करो। श्रीकृष्ण तुम्हारी माता हैं, श्रीकृष्ण तुम्हारे पिता है और श्रीकृष्ण ही तुम्हारे धन-प्राण हैं।

४. सभी अनाचार और पापों को त्यागकर श्रीकृष्ण सम्बन्धित कार्य करो। दूसरों पर करुणा दिखाना और हरिनाम कीर्तन करना सब प्रकार के धर्मों का सार है।

दुर्लभ मानव-जन्म

दुर्लभ मानव-जन्म लभिया संसारे।
कृष्ण ना भजिनु दुःख कहिबो काहारे?।।१।।

'संसार' 'संसार', को'रे मिछे गेलो काल।
लाभ ना कोइलो किछु, घटिलो जंजाल।।२।।

किसेर संसार एइ छायाबाजि प्राय।
इहाते ममता कोरि' वृथा दिन जाय।।३।।

ए देह पतन हो'ले कि रो'बे आमार?।
केहो सुख नाहि दिबे पुत्र-परिवार।।४।।

गर्दभेर मत आमि कोरि परिश्रम।
का'र लागि' एतो कोरि, ना घुचिलो भ्रम।।५।।

दिन जाय मिछ काजे, निशा निद्रा-बाशे।
नाहि भावि - मरण निकटे आछे बो'से।।६।।

भालो मन्द खाइ, हेरि, परि, चिन्ता-हीन।
नाहि भावि, ए देहो छाडिबो कोन दिन।।७।।

देहो-गेहो-कलत्रादि-चिन्ता अविरत।
जागिछे हृदये मोर बुद्धि कोरि' हत।।८।।

हाय, हाय! नाहि भावि अनित्य ए सब।
जीवन विगते कोथा रोहिबे वैभव?।।९।।

स्मशाने शरीर मम पडिया रोहिबे।

विहंग-पतंग ताय विहार कोरिबे ।।१० ।।

कुक्कुर सृगाल सब आनन्दित ह'य ।
महोत्सव करिबे आमार देह ल'य ।।११ ।।

जे देहेर एइ गति, ताँ'र अनुगत ।
संसारवैभव आर बंधु-जन जत ।।१२ ।।

अतएव माया-मोह छाडि' बुद्धिमान ।
नित्य-तत्त्व कृष्ण-भक्ति करुन संधान ।।१३ ।।

१. यद्यपि मुझे सर्वाधिक दुर्लभ मनुष्य देह प्राप्त हुई है, किन्तु ऐसा अवसर प्राप्त करके भी मैंने भगवान् श्रीकृष्ण का भजन नहीं किया और अपना जीवन व्यर्थ गँवाया। अपनी दुःखभरी कहानी अब मैं किसे सुनाऊँ?

२. मैंने विवाह करके सांसारिक जीवन में प्रवेश किया और व्यर्थ ही अपना समय गँवा दिया। इससे न तो मुझे कोई स्थाई लाभ नहीं मिला और न ही मेरी समस्याओं का समाधान हो पाया।

३. किस प्रकार का संसार है यह? यह कोई जादुई खेल के समान है जहाँ मेरी आँखों के समाने मात्र परछाइयाँ हिलती-डुलती रहती हैं। ऐसे संसार से मैं गहरी आसक्ति अनुभव करता हूँ और इसलिए दिन-प्रतिदिन मेरा समय व्यर्थ ही जा रहा है।

४. जब यह शरीर पृथ्वी पर मृत पड़ा होगा तो फिर मेरा क्या रहेगा? उस क्षण मेरे सभी पुत्र और परिजन मुझे किसी भी प्रकार का सुख नहीं दे पायेंगे।

५. मैं प्रतिदिन एक गधे के समान कठोर परिश्रम करता हूँ और अब मैं सोचता हूँ कि किसके लिए मैंने इतना परिश्रम किया? अभी तक मैं अनेक उलझनों से घिरा हूँ।

६. मेरा दिन व्यर्थ के कार्यों में गुजर जाता है और निद्रा के वश में मैं रातें व्यर्थ गँवा देता हूँ। पूरे दिन मैं कभी इस बात पर विचार नहीं करता कि क्रूर मृत्यु सदैव मेरे निकट बैठी रहती है।

७. मैं चिन्तामुक्त जीवन जीने की कल्पना करता हूँ; कभी कम खाकर तो कभी अधिक खाकर। कई बार मैं बाहर घूमने जाता हूँ और कभी नहीं। कई बार मैं अच्छे वस्त्र पहनता हूँ और यदि मन नहीं करता तो मैं सादे ही पहन लेता हूँ। मैं इतना मनमौजी जीवन जी रहा हूँ कि कभी विचार नहीं करता कि एक दिन मुझे यह शरीर छोड़ना पड़ेगा।

८. किन्तु वास्तव में मेरा कमजोर हृदय सदैव अपने शरीर, घर, पत्नी, परिवार और अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति हर समय चिन्तित रहता है। इन सभी चिन्ताओं ने मेरी बुद्धि को नष्ट कर दिया है।

९. हाय! हाय! कितनी दयनीय दशा आ खड़ी हुई है! इन सभी समस्याओं में फँसे रहकर मैंने कभी विचार नहीं किया कि ये सब अनित्य है और शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। मेरे मरने के बाद मेरा यह सब वैभव कहाँ जायेगा?

१०. एक दिन आयेगा जब मेरा शरीर श्मशान में निर्जीव पड़ा रहेगा और अनेक कौवे, गिद्ध, चींटियाँ और कीड़े आकर उसपर खेलकूद करेंगे।

११. सभी कुत्ते और सियार उसे देखकर अत्यन्त आनन्दित हो जायेंगे और प्रसन्न होकर मेरे शरीर को लेकर एक बड़े महोत्सव का आयोजन करेंगे।

१२. देखो! इस भौतिक शरीर की यह अंतिम गति है। और सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि सभी भौतिक वैभव जैसे मेरा घर, परिवार और मित्र, उन सभी की भी यही गति निश्चित् है।

१३. इसलिए, जो बुद्धिमान हैं मैं उन्हें परामर्श देता हूँ - ''माया द्वारा दिये गये इन भ्रमों को छोड़ दो और श्रीकृष्ण की शुद्धभक्ति प्राप्त करने के साधन की खोज करो, क्योंकि वही एकमात्र सत्य है।''

गोपीनाथ (भाग १)

गोपीनाथ, मम निवेदन शुनो
विषयी दुर्जन, सदा काम-रत,
किछु नाहि मोर गुण।।१।।

गोपीनाथ, आमार भरसा तुमि
तोमार चरणे, लोइनु शरण,
तोमार किंकर आमि।।२।।

गोपीनाथ, केमोने शोधिबे मोरे
ना जानि भकति करमे जड-मति,

पड़ेछि संसार-घोरे ।।३ ।।

गोपीनाथ, सकलि तोमार माया
नाहि मम बल, ज्ञान सुनिर्मल,
स्वाधीन नहे ए काया ।।४ ।।

गोपीनाथ, नियत चरणे स्थान
मागे ए पामर, काँदिया काँदिया,
करहे करुणा दान ।।५ ।।

गोपीनाथ, तुमि तो' सकलि पारो
दुर्जने तारिते, तोमार शकति,
के आछे पापीर आर ।।६ ।।

गोपीनाथ, तुमि कृपा-पाराबार
जीवेर कारणे, आसिया प्रपञ्चे,
लीला कोइले सुविस्तार ।।७ ।।

गोपीनाथ, आमि कि दोषे दोषी
आसुर सकल, पाइलो चरण,
विनोदे थाकिलो ब'सि' ।।८ ।।

१. हे गोपीनाथ! कृपा करके मेरा एक निवेदन सुनें। मैं अत्यन्त विषयी, दुर्जन तथा काम के वशीभूत हूँ। मेरे अन्दर किसी प्रकार का कोई गुण नहीं है।

२. मैं तो आपका दास हूँ। मैंने आपके चरणकमलों की शरण ग्रहण की है, क्योंकि मुझे केवल आप पर भरोसा है।

३. हे गोपीनाथ! आप किस प्रकार मुझे सुधारेंगे, क्योंकि मैं भक्ति के विषय में कुछ नहीं जानता तथा मेरी जड़मति सांसारिक कर्मों में रत है, जिसके फलस्वरूप मैं इस घोर संसार में पड़ा हुआ हूँ।

४. हे गोपीनाथ! यह सब आपकी माया है। मुझमें इतना बल और ज्ञान नहीं है कि मैं इसे पार कर सकूँ और न ही मेरा शरीर स्वतन्त्र है अर्थात् यह मेरे पूर्वजन्मों के अधीन है।

५. अतः हे गोपीनाथ! यह पतित रोते-रोते आपसे यही निवेदन करता है कि कृपया इसे अपने चरणकमलों में थोड़ा स्थान प्रदान करें।

६. आप सबकुछ करने में समर्थ हैं। आप तो दुर्जनों का भी उद्धार कर सकते हैं। अतः मुझ पापी का उद्धार करें क्योंकि आपके अतिरिक्त इस पापा का और है ही कौन?

७. हे गोपीनाथ! आपकी कृपा तो असीम है। दयावश जीवों का उद्धार करने के लिए आप इस संसार में आकर अपनी मनोहर लीलाओं का विस्तार करते हैं।

८. हे गोपीनाथ! मैं पापियों में भी पापी हूँ। यहाँ तकि असुरों ने भी आपके चरणकमलों को प्राप्त कर लिया है किन्तु भक्तिविनोद ठाकुर इस संसार में ही पड़ा रह गया है।

गोपीनाथ (भाग २)

गोपीनाथ, घुचाओ संसार-ज्वाला
अविद्या-यातना, आर नहि सहे,
जनम-मरण-माला ।।१ ।।

गोपीनाथ, आमि तो' कामेर दास
विषय-वासना, जागिछे हृदोये,
फाँदिछे करमफाँस ।।२ ।।

गोपीनाथ, कबे वा जागिबो आमि
काम-रूप अरि, दूरे तेयागिबो,
हृदोये स्फुरिबे तुमि ।।३ ।।

गोपीनाथ, आमि तो' तोमार जन
तोमारे छाड़िया, संसार भजिनु,
भुलिया आपन-धन ।।४ ।।

गोपीनाथ, तुमि तो' सकलि जानो
आपनार जाने, दन्ड़िया एखन,
श्रीचरणे देहा स्थान ।।५ ।।

गोपीनाथ, एइ कि विचार तव
विमुख देखिया, छाड़ निज जने,
ना कर करुणा-लव ।।६ ।।

गोपीनाथ, आमि तो' मूरख अति
किसे भाल हय, कभु ना बुछिनु,
ताइ हेन ममगति।।७।।

गोपीनाथ, तुमित पण्डितवर
मूढ़ेर मंगल, तुमि अन्वेशिबे,
ए दासे ना भाव पर।।८।।

१. हे गोपीनाथ! कृपया मुझे प्रताड़ित करती इस संसार-ज्वाला को शान्त करें। अविद्या तथा बारम्बार जन्म-मरण की यातना को अब मैं और अधिक सहन नहीं कर सकता।

२. हे गोपीनाथ! वास्तव में मैं काम का दास हूँ। मेरे हृदय में सांसारिक विषय वासनाओं का उदय हो रहा है, अतः मेरे गले में लगी कर्म की फाँस कसती जा रही है।

३. हे गोपीनाथ! मैं कब जागूँगा और कामरूपी शत्रु को दूर फेंक दूँगा? कब वह दिन आयेगा जब आप मेरे हृदय में प्रकट होंगे?

४. हे गोपीनाथ! मैं तो आपका नित्य भक्त हूँ, किन्तु जैसे-तैसे मैं आपको भूलकर इस संसार में आ पहुँचा हूँ। इस प्रकार अपने परमधन को भूलकर इस संसार में रम गया हूँ।

५. हे गोपीनाथ! आप तो सबकुछ जानते हैं। आप चाहें तो अपने इस सेवक को दण्डित करें और उसे अपने चरणकमलों के निकट निवास प्रदान करें।

६. हे गोपीनाथ! क्या आप इस प्रकार सोचते हैं कि अपने सेवक को स्वयं से विमुख देखकर आपने उसे त्याग दिया है और उसपर लेशमात्र भी करुणा नहीं की?

७. हे गोपीनाथ! निःसन्देह मैं सबसे बड़ा मूर्ख हूँ; मैं कभी नहीं समझ सका कि मेरे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। इसलिए मेरी यह गति है।

८. हे गोपीनाथ! निश्चित् ही आप बुद्धिमान व्यक्तियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इस मूर्ख के मंगल हेतु कोई मार्ग ढूँढ़िये। कृपया अपने इस दास को बाहर वाला न समझिये।

गोपीनाथ (भाग ३)

गोपीनाथ, आमार उपाय नाइ
तुमि कृपा करि', आमारे लइले,
संसारे उद्धार पाइ।।१।।

गोपीनाथ, पड़ेछि मायार फेरे
धन, द्वारा, सुत, घिरेछे आमारे,
कामेते रेखेछे जेरे।।२।।

गोपीनाथ, मन ये पागल मोर
ना माने शासन, सदा अचेतन,
विषये रयेछे घोर।।३।।

गोपीनाथ, हार ये मेनेछि आमि
अनेक यतन, हइल विफल,
एखन भरसा तुमि।।४।।

गोपीनाथ, केमने हइबे गति
प्रबल इंद्रिय, वशीभूत मन,
ना छाड़े विषय रति।।५।।

गोपीनाथ, हृदये वशिया मोर
मन के शर्मिया, लह निज पाने
घुचिबे विपद घोर।।६।।

गोपीनाथ, अनाथ देखिया मोर
तुमि हृषीकेश, हृशीक दमिया,
तार हे संसृति-घोरे।।७।।

गोपीनाथ, गलाय लेगेछे फाँस
कृपा-आसि धरि', बन्धन छेदीया,
विनोदे करह दास।।८।।

१. हे गोपीनाथ! मुझे अपने उद्धार का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। केवल यदि आप मुझपर कृपा करके भगवद्धधाम ले चलेंगे, तभी इस संसार से मेरा उद्धार हो सकेगा।

२. हे गोपीनाथ! मैं भौतिक भ्रम के चक्र में फँस गया हूँ। धन, पत्नी और पुत्रों ने मुझे घेर लिया है और काम ने मुझे जर्जर बना दिया है।

३. हे गोपीनाथ! मेरा मन पूरा पागल हो चला है। यह किसी का शासन नहीं मानता और सदैव अचेतन और घोर विषयों में पड़ा रहता है।

४. हे गोपीनाथ! अब मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ। मेरे सभी प्रयास विफल हो चुके हैं। अब केवल आप ही मेरी एकमात्र आशा हैं।

५. हे गोपीनाथ! मेरी क्या गति होगी? क्योंकि मेरी इन्द्रियाँ भोग-विलास करने के लिए अत्यन्त प्रबल हैं और मेरा मन भी उन्हीं के वश में है एवं विषयों के प्रति आसक्ति त्यागने के लिए तैयार नहीं है।

६. हे गोपीनाथ! कृपया मेरे हृदय-स्थल में विराजित होइये तथा मेरे मन का शमन करके मुझे अपने निकट ले चलिये। इस प्रकार इस जगत् की घोर विपदाओं का अंत हो जायेगा।

७. हे गोपीनाथ! आप तो हृषीकेश हैं, अर्थात् इन्द्रियों के ईश्वर। मुझे इस अनाथ स्थिति में देखकर कृपया मेरी इन्द्रियों का दमन कीजिए और इस अंधकारयुक्त घोर संसार से मेरा उद्धार कीजिए।

८. हे गोपीनाथ! सांसारिकता का फंदा मेरे गले में कसकर बँधा है। अपनी कृपा की कटार से उस बंधन को काट दीजिए और कृपया भक्तिविनोद को फिर से अपना नित्य सेवक बनाइये।

भुलिया तोमारे

भुलिया तोमारे, संसारे आसिया,
पेये नानाविध व्यथा।
तोमार चरणे, आसियाछि आमि,
बलिब दुःखेर कथा।।१।।

जननी-जठरे, छिलाम जखन,
विषम बन्धनपाशे।
एकबार प्रभु, देखा दिया मोरे,
वञ्चिले ए दीन दासे।।२।।

तखन भाविनु, जनम पाइया,
करिब भजन तव।
जनम हइल, पडि मायाजाले,

ना हइल ज्ञान-लव।।३।।

आदरेर छेले, स्वजनेर कोले,
हासिया काटानु काल।
जनक-जननी, स्नेहेते भुलिया,
संसार लागिल भाल।।४।।

क्रमे दिने दिने, बालक हइया,
खेलिनु बालक-सह।
आर किछु दिने, ज्ञान उपजिल,
पाठ पडि' अहर्-अहः।।५।।

विद्यार गौरवे, भ्रमि देशे देशे,
धन उपार्जन करि।
स्वजन-पालन, करि एकमने,
भुलिनु तोमारे, हरि।।६।।

वार्द्धक्ये एखन, भकतिविनोद,
काँदिया कातर अति।
ना भजिया तोरे, दिन वृथा गेल,
एखन कि हबे गति।।७।।

१. हे भगवन्! आपको भूलकर मैं इस भौतिक संसार में आया हूँ, जहाँ मैं नाना प्रकार के दुःख भोग रहा हूँ। अब आपके चरणों में आकर मैं अपने दुःखों की कहानी आपके समक्ष रखता हूँ।

२. जब मैं अपनी माता के गर्भ में कैदी था तो उस समय हे भगवन् आपने मुझे अपना दर्शन दिया था। कुछ क्षणों के दर्शन के पश्चात् आपने इस दास को त्याग दिया।

३. उस समय मैंने निश्चय किया, ''जन्म लेने के बाद मैं आपका भजन करूँगा।'' किन्तु हाय! जन्म लेने के बाद मैं इस संसार के मायाजाल में गिर गया और इस प्रकार अब मेरे पास सच्चे ज्ञान की एक बूँद भी नहीं है।

४. अपने सम्बन्धियों की गोद में हँसते-खेलते मेरा समय बीत गया। माता-पिता के

स्नेह के कारण मैं आपको और अधिक भूलता गया और मुझे यह संसार अच्छा लगने लगा।

५. समय बीतने पर मैं थोड़ा बड़ा हुआ और अपने मित्रों के साथ खेलने लगा। और कुछ समय बीतने पर मुझमें ज्ञान जन्म लेने लगा और इसलिए मैं दिन-रात अपनी पुस्तकों के अध्ययन में डूब गया।

६. अर्जित विद्या के घमण्ड में मैं देश-विदेश भ्रमण करता हुआ धन अर्जित करने लगा। इस प्रकार एकाग्र मन से अपने परिवार के भरण-पोषण में मग्न होकर हे हरि! मैं आपको भूल गया।

७. अब वृद्धावस्था में यह भक्तिविनोद कातर भाव से रो रहा है। मैं आपका भजन नहीं कर पाया और वृथा ही अपना समय गँवा दिया। हे भगवन्! अब मेरी क्या गति होगी?

आमार जीवन

आमार जीवन, सदा पापे रत,
नाहिक पुण्येर लेश।
परेरे उद्वेग, दियाछि ये कत,
दियाछि जीवेरे क्लेश।।१।।

निज सुख लागि', पापे नाहि डरि,
दयाहीन स्वार्थपर।
पर-सुखे दुःखी, सदा मिथ्याभाषी,
पर-दुःख सुखकर।।२।।

अशेष कामना, हृदि माझे मोर,
क्रोधी दम्भपरायण।
मदमत्त सदा, विषये मोहित,
हिंसा-गर्व विभूषण।।३।।

निद्रालस्य-हत, सुकार्ये विरत,
अकार्ये उद्योगी आमि।
प्रतिष्ठा लागिया, शाठ्य आचरण,

लोभहत सदा कामी।।४।।

ए हेन दुर्जन, सज्जन-वर्जित,
अपराधी निरन्तर।
शुभकार्य शून्य, सदानर्थ मन,
नाना दुःखे जर्जर।।५।।

वार्द्धक्ये एखन, उपायविहीन,
ता'ते दीन अकिञ्चन।
भकतिविनोद, प्रभुर चरणे,
कर दुःख निवेदन।।६।।

१. जीवनभर मैं पापकार्यों में ही संलग्न रहा हूँ और मेरे जीवन में पुण्य का लेशमात्र भी नहीं है। मैंने सदैव अन्यों को कष्ट देकर उद्विग्न ही किया है।

२. अपने निज सुख के लिए मैं किसी भी पाप से नहीं हिचकिचाया। दयाहीन होकर मैंने सदैव अपने स्वार्थ के लिए कार्य किये। सदैव झूठ बोलते हुए मैं दूसरों को प्रसन्न देखकर दुःखी होता, तथा दूसरों को दुःखी देखकर प्रसन्न होता।

३. मेरा हृदय अनगिनत भौतिक कामनाओं से भरा है। मैं क्रोधी, दम्भी, घमण्ड में चूर तथा इस संसार के विषयों द्वारा विमोहित रहता हूँ। मैं हिंसा और अहंकार को अपने विशेष आभूषणों के रूप में पहनता हूँ।

४. निद्रा और आलस्य से भरा मैं पुण्यकर्मों से परे हूँ और सदैव दुष्टताभरे कार्य करने के लिए उत्साही रहता हूँ। सांसारी प्रतिष्ठा और ख्याति के लिए मैं कपट व्यवहार करने से भी नहीं चूकता। मैं स्वयं अपने लोभ और काम का शिकार बना बैठा हूँ।

५. मुझ जैसा दुर्जन व्यक्ति सज्जनों द्वारा त्यक्त हो चुका है और सदैव अपराधी है। किसी भी शुभकार्य से हीन, अनर्थ करने के लिए उत्कण्ठित वह विभिन्न कष्टों एवं पीड़ाओं से जर्जर हो गया है।

६. अब इस बुढ़ापे में कोई उपाय न देखते हुए यह अकिंचन भक्तिविनोद भगवान् के समक्ष अपने दुःख की कहानी प्रस्तुत करता है।

मानस, देह, गेह

मानस, देह, गेह, जो किछु मोर।
अर्पिलुँ तुया पदे नन्दकिशोर।।१ ।।

संपदे-विपदे, जीवने-मरणे।
दाय मम गेला, तुवा ओ-पद वरणे।।२।।

मारबि राखबि जो इच्छा तोहार।
नित्यदास-प्रति तुया अधिकार।।३।।

जन्माओबि मोए इच्छा यदि तोर।
भक्तगृहे जनि जन्म हउ मोर।।४।।

कीट जन्म हउ यथा तुया दास।
बहिर्मुख ब्रह्मा जन्मे नाहि आश।।५।।

भुक्ति-मुक्तिस्पृहा-विहीन ये-भक्त।
लभइते टाको संग अनुरक्त।।६।।

जनक-जननी-दयित-तनय।
प्रभु-गुरु-पति-तुहुँ सर्वमय।।७।।

भकतिविनोद कहे सुन कान!।
राधानाथ! तुहुँ आमार पराण।।८।।

१. हे नन्दकिशोर श्रीकृष्ण! मेरा मन, शरीर और परिवार, तथा अन्य जो कुछ भी मेरा है मैं उसे आपके चरणकमलों पर समर्पित करता हूँ।

२. सम्पदाओं में अथवा विपदाओं में, जीवन में अथवा मृत्यु में, आपके चरणकमलों को अपना एकमात्र आश्रय चुनने पर सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गईं।

३. चाहे मुझे मारिए अथवा मेरी रक्षा कीजिए, इस नित्य दास पर आपका पूरा अधिकार है।

४. यदि आपकी इच्छा है कि मैं पुनः इस संसार में जन्म लूँ तो मेरा जन्म किसी भक्त के घर पर ही हो।

५. चाहे मेरा जन्म एक कीड़े के रूप में हो, किन्तु मैं आपका भक्त रहूँ। आपसे

विमुख होकर मैं ब्रह्मा के रूप में भी जन्म नहीं लेना चाहता।

६. मैं उस भक्त के संग के लिए लालायित हूँ जो सभी प्रकार के भोगों, मुक्ति अथवा अन्य इच्छाओं से विमुक्त है।

७. पिता, माता, प्रेमी, पुत्र, स्वामी, गुरु, पति - मेरे लिए आप ही सबकुछ हैं।

८. ठाकुर भक्तिविनोद कहते हैं, ''हे कान्हा! कृपया मेरी याचना सुनो! हे राधानाथ, आप ही मेरे प्राणधन हैं!''

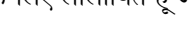

एखन बुझिनू प्रभू!

एखन बुझिनू प्रभू! तोमार चरण ।
अशोकाभयामृत-पूर्ण सर्व-खण।।१।।

सकल छाडिया तुआ चरणकमले ।
पडियाचि आमि नाथ! तव पद-तले।।२।।

तव पाद-पद्म नाथ! रखिबे आमारे।
आर राखा-कर्ता नाहि ए भव-संसारे।।३।।

आमि तव नित्य-दास जानिनु ए-बार।
आमार पालन-भार एखन तोमार।।४।।

बड़ दुःख पाइयाचि स्वतंत्र जीवने।
दुःख दूरे गेलो ओ पद-वरणे।।५।।

जे पद लागिया रमा तपस्या करिला।
जे-पद पाइया शिव शिवत्व लभिला।।६।।

जे-पद लभिया ब्रह्मा कृतार्थ होइला।
जे-पद नारद मुनि हृदये धरिला।।७।।

सेइ से अभय पद शिरेते धरिया।
परम-आनन्दे नाचि पद-गुण गाइया।।८।।

संसार-विपद होइते अवश्य उद्धार।
भकतिविनोद, ओ-पद करिबे तोमार।।९।।

१. हे प्रभु! मैं अब समझ गया हूँ कि आपके चरण पूर्ण अमृत से भरे हैं तथा समस्त शोक और भय को नष्ट करने वाले हैं।

२. अपना सर्वस्व उन चरणकमलों पर समर्पित करके मैं आपके पादपद्मों की शरण ग्रहण करता हूँ।

३. हे नाथ! आपके चरणकमल निश्चित् ही मेरी रक्षा करेंगे। इस जन्म-मृत्यु के संसार में उनके अतिरिक्त मेरा अन्य कोई संरक्षक नहीं है।

४. अन्ततः मैं जान गया कि मैं आपका नित्य दास हूँ। अब मेरे पालन का पूरा भार आपके ऊपर है।

५. आपसे स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करके मैंने दुःख के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं पाया है। किन्तु अब आपके चरणकमलों को स्वीकार करने से मेरे सभी दुःख दूर चले गये हैं।

६. आपके चरणकमलों पर स्थान प्राप्त करने के लिए लक्ष्मीजी ने कठोर तपस्या की। आपके चरणकमलों को प्राप्त करने पर ही शिवजी को अपना शिवत्व प्राप्त हुआ।

७. आपके चरणकमल प्राप्त होने पर ही ब्रह्माजी की इच्छायें पूरी हुईं। इन्हीं चरणकमलों को श्रीनारदमुनि सदैव अपने हृदय में धारण करते हैं।

८. अभय प्रदान करने वाले उन्हीं चरणकमलों को मैं अपने सिर पर धारण करता हूँ और परम आनन्द में नाचते हुए उनकी महिमायें गाता हूँ।

९. आपके चरणकमल निश्चित् ही भक्तिविनोद का इस संसार की विपदाओं से उद्धार करेंगे।

तुमि सर्वेश्वरेश्वर

तुमि सर्वेश्वरेश्वर, ब्रजेन्द्रकुमार।
तोमार इच्छाय विश्वे सृजन संहार।।१।।
तव इच्छामत ब्रह्मा करेन सृजन।
तव इच्छामत विष्णु करेन पालन।।२।।
तव इच्छामते शिव करेन संहार।
तव इच्छामते माया सृजे कारागार।।३।।
तव इच्छामते जीवेर जनम-मरण।

समृद्धि-नि:पात-दु:ख-सुख-संघटन।।४।।

मिछे मायाबद्ध-जीव आशापाशे फिरे।
तव इच्छा बिना किछु करिते ना पारे।।५।।

तुमि त' रक्षक आर पालक आमार।
तोमार चरण बिना आशा नाहि आर।।६।।

निज बल चेष्टा-प्रति भरसा छाड़िया।
तोमार इच्छाय आछि निर्भर करिया।।७।।

भकतिविनोद अति दीन अकिञ्चन।
तोमार इच्छाय ता'र जीवन-मरण।।८।।

१. हे व्रजेन्द्रकुमार कृष्ण! आप सभी ईश्वरों के ईश्वर हैं। आपकी इच्छामात्र से ही ब्रह्माण्ड का सृजन एवं संहार होता है।

२. आपकी इच्छामात्र से ब्रह्माजी सृजन करते हैं और आपकी इच्छामात्र से ही भगवान् विष्णु पालन करते हैं।

३. आपकी इच्छामात्र से शिवजी संहार करते हैं और आपकी इच्छामात्र से ही माया संसार रूपी इस कारागार का निर्माण करती है।

४. आपकी इच्छा से ही जीवात्मा जन्म-मरण का अनुभव करते हैं और आपकी इच्छा से ही वे समृद्धि, विनाश, सुख अथवा दु:ख से गुजरते हैं।

५. क्षुद्र जीव अकारण ही सांसारिक आशाओं में बँधकर संघर्ष करता है। आपकी इच्छा के बिना वह कुछ नहीं कर पाता।

६. आप मेरे एकमात्र पालनहार और संरक्षक हैं। आपके चरणकमलों के अतिरिक्त मेरे लिए अन्य कोई आशा नहीं है।

७. अपने निजि बल और प्रयासों पर भरोसा छोड़कर मैं अब पूर्णत: आपकी इच्छा पर निर्भर करता हूँ।

८. भक्तिविनोद अत्यन्त दीन है और उसका घमण्ड चूर-चूर हो गया है। उसका जन्म और मरण अब आपकी इच्छानुसार ही है।

शुद्ध भकत

शुद्ध भकत-चरण-रेणु,
भजन अनुकूल।
भकत-सेवा, परम-सिद्धि
प्रेमलतिकार मूल।।१।।

माधव-तिथि, भक्ति-जननी,
यतने पालन करि।
कृष्णवसति, वसति बलि',
परम आदरे बरि।।२।।

गौर आमार, ये-सब स्थाने,
करल भ्रमण रंगे।
से-सब स्थान, हेरिब आमि,
प्रणयि-भकत संगे।।३।।

मृदंग-वाद्य, शुनिते मन,
अवसर सदा याचे।
गौर-विहित, कीर्तन शुनि,
आनन्दे हृदय नाचे।।४।।

युगल-मूर्ति, देखिया मोर,
परम आनन्द हय।
प्रसाद-सेवा, करिते हय,
सकल प्रपञ्च जय।।५।।

ये दिन गृहे, भजन देखि,
गृहेते गोलोक भाय।
चरण-सिंधु, देखिया गंगा,
सुख ना सीमा पाय।।६।।

तुलसी देखि, जुड़ाय प्राण,
माधव तोषणी जानि।

गौर-प्रिय, शाक-सेवने,
जीवन सार्थक मानि।।७।।

भक्तिविनोद, कृष्णभजने,
अनुकूल पाय याहा।
प्रति दिवसे, परम सुखे,
स्वीकार करये ताहा।।८।।

१. शुद्ध भक्तों की चरणधूलि भक्ति के अनुकूल है और वैष्णवों की सेवा परम सिद्धि तथा दिव्य प्रेम रूपी कोमल लता की मूल है।

२. मैं ध्यानपूर्वक भगवान् माधव के लीला-दिवसों को मनाता हूँ क्योंकि वे भक्ति की जननी हैं। अपने निवास के लिए मैं अत्यन्त आदर के साथ भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य धाम का चुनाव करता हूँ।

३. जिन-जिन स्थानों की यात्रा मेरे श्रीगौरसुन्दर भगवान् ने की है, प्रेमी भक्तों के संग में मैं भी उन स्थानों का भ्रमण करूँगा।

४. मेरा मन सदैव मृदंग की ध्वनि सुनने के लिए लालायित रहता है। भगवान् गौरचन्द्र द्वारा स्थापित कीर्तनों को सुनकर मेरा हृदय आनन्द में भावविभोर होकर नृत्य करने लगता है।

५. श्री श्रीराधा-कृष्ण के विग्रहों को देखने से मैं परम आनन्द का अनुभव करता हूँ। भगवान् का प्रसाद स्वीकार करके मैं सम्पूर्ण मोह-माया पर विजय पा लेता हूँ।

६. मैं जब भी अपने घर में भगवान् हरि की पूजा-सेवा होते देखता हूँ, मुझे अपना घर गोलोक वृन्दावन प्रतीत होता है। जब मैं भगवान् के चरणकमलों से प्रवाहित होने वाली अमृतमयी गंगा को देखता हूँ तो मेरे सुख की कोई सीमा नहीं रहती।

७. पवित्र तुलसी का दर्शन मात्र मेरे प्राणों को सुख देता है क्योंकि मैं जानता हूँ तुलसी भगवान् माधव को प्रसन्न करती हैं। श्रीगौरांग महाप्रभु के प्रिय शाक व्यंजन का आस्वादन करके मुझे अपना जीवन सार्थक लगने लगता है।

८. भक्तिविनोद को श्रीकृष्ण की सेवा-भजन में जो भी अनुकूल प्राप्त होता है वे अत्यन्त सुख के साथ प्रतिदिन उसे स्वीकार करते हैं।

गुरुदेव!

गुरुदेव!
कृपाबिन्दु दिया, करो एई दासे,
तृणापेक्षा अति हीन।
सकल सहने, बल दिया कर,
निज माने स्पृहाहीन।।१।।

सकले सम्मान, करिते शकति,
देह नाथ! यथायथ।
तबे तो गाइबो, हरिनाम सुखे,
अपराध हबे हत।।२।।

कबे हेन कृपा, लभिया ए जन,
कृतार्थ हइबे नाथ।
शक्ति-बुद्धि हीन, आमि अति दीन,
कर मोरे आत्मसात।।३।।

योग्यता विचारे, किछु नाहि पाई,
तोमार करुणा सार।
करुणा ना हइले, काँदिया काँदिया,
प्राण ना राखिबो आर।।४।।

१. हे गुरुदेव! अपनी कृपा की एक बूँद देकर अपने इस दास को मार्ग में पड़े तृण से भी अधिक नम्र बना दीजिए। सभी कष्टों को सहन करने की शक्ति देते हुए मुझे निजि सम्मान की इच्छा से मुक्त कर दीजिए।

२. हे नाथ! मुझे ऐसी शक्ति दीजिए जिससे मैं सभी जीवों का यथोचित सम्मान कर सकूँ। केवल तभी मैं आनन्दपूर्वक भगवान् हरि के नामों का कीर्तन कर पाऊँगा और मेरे

सभी अपराध नष्ट हो जायेंगे।

३. हे नाथ! कब मैं आपकी कृपा प्राप्त करके कृतार्थ होऊँगा? शक्ति और बुद्धि से हीन मैं अत्यन्त नीच और पतित हूँ। कृपया मुझे अपना लीजिए।

४. जब मैं अपनी योग्यताओं पर विचार करता हूँ तो मुझे कुछ भी सार्थक दिखाई नहीं देता। इसलिए आपकी कृपा ही मेरे जीवन का एकमात्र सार है। यदि आप मुझपर कृपालु नहीं होंगे तो मैं निरन्तर रोते हुए अपने प्राणों को धारण नहीं कर पाऊँगा।

निताइ-पद-कमल

निताइ-पद-कमल, कोटिचन्द्र-सुशीतल,
ये छायाय जगत जुड़ाय।
हेन निताइ बिने भाइ, राधाकृष्ण पाइते नाइ,
दृढ़ करि धर निताइर पाय।।१।।

से संबंध नाहि जार, वृथा जन्म गेल ता'र,
सेइ पशु बड दुराचार।
निताइ ना बोलिलो मुखे, मजिल संसारसुखे,
विद्याकुले कि करिबे तार।।२।।

अहंकारे मत्त होइया, निताइ-पद पासरिया,
असत्येरे सत्य करि' मानि।
निताइयेर करुणा हबे, व्रजे राधाकृष्ण पाबे,
धर निताइयेर चरण दु:खानि।।३।।

निताइयेर चरण सत्य, ताँहार सेवक नित्य,
निताइ-पद सदा कर आश।
नरोत्तम बड़ दु:खी, निताइ मोरे कर सुखी,
राख रांगा चरणेर पाश।।४।।

१. श्रीनित्यानन्द प्रभु के चरणकमल करोड़ों चन्द्रमाओं के समान शीतलता प्रदान करते हैं। यदि पूरे विश्व में सच्ची शन्ति लानी है तो हमें श्रीनित्यानन्द प्रभु का आश्रय लेना होगा। जबतक व्यक्ति उनके चरणकमलों की छाया का आश्रय नहीं लेता तबतक वह श्री

श्रीराधा-कृष्ण तक नहीं पहुँच सकता। इसलिए हमें दृढ़ता से श्रीनित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों को पकड़ लेना चाहिए।

२. यदि किसी ने श्रीनित्यानन्द प्रभु के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित नहीं किया है, उसने अपना मूल्यवान मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया है। ऐसा मनुष्य दुराचारी पशु के समान ही है। चूँकि उसने कभी नित्यानन्द प्रभु के पवित्र नाम का उच्चारण नहीं किया है और सदैव इन्द्रियभोग में आसक्त रहता है, उसकी विद्या और उच्चकुल किस प्रकार उसकी सहायता कर पायेंगे?

३. मिथ्या अहंकार स्वयं को शरीर मानकर मत्त होने से व्यक्ति सोचता है, ''अरे, ये नित्यानन्द कौन है? ये मेरे लिए क्या करेंगे? मैं इनकी परवाह नहीं करता।'' इसका अर्थ है कि वह झूठ को सच मान रहा है। यदि आप वास्तव में राधा-कृष्ण का संग चाहते हैं तो पहले आपको श्रीनित्यानन्द प्रभु की कृपा प्राप्त करनी होगी। जब वे आप पर दयालु होंगे तभी आप राधा-कृष्ण के पास जा सकेंगे। इसलिए सभी दुःखों को नष्ट करने वाले श्रीनित्यानन्द प्रभु के चरणों को अपने हृदय में धारण कीजिए।

४. श्रीनित्यानन्द प्रभु के चरणकमल ही एकमात्र सत्य वस्तु है और उनके सेवक की शाश्वत हैं। सदैव श्रीनित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों को प्राप्त करने की आस रखें। नरोत्तम दास अत्यन्त दुःखी है, इसलिए नित्यानन्द प्रभु कृपया मुझे सुखी बना दीजिए। हे भगवन्, कृपया मुझे सदैव अपने चरणकमलों के पास रखें।

दशावतार स्तोत्र

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्
विहितवहित्र-चरित्रमखेदम्।
केशव धृत-मीनशरीर जय जगदीश हरे।।१।।

क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे
धरणिधरणकिण-चक्रगरिष्ठे।
केशव धृत-कूर्मशरीर जय जगदीश हरे।।२।।

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना

शशिनि कलमकलेव निमग्ना।
केशव धृत-शूकररूप जय जगदीश हरे।।३।।

तव करकमलवरे नखम्-अद्भुतशृङ्गम्
दलितहिरण्यकशिपु-तनुभृङ्गम्।
केशव धृत-नरहरिरूप जय जगदीश हरे।।४।।

छलयसि विक्रमणे बलिम्-अद्भुतवामन
पदनखनीर-जनितजनपावन।
केशव धृत-वामनरूप जय जगदीश हरे।।५।।

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्।
केशव धृत-भृगुपतिरूप जय जगदीश हरे।।६।।

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुख-मौलिबलिं रमणीयम्।
केशव धृत-रामशरीर जय जगदीश हरे।।७।।

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहतिभीति-मिलित-यमुनाभम्।
केशव धृत-हलधररूप जय जगदीश हरे।।८।।

निन्दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजातं
सदयहृदय! दर्शित-पशुघातम्।
केशव धृत-बुद्धशरीर जय जगदीश हरे।।९।।

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम्।
केशव धृत-कल्किशरीर जय जगदीश हरे।।१०।।

श्रीजयदविकवपिरदमुदितमुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम्।
केशव धृत दशविध रूप जय जगदीश हरि।।११।।
वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते।

दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते।
म्लेच्छान् मूर्छयते दशकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

१. हे केशव! हे जगदीश! प्रलय के विशाल समुद्र में वेद नष्ट होने जा रहे थे और उनकी रक्षा करने के लिए आप एक विशाल मछली बनकर आये। मछली का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

२. हे केशव! हे जगदीश! दिव्य कछुवे के रूप में आपने अपनी विशाल पीठ पर मंदार पर्वत को धारण किया और क्षीरसागर के मंथन में देव-दानवों की सहायता की। विशाल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण करने से आपकी पीठ पर एक चक्र का चिह्न बन गया, जो अत्यन्त सुन्दर है। कछुवे का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

३. हे केशव! हे जगदीश! पृथ्वी गर्भोदक सागर में जा गिरी थी और आपने अपने नथुनों के ऊपर उठाकर उसे उसके मूल स्थान पर स्थापित किया। शूकर रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

४. हे केशव! हे जगदीश! जिस प्रकार कोई सरलता से अपनी अँगुलियों के बीच एक भौंरे को मसल देता है उसी प्रकार आपने भौंरे जैसे असुर हिरण्यकशिपु को अपने हस्तकमलों के सुन्दर तीक्ष्ण नाखूनों से विदीर्ण कर दिया। आधे नर एवं आधे सिंह का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

५. हे केशव! हे जगदीश! हे अद्‌भुत वामन (बौना)! अपने तीन विशाल पगों से आपने महाराज बलि को छला और अपने चरणकमलों के नाखून से बह निकले गंगाजल से आप सम्पूर्ण जगत् के लोगों को पवित्र करते हैं। एक बौने का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

६. हे केशव! हे जगदीश! कुरुक्षेत्र में आपने आसुरी राजाओं का वध करके पृथ्वी को उनके रक्त से स्नान करवाया। आपके द्वारा विश्वभर के पाप धुल गये और आपने जीवों को भौतिक जगत् के ताप से राहत दी। हे भृगुपति (परशुराम) का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

७. हे केशव! हे जगदीश! लंका के युद्ध में आपने दस सिर वाले असुर रावण का वध किया और उसके सिरों को इंद्र सहित दस दिशाओं के स्वामियों को भेंट दिया। इस

असुर से पीड़ित वे सभी लम्बे काल से इस कार्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रीरामचन्द्र का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

८. हे केशव! हे जगदीश! अपने श्वेत रंग के शरीर पर आप नीले बादलों जैसे वस्त्र पहनते हैं। ये वस्त्र उस यमुना नदी के गहरे रंग के समान हैं जो आपके हल के प्रहार से भयभीत रहती है। हे बलराम, हे हल धारण करने वाले हरि! आपकी जय हो!

९. हे केशव! हे जगदीश! हे करुणाभरे हृदय वाले बुद्ध, आपने वैदिक यज्ञों के अनुसार होने वाली निष्पाप पशुओं की हत्या को रोका। बुद्ध का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

१०. हे केशव! हे जगदीश! कलियुग के अंत में आप एक धूमकेतु के समान प्रकट होते हैं और अपने हाथ में भयंकर तलवार द्वारा दुष्ट जंगली मनुष्य का विनाश करते हैं। कल्कि का रूप धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो!

११. हे केशव! हे जगदीश! इन दस अवतारों को धारण करने वाले हे हरि! आपकी जय हो! हे पाठकों कृपया कवि जयदेव के इस मधुर गीत को सुनिए क्योंकि यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला है और अंधकारमय जगत् की सर्वोत्तम वस्तु है।

१२. हे श्रीकृष्ण, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप इन दस रूपों में प्रकट हुए। मत्स्य रूप में आपने वेदों की रक्षा, कूर्म रूप में अपनी पीठ पर मंदार पर्वत उठाया, वराह रूप में अपने नथुनों पर पृथ्वी को धारण किया, नरसिंह रूप में असुर हिरण्यकशिपु की छाती को विदीर्ण किया, वामन रूप में महाराज बलि को छला, परशुराम रूप में दुष्ट क्षत्रियों को दण्डित किया, रामचन्द्र रूप में पुलस्त्य पुत्र रावण का वध किया, बलराम रूप में आप हल धारण करने वाले हैं, बुद्ध रूप में सभी पर करुणा दर्शायी और कलि रूप में म्लेच्छों का वध किया।

गौड़ीय वैष्णव गीत

(भाग तीन)

धन मोर नित्यानंद १०१
राधा-कृष्ण प्राण मोर १०१
हरि हे दयाल १०२
वन्दे कृष्ण नन्दकुमार.....१०३
गौराङ्ग तुमि मोर.....१०४
नारद मुनि, बजाय वीणा.....१०५
विद्यार विलासे.....१०७
निताई गुणमणि.....१०८
दयाल निताई चैतन्य.....१०९
कलि-कुक्कुर-कदन..... ११०
यदि गौर ना होइतो.....११२
कबे गौर-वने.....११३
आमि जमुना पुलिने.....११४
एमन दुर्मति.....११५
सर्वस्व तोमार.....११६
राधाकुण्डतट.....११७
कबे हबे बोलो.....११९
गौरांगेर दू'टी पद.....१२१
गोरा पहु १२२

f

धन मोर नित्यानंद

धन मोर नित्यानंद, पति मोर गौरचंद्र,
प्राण मोर युगल-किशोर।
अद्वैत आचार्य बल, गदाधर मोर कुल,
नरहरि विलास-एइ मोर।।१।।

वैष्णवेर पद-धूलि, ताहे मोर स्नान केलि,
तर्पण मोर वैष्णवेर नाम ।
विचार करिया मने, भक्ति-रस आस्वादने,
मध्यस्थ श्रीभागवत पुराण।।२।।

वैष्णवेर उच्छिष्ट, ताहे मोर मन निष्ठा,
वैष्णवेर नामेते उल्हास ।
वृंदावने चबुतारा, ताहे मोर मन घेरा,
कहे दीन नरोत्तम दास।।३।।

१. श्रीनित्यानन्द प्रभु मेरा एकमात्र धन है। श्रीगौरचन्द्र मेरे स्वामी हैं। युगलकिशोर श्रीराधा-कृष्ण मेरे जीवन और प्राण हैं। श्रीअद्वैताचार्य मेरा बल हैं। श्रीगदाधर पण्डित मेरा कुल हैं और श्रील नरहरि सरकार मेरा एकमात्र आनन्द हैं।

२. वैष्णवों की पदधूलि में स्नान करना मेरा एकमात्र सुख है और वैष्णवों के नाम का उच्चारण मेरा तर्पण है। अपने मन में विचार करके मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि भक्तिरस का आस्वादन करने के लिए श्रीमद्भागवतम् सर्वोत्तम माध्यम है।

३. मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरा मन वैष्णवों का उच्छिष्ट स्वीकारने में एकनिष्ठ रहे और वैष्णवों का नाम सुनने मात्र से मैं उल्लसित हो जाऊँ। श्रील नरोत्तमदास ठाकुर कहते हैं, ''वृन्दावन के चबुतरे ने मेरा हर लिया है।''

राधा-कृष्ण प्राण मोर

राधा-कृष्ण प्राण मोर युगल-किशोर।
जीवने मरणे गति आर नाहि मोर।।१।।

कालिन्दीर कूले केलि-कदम्बेर वन।
रतन-वेदीर ऊपर बोसाब दु'जन।।२।।

श्यामगौरी-अंगे दिब चन्दनेर गन्ध।
चामर ढुलाबो कबे हेरिबो मुखचन्द्र।।३।।

गाथिया मालतीर माला दिबो दोहार गले।
अधरे तुलिया दिबो कर्पूर-ताम्बूले।।४।।

ललिता विशाखा आदि यत सखीवृन्द।
अज्ञाय करिबो सेवा चरणारविन्द।।५।।

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष करे नरोत्तमदास।।६।।

१. युगलकिशोर श्री श्रीराधाकृष्ण ही मेरे एकमात्र प्राण हैं। जीवन अथवा मरण, उनके अतिरिक्त मेरी अन्य कोई गति नहीं है।

२. कालिंदी (यमुना) के तटपर कदम्ब वृक्षों के वन में मैं युगलजोड़ी को रत्नों की वेदी पर विराजमान करूँगा।

३. मैं उनके श्यामल तथा गौर अंगों पर चन्दन का लेप करूँगा और उनके मुखचन्द्र को निहारते हुए चामर ढुलाऊँगा।

४. मालती फूलों की माला गूँथकर मैं दोनों के गले में डालूँगा और कर्पूर से सुगन्धित ताम्पूल उनके मुखकमल में अर्पित करूँगा।

५. ललिता और विशाखा के नेतृत्वगत सभी सखियों की आज्ञा से मैं श्री श्रीराधाकृष्ण के चरणकमलों की सेवा करूँगा।

६. श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के दासों का अनुदास यह नरोत्तमदास राधाकृष्ण की सेवा की अभिलाषा करता है।

हरि हे दयाल

हरि हे दयाल मोर जय राधानाथ।
बारो बारो एइ-बारो लह निज-साथ।।१।।

बहु योनी भ्रमि' नाथ! लोइनु शरण।
निज-गुणे कृपा कर' अधम-तारण।।२।।

जगत-कारण तुमि जगत-जीवन।
तोमा छाड़ा नाहि हे राधा-रमण।।३।।

भुवन-मंगल तुमि भुवनेर पति।
तुमि उपेक्षिले नाथ, कि होइबे गति।।४।।

भाविया देखिनु एइ जगत-माझारे।
तोमा बिना केह नाहि ए दासे उद्धारे।।५।।

१. हे हरि! हे दयामय स्वामी! हे श्रीराधा के नाथ, आपकी जय हो! बार-बार मैंने आपसे निवेदन किया है, और अब फिर से याचना करता हूँ कि कृपया मुझे अपना स्वीकार लीजिए।

२. हे भगवन्! अनेकानेक योनियों में भ्रमण करने के पश्चात् अब मैं आपकी शरण में आया हूँ। कृपया अपने स्वाभाविक गुण दर्शाते हुए मुझपर कृपा कीजिए और इस अधम का उद्धार कीजिए।

३. आप सम्पूर्ण सृष्टि के कारणस्वरूप हैं और उसके जीवन हैं। श्रीराधा को आनन्द प्रदान करने वाले हे भगवन्! आपके अतिरिक्त मेरा अन्य कोई आश्रय नहीं है।

४. आप सम्पूर्ण त्रिभुवन को मंगलमय बनाते हैं और उसके स्वामी भी हैं। हे भगवन्! यदि आप मेरी उपेक्षा कर देंगे तो मेरी गति क्या होगी?

५. इस संसार में अपनी दुर्दशा को देखकर मैं समझ गया हूँ कि इस दास के उद्धार के लिए आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।

वन्दे कृष्ण नन्दकुमार

गोविन्द हरि गोपाल हरि
गोविन्द हरि गोपाल हरि
जय जय देव हरि
जय जय देव हरि

वन्दे कृष्ण नन्दकुमार
नन्दकुमार मदनगोपाल
मदन गोपाल मोहन रूप
मोहन रूप नन्दकुमार।।१।।

जय जय देव हरि
जय जय देव हरि

जय प्रभु दीन दयाल हरि
गोविन्द हरि गोपाल हरि
जय शचीनन्दन गौरहरि।।२।।

जय राम हरि जय कृष्ण हरि
जय जय शचीनन्दन गौरहरि

गोविन्द हरि और गोपाल हरि की जय हो! परम भगवान् श्रीहरि की जय हो!

मैं नन्द महाराज के सर्वाकर्षक पुत्र श्रीकृष्ण की वंदना करता हूँ। सभी गोपियों के लिए वे कामदेव के समान हैं और उनका रूप अत्यन्त मनोहारी है।

सभी पतित जीवों पर दयालु भगवान् की मैं वंदना करता हूँ।

परम भगवान् श्रीहरि की जय हो! जय हो! गायों को आनन्द देने वाले श्रीगोविन्द की जय हो! गायों का पालन करने वाले श्रीगोपाल की जय हो!

श्रीराम हरि और श्रीकृष्ण हरि की जय हो! शचीमाता के पुत्र श्रीगौरहरि की जय हो!

गौराङ्ग तुमि मोर

गौराङ्ग तुमि मोरे दया ना छाडिहो
आपन करिया रांगा चरणे राखिहो।।१।।

तोमार चरण लागि सब तेयागिलु
शीतल चरण पाया शरण लोइलु।।२।।

एइ कुले ओ कुले मुञी दिलु तिलाञ्जलि
राखिहो चरणे मोरे आपनार बोली।।३।।

वासुदेव घोषे बोले चरणे धरिया
कृपा करी राखो मोरे पद-छाया दिया।।४।।

१. हे श्रीगौरांग महाप्रभु! कृपया मुझपर अपनी दया प्रकट करना न छोड़ना! मुझे अपनी सम्पत्ति बनाकर कृपया मुझे अपने लालिमायुक्त चरणकमलों के पास ही रखिये।

२. आपके चरणकमलों को प्राप्त करने की आशा में मैंने अपना सर्वस्व त्याग दिया। अब मैंने पूर्ण रूप से शीतलता प्रदान करने वाले आपके चरणकमलों का आश्रय ले लिया है।

३. चाहे मैं इस कुल से सम्बन्धित हूँ या उस कुल से, मैंने सभी का परित्याग कर दिया है। मैं आपसे याचना करता हूँ कि कृपया मुझे अपना कहते हुए अपने चरणकमलों के पास ही रखिये।

४. वासुदेव घोष कहते हैं, ''चूँकि मैंने जोर से आपके चरणकमलों को धारण किया हुआ है, कृपया मुझे सदैव अपने चरणों की शीतल छाया में ही रखिये।

नारद मुनि, बजाय वीणा

नारद मुनि, बजाय वीणा, राधिकारमण-नामे।
नाम अमनि, उदित हय, भकत-गीत-सामे।।१।।

अमिय-धारा, वरिषे घन, श्रवण-युगले गिया।
भकतजन, सघने नाचे, भरिया आपन हिया।।२।।

माधुरी-पुर, आसव पशि, माताय जगत-जने।
केह वा काँदे, केह वा नाचे, केह माते मने मने।।३।।

पञ्चवदन, नारदे धरि, प्रेमेर सघन रोल।
कमलासन, नाचिया बले, 'बोल बोल हरिबोल'।।४।।

सहस्रानन, परमसुखे, 'हरि हरि' 'बलि' गाय।
नाम-प्रभावे, मातिल विश्व, नाम-रस सबे पाय।।५।।

श्रीकृष्णनाम, रसने स्फुरि, पूराल आमार आश।
श्रीरूप-पदे, याचये इहा, भकतिविनोद दास।।६।।

१. जब नारदमुनि अपनी वीणा बजाते हैं तो उससे राधिका-रमण नाम अवतरित होता है और भक्तों द्वारा किये जा रहे कीर्तन में तुरन्त प्रकट हो जाता है।

२. मानसून बादल के समान हरिनाम भक्तों के कानों में शुद्ध अमृत की धारा बरसाता है। दिव्य आनन्द के कारण सभी भक्त उत्साहपूर्वक हृदय भरकर नृत्य करते हैं।

३. सम्पूर्ण ब्रह्माण्डवासी दिव्य मधुरता की मदोन्मत्त करने वाली बौछारों में भीगकर पागल हो जाते हैं। कुछ लोग रोते हैं, कुछ नृत्य करते हैं और अन्य अपने मन में पूरी तरह भावविभोर हो जाते हैं।

४. पंचमुखी शिवजी नारदमुनि का आलिंगन करते हैं और दिव्य उन्माद में बारम्बार चिल्लाते हैं, जबकि ब्रह्माजी उत्साहपूर्वक नृत्य करते हुए पुकारते हैं, ''आप सभी 'हरि बोल! हरि बोल!' का कीर्तन करो।''

५. परमसुख का अनुभव करते हुए सहस्र मुखों वाले अनन्तशेष गाते हुए ''हरि बोल! हरि बोल!' पुकारते हैं। हरिनाम की दिव्य ध्वनि के प्रभाव से सम्पूर्ण विश्व दिव्य आनन्द में पागल हो जाता है और सभी हरिनाम के रस का आस्वादन करते हैं।

६. श्रीकृष्ण के पवित्र नाम ने मेरी जिह्वा पर प्रकट होकर मेरी समस्त इच्छायें पूरी कर दी हैं। भगवान् का यह तुच्छ सेवक भक्तिविनोद श्रील रूप गोस्वामी के चरणों पर निवेदन करता है कि हरिनाम का यह कीर्तन सदैव होता रहे।

विद्यार विलासे

विद्यार विलासे, काटाइनु काल,
परम साहसे आमि।
तोमार चरण, ना भजिनु कभु,
एखन शरण तुमि।।१।।

पढ़िते, पढ़िते भरसा बाढिल,
ज्ञाने गति हबे मानि।
से आशा विफल, से ज्ञान दुर्बल,
से ज्ञान अज्ञान जानि।।२।।

जड़ विद्या यत, मायार वैभव,
तोमार भजने बाधा।
मोह जनमिया, अनित्य संसारे,
जीव के करये गाधा।।३।।

सेइ गाधा ह'ये, संसारेर बोझा,
बहिनु अनेक काल।
वार्द्धक्ये एखन, शक्तिर अभावे,
किच्छु नाहि लागे भाल।।४।।

जीवन यातना, हइल एखन,
से विद्या अविद्या भेल।
अविद्यार ज्वाला, घटिल विषम,
से विद्या हइल शेल।।५।।

तोमार चरण बिना किछु धन,
संसारे ना आछे आर।
भकतिविनोद, जड़ विद्या छाड़ि,
तुया पद कर सार।।६।।

१. बड़े उत्साह के साथ मैंने भौतिक विद्या अर्जित करने के सुख में बिताया और कभी भी आपके चरणकमलों की सेवा नहीं की। हे भगवन्! अब आप मेरे एकमात्र आश्रय हैं।

२. विद्या अर्जित करते-करते मेरी आशायें बढ़ने लगीं और मैं ज्ञानार्जन को ही जीवन का सच्चा लक्ष्य मानने लगा। किन्तु वे आशायें कितनी व्यर्थ सिद्ध हुईं क्योंकि मेरा सम्पूर्ण ज्ञान दुर्बल पड़ गया है। अब मैं जान पाया हूँ कि वह सब विद्वता शुद्ध अज्ञानता थी।

३. इस संसार का समस्त ज्ञान आपकी माया की क्षणभंगुर शक्ति द्वारा उत्पन्न है। यह आपकी भक्ति में एक बाधा है। भौतिक ज्ञान इस अस्थाई जगत् के प्रति मोह जागृत करके शाश्वत आत्मा को गधा बना देता है।

४. यहाँ एक व्यक्ति है जो वैसा गधा बन हुआ है और उसने इतने लम्बे काल से भौतिक अस्तित्व रूपी व्यर्थ बोझे को ढोया हुआ है।

५. अब मेरा जीवन एक यातना बन गया है क्योंकि मेरी तथाकथित विद्वता और ज्ञान व्यर्थ अज्ञानता सिद्ध हो चुकी है। भौतिक ज्ञान एक तीक्ष्ण शूल बनकर अज्ञानता की असहनीय ज्वलनशील पीड़ा द्वारा मेरे हृदय को भेद रहा है।

६. हे भगवन्, आपके चरणकमलों के अतिरिक्त इस संसार में अन्य कोई भी वस्तु आश्रय के योग्य नहीं है। भक्तिविनोद अपने समस्त भौतिक ज्ञान को त्यागकर आपके चरणकमलों को अपने जीवन के एकमात्र सार के रूप में स्वीकार करते हैं।

निताई गुणमणि

निताई गुणमणि आमार निताई गुणमणि।
आनिया प्रेमेर वन्या भासाइलो अवनी।।१।।

प्रेमेर वन्या लोइया निताई आइला गौडदेशे।
डुबिलो भकत-गण दीन हीन भासे।।२।।

दीन हीन पतित पामर नाहि बाछे।
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम सबाकारे जाचे।।३।।

आबद्ध करुणा-सिन्धु निताई काटिया मुहान्।
घरे घरे बुले प्रेम-अमियार बान।।४।।

लोचन बोले मोर निताई जेबा ना भजिलो।
जानिया शुनिया सेइ आत्म-घाती होइलो।।५।।

१. सभी गुणों के शिरोमणि मेरे नित्यानन्द प्रभु, सभी गुणों के शिरोमणि मेरे नित्यानन्द प्रभु, भगवद्प्रेम की ऐसी बाढ़ लायें हैं जिससे सम्पूर्ण विश्व को डुबो दिया है।

२. श्रीचैतन्य महाप्रभु के निर्देश पर जगन्नाथपुरी से बंगाल लौटकर निताइ ने सभी भक्तों को प्रेम की बाढ़ में डुबो दिया। किन्तु पतित अभक्त उस बाढ़ में डूबे नहीं अपितु उस दिव्य आनन्द के सागर में तैरते रहे।

३. जिस दिव्य प्रेम को प्राप्त करना ब्रह्माजी के लिए भी दुर्लभ है, वह प्रेम उन पतित जीवों को भी मुक्त रूप से वितरित किया गया जिन्होंने इसकी इच्छा भी नहीं की थी।

४. अबतक कृपा का यह समुद्र सीमाओं से बँधा था, किन्तु निताइ ने इसकी सीमाओं को तोड़ दिया जिससे इसकी अमृतमयी धाराओं ने घर-घर में प्रवेश कर लिया।

५. लोचनदास कहते हैं, ''जो भी व्यक्ति मेरे निताइ का भजन नहीं करता वह जानबूझकर आत्महत्या कर रहा है।''

दयाल निताई चैतन्य

'दयाल निताई चैतन्य' बोले' नाच रे आमार मन ।
नाच रे आमार मन, नाच रे आमार मन।।१।।

(एमन, दयाल तो नाइ हे, मार खेये प्रेम देय)
(ओरे) अपराध दूरे जाबे, पा'बे प्रेमधन ।
(ओ नामे अपराध-विचार तो नाइ हे)
(तखोन) कृष्ण-नामे रुचि ह'बे घुचिबे बन्धन।।२।।

(कृष्ण-नामे अनुराग तो ह'बे हे)
(तखोन) अनायासे सफल ह'बे जीवेर जीवन ।
(कृष्ण-रति विना जीवन तो मिछे हे)
(शेषे) वृंदावने राधा-श्यामेर पा'बे दर्शन ।
(गौर-कृपा ह'ले हे)

१. परम दयालु श्रीनित्यानन्द प्रभु और श्रीचैतन्य महाप्रभु के नामों का उच्चारण करते हुए हे मेरे मन तू नाच! हे मन तू नाच! बस नाच!

२. अरे! नित्यानन्द प्रभु जैसा दयालु व्यक्ति अन्य कहीं नहीं मिलेगा। उन्होंने जगाइ-मधाइ से मार खाकर भी उन्हें भगवद्प्रेम दिया! हे मन, जब तुम्हारे अपराध नष्ट हो जायेंगे तो तुम्हें भगवद्प्रेम का खजाना मिलेगा। किन्तु चैतन्य और निताइ के नाम-कीर्तन में अपराधों का कोई विचार नहीं किया जाता! एक बार यदि तुम श्रीकृष्ण के नामों का आस्वादन कर लोगे तो इस संसार के बन्धन समाप्त हो जायेंगे।

३. अरे! जब श्रीकृष्ण के नामों के प्रति आसक्ति होगी तो जीव का जीवन अत्यन्त सहजता से सफल बन जायेगा! किन्तु श्रीकृष्ण के प्रति आसक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है! यदि तुम्हें श्रीगौरहरि की कृपा मिल जाती है तो जीवन के अन्त में तुम्हें श्रीराधाश्याम के मधुर दर्शन मिलेंगे!

कलि-कुक्कुर-कदन

कलि-कुक्कुर-कदन जदि चाओ (हे)
कलि-युग-पावन, कलि-भय-नाशन,
श्रीशचीनन्दन गाओ (हे)।।१।।

गदाधर-मादन, निता'येर प्राण-धन,
अद्वैतेर प्रपुजित गोरा
निमाई विश्वम्भर, श्रीनिवास-ईश्वर,
भक्त-समूह-चित्-चोर।।२।।

नादीया-शशधर, मायापूर-ईश्वर,
नाम-प्रवर्तन सुर
गृहि-जन-शिक्षक, न्यासि-कुल-नायक,
माधव राधा-भाव-पूर।।३।।

सार्वभौम-शोधन, गजपति-तारण,
रामानन्द-पोषण वीर
रूपानन्द-वर्धन, सनातन-पालन,
हरिदास-मोदन धीर।।४।।

व्रज-रस भावन, दुष्ट-मत-शातन,

कपटी विघातन काम
शुद्ध-भक्त पालन, शुष्क-ज्ञान ताडन,
छल-भक्ति-दूषण राम।।५।।

१. अरे भाइयों! यदि आप इस कलिरूपी कुक्कुर (कुत्ते) से बचना चाहते हो तो कलियुग को पवित्र करने वाले और कलियुग के भय को नष्ट करने वाले श्रीशचीनन्दन के नामों का कीर्तन करो।

२. वे गौरहरि श्रीगदाधर पण्डित और श्रीनित्यानन्द प्रभु के प्राण एवं धन स्वरूप हैं तथा अद्वैताचार्य द्वारा पूजित हैं। उनके निमाई एवं विश्वभर जैसे अनेक नाम हैं। वे श्रीनिवास आचार्य के पूजनीय ईश्वर हैं तथा समस्त भक्तवृन्द के चित्त को चुराने वाले हैं।

३. वे नदिया के चन्द्रस्वरूप हैं तथा श्रीमायापुर धाम के ईश्वर हैं। वे हरिनाम प्रदान करने के लिए अवतरित हुए हैं। वे गृहस्थ आश्रम में रहने वाले भक्तों को शिक्षा देने आये हैं; वे समस्त संन्यासियों के शिरोमणि हैं तथा राधारानी के भाव एवं कान्ति से युक्त श्रीमाधव ही हैं।

४. उन्होंने सार्वभौम भट्टाचार्य का मायावाद से उद्धार करके उनके हृदय को शुद्ध किया और महाराज प्रदापरुद्र का भी उद्धार किया। उन्होंने रामानन्द राय को अपनी भक्ति प्रदानकर उनका पालन किया। वे श्रील रूप गोस्वामी के आनन्द को बढ़ाने वाले तथा श्रील सनातन गोस्वामी का पालन करने वाले हैं। वे हरिदास ठाकुर के लिए आनन्द के स्रोत हैं, तथा वे अत्यन्त धीर हैं।

५. श्रीगौरहरि वृन्दावन के भावों पर ध्यान करते रहते हैं, वे दुष्ट मानसिकता का नाश करने वाले हैं, और वे अपनी कृपा से कपट एवं काम को खण्डित कर देते हैं। वे अपने शुद्ध भक्तों का पालन करते हैं और शुष्क ज्ञानियों को प्रताड़ित करते हैं। वे छलयुक्त भक्ति को नष्ट करते हैं तथा परम आनन्दमय हैं।

यदि गौर ना होइतो

यदि गौर ना होइतो, तबे कि होइतो,
केमोने धरिताम दे।
राधार महिमा, प्रेमरस सीमा,
जगते जानातो के ।।१।।

मधुर वृन्दा, विपिन-माधुरी,
प्रवेश चातुरी सार।
व्रज-युवति, भावेर भकति,
सकति होइत कार।।२।।

गाओ गाओ पुनः, गौरांगेर गुण,
सरल करिया मन।
ए भव-सागरे, एमन दयाल,
ना देखिये एक-जन।।३।।

(आमि) गौरांग बोलिया, ना गेनु गलिया,
केमोने धरिनु दे।
वासुर हिया, पाषाण दिया,
केमोने गडियाछे।।४।।

१. यदि भगवान् गौरहरि इस कलियुग में अवतरित न हुए होते तो हमारा क्या होता? किस प्रकार हम अपनी देह को धारण कर पाते? यदि वे न होते तो इस संसार में कौन राधारानी के सर्वोच्च प्रेमरस की सीमाओं को जान पाता?

२. किसके पास व्रजगोपियों के चरणचिह्नों का अनुगमन करते हुए भक्ति करने की शक्ति थी? और वृन्दादेवी के परम मधुर वन वृन्दावन में प्रवेश करने के लिए व्रजगोपियों की चतुरता ही एकमात्र योग्यता है।

३. अरे मन, कृपया बार-बार श्रीगौरांग के गुणों का कीर्तन करो! बस अपने हृदय को सरल रखो। इस अज्ञानता के सागर में श्रीगौरहरि जैसा दयालु अन्य कोई नहीं है।

४. यद्यपि मैं श्रीगौरांग महाप्रभु के नामों का कीर्तन करता हूँ, न जाने क्यों मेरा हृदय प्रेम से पिघलता नहीं है। क्यों मैंने अभी तक अपना शरीर धारण किया हुआ है? विधाता ने वासुघोष के शरीर में हृदय के स्थान पर पाषाण क्यों रखा है?

कबे गौर-वने

कबे गौर-वने, सुरधुनी-तटे,
'हा राधे हा कृष्ण' बोले'।
काँदिया बेडा'ब, देहसुख छाड़ि',
नाना लता-तरु-तले।।१।।

श्वपच-गृहेते, मागिया खाइब,
पिब सरस्वती-जल ।
पुलिने-पुलिने, गडा-गडी दिबो,
कोरि' कृष्ण-कोलाहल।।२।।

धामवासी जने, प्रणति कोरिया,
मागिब कृपार लेश ।
वैष्णव-चरण-रेणु गाय माखि',
धरि' अवधूत-वेश।।३।।

गौड़-ब्रज-जने, भेद ना देखिब,
होइब ब्रज-बासी ।
धामेर स्वरूप, स्फुरिबे नयने,
होइब राधार दासी।।४।।

१. ओह! वह दिन कब आयेगा जब मैं सब प्रकार के शारीरिक सुखों का त्याग करके नवद्वीप धाम में गंगाजी के किनारे "हे राधे! हे कृष्ण!" पुकारते हुए लताओं और वृक्षों के नीचे भ्रमण करूँगा?

२. मैं चाण्डाल के घर से भिक्षा माँगकर अपना जीवन निर्वाह करूँगा और सरस्वती नदी का जल पीऊँगा। नदी के एक तट से दूसरे तट तक आनन्द में मैं लोट-पोट होता हुआ उच्चस्वर में "कृष्ण! कृष्ण!" का कीर्तन करूँगा।

३. मैं समस्त धामवासियों को प्रणाम करके उनकी कृपा के एक बिन्दु की याचना करूँगा। मैं वैष्णवों की चरणधूलि अपने पूरे शरीर पर मलूँगा और एक अवधूत का वेश धारण करूँगा।

४. अहो! कब मैं नवद्वीप और वृन्दावनवासियों के बीच भेद न देखकर एक व्रजवासी

होऊँगा? इससे भगवान् के धाम का सच्चा स्वरूप मेरी आँखों के सम्मुख प्रकट होगा और मैं श्रीमती राधारानी की दासी बन पाऊँगा।

आमि जमुना पुलिने

आमि जमुना पुलिने, कदम्ब कानने
कि हेविमि सखी आज
आमार श्याम वंशीधारी मणिमंचोपरि
लीला करे रसराज ।।१।।

तार अष्टदल परि श्रीराधा श्रीहरि
अष्टसखी परिजन ।।२।।

तार सुगित नट्टने, सब सखिगणे
तुश्छिछे युगल धने
तखन कृष्णलीला हेरि, प्रकृति सुन्दरी
विस्तारिछे शोभावने ।।३।।

आमि घरे ना जाइबो वने प्रवेशिबो
ओ लीला रसेर तरे
आमि त्याजि कुललाज भज ब्रजराज
विनोद मिनति करे ।।४।।

१. हे सखी! जानती हो आज मैंने क्या देखा? यमुनानदी के तट पर कदम्ब वृक्षों के बगीचे में एक सुन्दर श्यामवर्ण का युवक मणियों से सज्जित एक सिंहासन पर विराजमान बाँसुरी बजा रहा था और सभी रसों के शिरोमणि के रूप में लीलायें कर रहा था।

२. कृष्ण अपनी लीलायें कर रहे हैं जो अमृत की वर्षा के समान हैं। श्रीराधा और श्रीहरि अपनी आठ प्रमुख सखियों द्वारा सेवित हैं, जो मणियों की आठ पत्तियों पर बैठी हैं।

३. मधुर गीत-गायन एवं सुन्दर नृत्य द्वारा वे सभी परमधन युगल श्री श्रीराधा-कृष्ण को तुष्ट कर रही हैं। इस प्रकार ये गोपियाँ श्रीकृष्ण की रासलीलाओं को देख रही हैं जो सम्पूर्ण सुन्दर वन में फैली हुई हैं।

४. इन लीलाओं का आस्वादन करने के लिए अब मैं अपने घर नहीं जाऊँगा, अपितु वन में प्रवेश करूँगा। मेरा तुम सभी से यही निवेदन है कि अपने परिवार की लाज-लज्जा को त्यागकर केवल व्रजराज कृष्ण का भजन करो।

एमन दुर्मति

(प्रभु हे)! एमन दुर्मति, संसार-भितरे,
पडिया आछिनु आमि।
तव निज-जन, कोन महाजने,
पाठाइया दिले तुमि।।१।।

दया करि मोरे, पतित देखिया,
कहिल आमारे गिया।
ओहे दीन जन, सुन भाल कथा,
उल्लसित हबे हिया।।२।।

तोमारे तारिते, श्रीकृष्ण चैतन्य,
नवद्वीपे अवतार।
तोमा हेन कत, दीन हीन जने,
करिलेन भवपार।।३।।

वेदेर प्रतिज्ञा, राखिबार तरे,
रुक्मवर्ण विप्रसूत।
महाप्रभु नामे, नदीया माताय,
संगे भाई अवधूत।।४।।

नंदसुत जिनि, चैतन्य गोसाइ,
निज-नाम करि दान।
तारिल जगत्, तुमिओ जाइया,
लह निज परित्राण।।५।।

से कथा सुनिया, आसियाछि नाथ,

तोमार चरणतले।
भकतिविनोद, काँदिया काँदिया,
आपन काहिनी बले।।६।।

१. हे भगवन्! अपने दुष्ट मन के कारण मैं दुमर्ति इस संसार में गिर पड़ा, किन्तु आपने अपने एक शुद्ध महान् भक्त को मेरी रक्षा हेतु भेज दिया।

२. मुझ पतित को देखकर मुझपर दया दिखाते हुए उन्होंने कहा, ''हे दीन आत्मा, मैं तुम्हें एक अच्छी बात बताने जा रहा हूँ, जिससे सुनकर तुम्हारा हृदय उल्लसित हो जायेगा।''

३. ''तुम्हारा उद्धार करने के लिए श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु नवद्वीप में अवतरित हुए हैं। उन्होंने तुम जैसे अनेक पतित जीवों को संसार रूपी समुद्र के पार लगा दिया है।

४. ''वेदों में की गई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए वे गौरवर्ण लेकर एक ब्राह्मणपुत्र के रूप में अवतरित हुए हैं। उनका नाम महाप्रभु है और वे अपने भाई अवधूत के साथ आये हैं। दोनों ने मिलकर पूरी नदिया को दिव्य उन्माद से अभिभूत कर दिया है।

५. ''श्रीचैतन्य गोसाईं स्वयं नन्द महाराज के पुत्र श्रीकृष्ण हैं। उन्होंने मुक्त रूप से अपने नामों का वितरण करके सम्पूर्ण जगत् का उद्धार किया है। तुम भी जाकर अपनी मुक्ति प्राप्त कर सकते हो।''

६. हे भगवन्! उन शब्दों को सुनकर भक्तिविनोद रोता-रोता आपके चरणकमलों के तलवों की शरण लेता है और अपने जीवन की कहानी आपको सुनाता है।

सर्वस्व तोमार

सर्वस्व तोमार, चरणे सम्पिया, पडेचि तोमार घरे।
तुमि तो' ठाकुर, तोमार कुक्कुर, बोलिया जानहो मोरे।।१।।

बान्धिया निकटे, आमारे पालिबे, रहिबो तोमार द्वारे।
प्रतीप-जनेरे, आसिते ना दिबो, राखिबो गडेर पारे।।२।।

तव निजजन, प्रसाद सेविया, उच्छिष्ट राखिबे जाँहा।
आमार भोजन, परम-आनन्दे, प्रतिदिन ह'बे ताँहा।।३।।

बोसिया शुइया, तोमार चरण, चिन्तिबो सतत आमि।
नाचिते नाचिते, निकटे जाइबो, जखोन डाकिबे तुमि।।४।।

निजेर पोषण, कभु ना भाविबो, रहिबो भावेर भोरे।
भकतिविनोद, तोमारे पालक, बोलिया वरण करे।।५।।

१. आपके चरणकमलों पर अपना सर्वस्व समर्पित करके मैं आपके घर के सामने पड़ा हूँ। आप मेरे स्वामी हैं, कृपया मुझे अपने कुत्ते के रूप में स्वीकार करें।

२. मुझे अपने निकट ही बाँधकर आप मेरा पालन करेंगे और मैं आपके द्वार पर ही रहूँगा। मैं प्रतिकूल लोगों को अन्दर नहीं आने दूँगा और उन्हें बाहर ही रखूँगा।

३. आपके प्रसाद को स्वीकार करने के बाद भक्तगण जो उच्छिष्ट छोड़ेंगे वह मेरा प्रतिदिन का भोजन होगा। परम आनन्द से मैं उसे स्वीकार करूँगा।

४. बैठे अथवा लेटे हुए मैं निरन्तर आपके चरणकमलों पर ध्यान करूँगा। आप जब भी मुझे बुलायेंगे मैं नाचते हुए दौड़कर आ जाऊँगा।

५. मैं कभी भी अपने पालन-पोषण की चिन्ता नहीं करूँगा और सदैव अपने स्वामी के प्रति प्रेम में मग्न रहूँगा। भक्तिविनोद आपको अपने एकमात्र पालनकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं।

राधाकुण्डतट

राधाकुण्डतट-कुंजकुटीर।
गोवर्धन-पर्वत, यामुनतीर।।१।।

कुसुमसरोवर, मानसगंगा।
कालिन्दिनन्दिनी विपुल तरंगा।।२।।

वंशीवट, शशांक गोकुल, धीरसमीर।
वृन्दावन-तरुलतिका-कनीर।।३।।

खगमृगकुल, मलय-वातास।
मयूर, भ्रमर, मुरली, विलास।।४।।

वेणु, श्रृंग, पदचिह्न मेघमाला।
वसन्त, शशांक, शंख, करताला।।५।।

युगलविलासे अनुकूल जानि।
लीला-विलास उद्दीपक मानि।।६।।

ए सब छोडत कँहि नाहि जाँउ।
ए सब छोडत पराण हाराँउ।।७।।

भक्तिविनोद कहे, शुन कान।
तुया उद्दीपक हामारा पराण।।८।।

१. श्रीराधाकुण्ड के तट पर स्थित कुंज में कुटीर, महान् गोवर्धन पर्वत, यमुना नदी का तट...

२. ...कुसुम सरोवर, मानसी गंगा, अनेकानेक लहरों से पूरित कलिंद पर्वत की पुत्री यमुना...

३. ...वंशीवट, गोकुल, धीर समीर नामक पवित्र स्थल, वृन्दावन के वृक्ष, लतायें और बाँस...

४. नाना प्रकार के पक्षी और मृग, मलय पर्वत से आती शीतल पवन, मयूर, भ्रमर, मंद स्वर में बजती मुरली की लीलायें...

५. ...उच्चस्वर में वेणु का गीत, भैंस के सींग से बना बिगुल, व्रजधूल में भगवान् एवं उनकी प्रिया के पदचिह्न, काले बादलों की माला, वसंत ऋतु, चन्द्रमा, शंख और करताल...

६. ...दिव्य युगल राधा-कृष्ण की आनन्दभरी लीलाओं के लिए मैं इन सभी को अत्यन्त अनुकूल मानता हूँ। भगवान् की मनमोहक लीलाओं को और तीव्र करने के लिए मैं इन्हें उद्दीपक के रूप में देखता हूँ।

७. इन सभी को छोड़कर मैं अन्य कहीं नहीं जाऊँगा क्योंकि इन्हें छोड़ने का अर्थ अपने प्राणों को छोड़ना है।

८. भक्तिविनोद कहते हैं, ''हे कान्हा! कृपया सुनो! जो भी वस्तुएँ आपके स्मरण को बढ़ावा देती हैं, मेरे लिए वे प्राणस्वरूप हैं।''

कबे हबे बोलो

कबे हबे बोलो से-दिन आमार।
(आमार) अपराध घुचि, शुद्धनामे रुचि,
कृपाबले हबे हृदये संचार।।१।।

तृणाधिक हीन, कबे निज मानि,
सहिष्णुता-गुण हृदयेते आनि।
सकले मानद, आपनि अमानी,
हये आस्वादिब नामरस सार।।२।।

धन जन आर, कविता सुन्दरी,
बलिब ना चाहि देह सुखकरी।
जन्मे-जन्मे दाओ, ओहे गौरहरि,
अहैतुकी भक्ति चरणे तोमार।।३।।

(कबे) करिते श्रीकृष्ण-नाम उच्चारण,
पुलकित देह गदगद वचन।
वैवर्ण्य-वेपथु, ह'बे संघटन
निरन्तर नेत्रे ब'बे अश्रुधार।।४।।

कबे नवद्वीपे, सुरधुनि-तटे
गौर-नित्यानन्द बलि निष्कपटे।
नाचिया गाइया, बेड़ाइब छुटे,
बातुलेर प्राय छाड़िया विचार।।५।।

कबे नित्यानन्द, मोरे करि दोया,
छाड़ाइबे मोर विषयेर माया।
दिया मोरे निज चरणेर छाया
नामेर हाटेते दिबे अधिकार।।६।।

किनिबो, लुटिबो, हरिनाम-रस,
नाम रसे मति हइबो विवश।
रसेर रसिक - चरण परश,
करिया मजिबो रसे अनिवार।।७।।

कबे जीवे दया, हइबे उदय,
निजसुख भुलि सुदीन हृदय।
भकतिविनोद, करिया विनय,
श्री आज्ञा-टहल करिबे प्रचार।।८।।

१. अहो! कब मेरा ऐसा शुभ दिन आयेगा जब श्रीगौरसुन्दर की कृपा से मेरे समस्त प्रकार के अपराध नष्ट हो जायेंगे, जिसके फलस्वरूप शुद्ध नाम में रुचि हो जायेगी तथा हृदय में स्फूर्ति होगी।

२. कब मैं अपने हृदय में सहिष्णुता को धारण कर स्वयं को तृण से भी अधिक दीन-हीन मानूँगा तथा अपने लिए सम्मान की इच्छा न रखते हुए दूसरों को पूरा सम्मान दूँगा और इस प्रकार निरन्तर नामरस का आस्वादन करूँगा।

३. हे गौरसुन्दर! मैं धन, जन, विद्या, सुन्दरी तथा अन्य प्रकार की देहसुखकारी वस्तुओं को नहीं चाहता,मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि जन्म-जन्मान्तर में आपके श्रीचरणों में ही मेरा अहैतुकी भक्ति रहे।

४. अहो! कब श्रीकृष्ण नाम का उच्चारण करते समय मेरा शरीर पुलकित तथा वाणी गद्‌गद् हो जायेगी। सारा शरीर पसीने से लथपथ हो जायेगा तथा नेत्रों से निरन्तर अश्रुधारा प्रवाहित होती रहेगी?

५. कब मैं नवद्वीप में गंगानदी के तटों पर निष्कपट भाव से ''हा गौर! हा निताई!'' बोलते हुए तथा नाचते-गाते हुए एक पागल व्यक्ति की भाँति लोक-लाज त्याग कर इधर-उधर भागता रहूँगा?

६. अहो! कब नित्यानन्द प्रभु कृपा करके विषयों के प्रति मेरी अनासक्ति को छुड़ाकर अपने श्रीचरणों की छाया अर्थात् आश्रय प्रदान कर नाम के बाजार में मुझे अधिकार प्रदान करेंगे।

७. जिससे मैं उस नाम के बाजार में हरिनामरूपी रस को खरीदकर अथवा लूटकर भी पान कर लूँगा तथा नामरस में मेरी मति विवश हो जायेगी और रसिक वैष्णवों के श्रीचरणों का स्पर्श करके नामरस में निमग्न हो जाऊँगा।

८. श्रील भक्तिविनोद ठाकुर विनयपूर्वक कह रहे हैं - कब मेरे हृदय में जीवों के प्रति दया उदित होगी और मैं अपना सुख भूलकर भी सुदीन हृदय से श्रीगौरसुन्दर की आज्ञा पालन कर प्रचार करूँगा।

गौरांगेर दू'टी पद

गौरांगेर दू'टी पद, जार धन सम्पद,
से जाने भकति-रस-सार।
गौरांगेर मधुर-लीला, जार कर्णे प्रवेशिला,
हृदय निर्मल भेल तार।।१।।

जे गौरांगेर नाम लय, तार हय प्रेमोदय,
तारे मुइ जाइ बलिहारी।
गौरांग-गुणेते झुरे, नित्यलीला तारे स्फुरे,
से जन भकति-अधिकारी।।२।।

गौरांगेर संगी गणे, नित्यसिद्ध करि माने,
से जाय ब्रजेन्द्रसुत-पाश।
श्रीगौड़मण्डल-भूमि, जेबा जाने चिन्तामणि,
तार हय ब्रजभूमे वास।।३ ।।

गौर-प्रेम-रसार्णवे, से तरंगे जेबा डूबे,
से राधामाधव-अन्तरंग।
गृहे वा वनेते थाके, 'हा गौरांग' बोले डाके,
नरोत्तम मांगे तार संग।।४ ।।

१. जिस किसी ने भी श्रीचैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को अपनी एकमात्र सम्पत्ति के रूप में स्वीकार किया है वह भक्ति के सच्चे सार को जानता है। यदि कोई श्रीचैतन्य महाप्रभु की मधुर लीलाओं को ध्यानपूर्वक सुनता है तो तुरन्त उसका हृदय समस्त भौतिक कल्मषों से मुक्त हो जायेगा।

२. केवल श्रीचैतन्य महाप्रभु के नाम का उच्चारण करने से व्यक्ति भगवद्प्रेम विकसित कर लेता है। ऐसे भक्त की मैं बलिहारी जाता हूँ। यदि कोई श्रीचैतन्य महाप्रभु के दिव्य गुणों को सुनने मात्र से भावविभोर होकर क्रंदन करता है तो वह तुरन्त राधा-कृष्ण की दिव्य प्रेमलीलाओं को समझ सकता है।

३. जो कोई यह समझ जाता है कि श्रीचैतन्य महाप्रभु के पार्षद नित्य मुक्त रहते हैं वह व्यक्ति अगले जन्म में श्रीव्रजभूमि में जन्म लेता है। यदि कोई समझ जाता है कि

गौड़मण्डल और वृन्दावन में कोई भेद नहीं है तो वह वास्तव में वृन्दावन में ही रहता है।

४. जो कोई श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा वितरित किये जा रहे भगवद्प्रेम रूपी समुद्र की लहरों में गोते लगाता हुआ आनन्द लेते है वह तुरन्त श्री श्रीराधा-माधव का अंतरंग सेवक बन जाता है। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह भक्त गृहस्थ है या वानप्रस्थ। यदि कोई वास्तव में श्रीगौरांग महाप्रभु के संकीर्तन आन्दोलन में भाग लेता है निरन्तर उनके नामों का कीर्तन करता है, नरोत्तमदास ऐसे भक्त के संग की कामना करता है।

गोरा पहु

गोरा पहु ना भजिया मैनु ।
प्रेम-रतन-धन हेलाय हाराइनु।।१।।

अधने यतन करि धन तेयागिनु ।
आपन करम-दोषे आपनि डुबिनु।।२।।

सत्-संग छाडि' कैनु असते विलास ।
ते-कारणे लागिल जे कर्म-बंध-फाँस।।३।।

विषय-विषम-विष सतत खाइनु ।
गौर-कीर्तन-रसे मगन ना हइनु।।४।।

एमन गौरांगेर गुणे ना कान्दिल मन।
मनुष्य दुर्लभ जन्म गेल अकारण।।५।।

केनो वा आछये प्राण कि सुख पाइया ।
नरोत्तम दास केनो ना गेलो मारिया।।६।।

१. हे गौरांग महाप्रभु! मैंने कभी आपका भजन नहीं किया। इस प्रकार मैंने अपनी ही गलती से प्रेमधन रूपी मूल्यवान रत्न लुटा दिया है।

२. यद्यपि मैं स्वयं अत्यन्त निर्धन हूँ, फिर भी मैंने आपकी कृपा रूप धन को प्राप्त करने के अवसर को त्यागने में अत्यन्त प्रयास किये और स्वयं को पापकार्यों के समुद्र में डुबो दिया।

३. सत्संग त्यागकर मैंने भौतिकवादी लोगों के संग में आनन्द लिया। इसलिए अब

कर्मफलों की फाँसी मेरे गले में आ गिरी है।

४. मैंने निरन्तर भौतिक इन्द्रियतृप्ति का विष पिया और कभी भी श्रीगौरांग महाप्रभु के कीर्तन रूपी अमृत में स्वयं को निमग्न नहीं किया।

५. ऐसे दयालु गौरांग महाप्रभु के गुणों को सुनकर कभी भी मेरा मन नहीं रोया तथा इस प्रकार मेरा मनुष्य जीवन व्यर्थ ही बीत गया है।

६. मैं क्यों जीवित हूँ? मुझे क्या सुख मिल रहा है? नरोत्तमदास अभी तक मरा क्यों नहीं?

गौड़ीय वैष्णव गीत

(भाग चार)

वृन्दावन रम्य स्थान १२७
कृष्ण देव भवन्तम् १२८
केशव! तुया जगत १२९
कृष्ण हइते चतुर्मुख १३०
आमार निताई मिले १३२
जय राधा-गिरिवरधारी.....१३३
वृंदावनवासी यत १३४

कृष्ण देव भवन्तम्

कृष्ण देव भवन्तम् वन्दे ।।धृ।।
मन-मानस-मधुकरम् अर्पया निज-पद-पङ्कज-मकरन्दे

यदि अपि समाधिषु विधिरपि पश्यति
न तव नखाग्रमरीचिम्।
इदं इच्छामि निशम्य तवाच्युत
तदपि कृपाद्भुतवीचिम्।।१।।

भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव
न त्वयि मम तिलमात्री ।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक
दुर्घट-घटन-विधात्री।।२।।

अयं अविलोलतयाद्य सनातन
कलिताद्भुत-रस-भारम् ।
निवसतु नित्यमिहामृत निन्दति
विन्दं मधुरिमा-सारम्।।३।।

(टेक) हे श्रीकृष्ण! मैं आपकी वन्दना करता हूँ। कृपया मेरे मधुमक्खी जैसे मन को अपने चरणकमलों से बहते अमृत पर स्थित कर दीजिए।

१. हे अच्युत! यद्यपि ब्रह्माजी समाधि में भी आपके चरणकमलों के नखशिरों से प्रस्फुटित प्रकाशकणों को देखने में अक्षम रहते हैं, फिर भी मैं उन्हें देखना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने आपकी अद्भुत कृपा की महिमाओं के विषय में सुना है।

२. हे माधव! यद्यपि आपके प्रति मेरे हृदय में रंचमात्र भी भक्ति नहीं है, किन्तु क्योंकि आप परम भगवान् हैं आप असम्भव को भी सम्भव कर सकते हैं।

३. हे सनातन! आपके चरणकमल से प्रवाहित होता अमृत देवताओं को भी मात दे देता है। आपके कमलरूपी चरणों में मधुरता के सार को प्राप्त करके मैं आज प्रार्थना करता हूँ कि मेरा मन सदा-सदा के लिए वहीं निवास करे।

✣ ✣ ✣

केशव! तुया जगत

केशव! तुया जगत विचित्र ।
करम-विपाके, भव-वन भ्रमइ,
पेखलुँ रंग बहु चित्र।।१।।

तुआ पद-विस्मृति, आ-मर जंत्रणा,
क्लेश-दहने दोहि' जाई ।
कपिल, पतञ्जलि, गौतम, कनभोजी,
जैमिनि, बौद्ध आओवे धाइ'।।२।।

तब् कोइ निज-मते, भुक्ति, मुक्ति जाचत,
पातई नाना-विध फाँद।
सो-सबुवाञ्चक, तुआ भक्ति बहिर्मुख,
घटाओये विषम प्रमाद।।३।।

बैमुख-वञ्चने, भट सो-सबु,
निर्मिल विविध पसार ।
दंडवत् दूरत, भक्तिविनोद भेल,
भक्त-चरण करि' सार।।४।।

१. हे केशव! आपका यह जगत् अत्यन्त विचित्र है। अपने स्वार्थी कार्यों के परिणामस्वरूप मैंने इस ब्रह्माण्ड रूपी वन का भ्रमण किया है और अनेक चित्र-विचित्र वस्तुएँ देखी हैं।

२. आपके चरणों की विस्मृति मृत्यु की कटु यातना तक ले जाती है और मेरे हृदय को नाना क्लेशों से जलाती है। इस निसहाय अवस्था में मेरे तथाकथित रक्षक जैसे महान् दार्शनिक कपिल, गौतम, कनाड, जैमिनी और बुद्ध मेरी रक्षा के लिए दौड़े आये हैं।

३.सभी ने निज मत दिये हैं और अपने दार्शनिक फँदे में भोगों और मुक्ति रूपी भोजन लटकाया है। किन्तु ये सब व्यर्थ के धोखेबाज हैं क्योंकि ये आपकी भक्ति से विमुख हैं और इसलिए ये सभी खतरनाक हैं।

४. इनमें से प्रत्येक कर्म, ज्ञान, योग एवं तप में परांगत है और आपसे विमुख आत्माओं को धोखा देते हुए ये विभिन्न प्रलोभनों का निर्माण करते हैं। इन धोखेबाजों को

दूर से ही प्रणाम करके भक्तिविनोद आपके चरणकमलों को अपने जीवन के साररूप में स्वीकार करते हैं।

कृष्ण हइते चतुर्मुख

कृष्ण हइते चतुर्मुख, हय कृष्ण सेवोन्मुख,
ब्रह्मा हइते नारदेर मति।
नारद हइते व्यास, मध्व कहे व्यासदास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ-गति।।१।।

नृहरि माधव वंशे, अक्षोभ्य-परमहंसे,
शिष्य बलि' अंगीकार करि।
अक्षोभ्येर शिष्य जयतीर्थ नामे परिचय,
ताँर दास्ये ज्ञानसिन्धु तरे।।२।।

ताँहा हइते दयानिधि, ताँर दास विद्यानिधि,
राजेन्द्र हइल ताँहा हइते।
ताँहार किंकर जयधर्म नामे परिचय,
परम्परा जान भाल मते।।३।।

जयधर्म दास्ये ख्याति, श्रीपुरुषोत्तम यति,
ताँहा हइते ब्रह्मण्यतीर्थ सूरि।
व्यासतीर्थ ताँर दास, लक्ष्मीपति व्यासदास,
ताँहा हइते माधवेन्द्र पुरी।।४।।

माधवेन्द्रपुरीवर, शिष्यवर श्रीईश्वर,
नित्यानन्द श्रीअद्वैत विभु।
ईश्वर पुरी के धन्य, करिलेन श्रीचैतन्य,
जगद्गुरु गौर महाप्रभु।।५।।

महाप्रभु श्रीचैतन्य, राधाकृष्ण नहे अन्य,
रूपानुग जनेर जीवन।

विश्वम्भर प्रियवर, श्रीस्वरूप-दामोदर,
श्रीगोस्वामी रूप-सनातन ।।६ ।।

रूपप्रिय महाजन, जीव रघुनाथ हन,
ताँर प्रिय कवि कृष्णदास ।
कृष्णदासप्रियवर, नरोत्तम सेवावर,
जाँर पद विश्वनाथ आश ।।७ ।।

विश्वनाथ भक्तसाथ, बलदेव जगन्नाथ,
ताँर प्रियभक्तिविनोद ।
महाभागवतवर, श्रीगौरकिशोरवर,
हरि भजनेते जाँर मोद ।।८ ।।

इहाँरा परमहंस, गौरांगेर निज-वंश,
ताँदेर चरणे मम गति ।
आमि-सेवा-उदासीन, नामेते त्रिदंडी दीन,
श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती ।।९ ।।

श्रीवार्षभानवीवरा, सदा सेव्यसेवा परा
ताहार दयितदास नाम ।
तार प्रधान प्रचारक, श्रीभक्तिवेदान्त नाम,
पतित जनेते दया धाम ।।१० ।।

१. सृष्टि के आरम्भ में चतुर्मुखी ब्रह्माजी ने भगवान् श्रीकृष्ण से भक्ति का ज्ञान प्राप्त किया। ब्रह्माजी ने यह ज्ञान देवर्षि नारद को तथा नारदमुनि ने इसे कृष्णद्वैपायन व्यास को दिया। श्रीपाद मध्वाचार्य जो पूर्णप्रज्ञ तीर्थ के नाम से भी जाने जाते हैं वे स्वयं को व्यासदेव के सेवक कहते थे और वे पद्मनाभ तीर्थ के गुरु एवं एकमात्र आश्रय थे।

२. मध्वाचार्य के दो अन्य प्रमुख शिष्य थे नृहरि तीर्थ और माधवतीर्थ। माधव तीर्थ ने महान् परमहंस अक्षोभ्य तीर्थ को शिष्य के रूप में स्वीकार किया। अक्षोभ्य तीर्थ के प्रमुख शिष्य थे जयतीर्थ, और जिनकी सेवा करना ज्ञानसिन्धु के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था।

३. ज्ञानसिन्धु ने भक्ति का यह ज्ञान दयानिधि को दिया, जिनके सेवक थे विद्यानिधि। विद्यानिधि ने इसे राजेन्द्र तीर्थ को दिया और उन्होंने जयधर्म को अपने सेवक के रूप में

स्वीकार किया। इस प्रकार आप ध्यानपूर्वक इस गुरु-शिष्य परम्परा को समझिये।

४. महान् संन्यासी श्रीपुरुषोत्तम तीर्थ ने भक्ति का यह ज्ञान जयधर्म से स्वीकार किया। पुरुषोत्तम तीर्थ के प्रमुख शिष्य थे महान् संत सुब्रह्मण्य तीर्थ, जिनके सेवक हुए व्यासतीर्थ। व्यासतीर्थ के सेवक थे लक्ष्मीपति तीर्थ और उनके शिष्य थे माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी।

५. माधवेन्द्र पुरी के प्रमुख शिष्यों थे ईश्वर पुरी और भगवान् के दो प्रसिद्ध अवतार श्रीनित्यानन्द प्रभु और श्रीअद्वैत प्रभु। सम्पूर्ण जगत् के गुरु श्रीचैतन्य महाप्रभु ने ईश्वर पुरी को परम सौभाग्य प्रदान करते हुए उन्हें अपना गुरु बनाया।

६. श्रीचैतन्य महाप्रभु श्री श्रीराधा-कृष्ण से अभिन्न हैं और श्रील रूप गोस्वामी के चरणचिह्नों का अनुगमन करने वैष्णवों के प्राणस्वरूप हैं। श्रील स्वरूपदामोदर गोस्वामी, श्रील रूप गोस्वामी और श्रील सनातन गोस्वामी ने श्रीविश्वम्भर (श्रीचैतन्य महाप्रभु) को महान् आनन्द प्रदान किया।

७. जीव एवं रघुनाथदास गोस्वामी रूपगोस्वामी के अत्यन्त प्रिय हुए। रघुनाथदास कृष्णदास कविराज गोस्वामी के प्रिय शिष्य थे, जो लोकनाथ गोस्वामी के घनिष्ठ मित्र थे। लोकनाथ गोस्वामी के एकमात्र शिष्य थे नरोत्तम दास ठाकुर, जो सदैव अपने गुरु की सेवा में संलग्न रहते तथा कृष्णदास कविराज के अत्यन्त प्रिय थे। नरोत्तमदास ठाकुर के चरणकमलों की सेवा विश्वनाथ चक्रवर्ती की एकमात्र अभिलाषा थी।

८. विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर बलदेव विद्याभूषण के शिक्षा गुरु थे। जगन्नाथदास बाबाजी बलदेव विद्याभूषण के बाद आचार्यों में सर्वप्रमुख थे और श्रीभक्तिविनोद ठाकुर के प्रिय शिक्षा गुरु थे। भक्तिविनोद ठाकुर के घनिष्ठ मित्र थे महाभागवत श्रीगौरकिशोरदास बाबाजी, जो सदैव हरिभजन में आनन्द लेते।

९. ये सभी महान् वैष्णव परमहंस श्रीगौरांग महाप्रभु के आध्यात्मिक परिवार के सदस्य हैं। इनके चरणकमल ही मेरा आश्रय हैं। मैं भक्ति के प्रति उदासीन हूँ और दीन हूँ तथा मेरा नाम है श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती।

१०. श्रीवार्षभानवी दयित (श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती का दीक्षित नाम जिसका अर्थ है वृषभानुपुत्री श्रीराधारानी के प्रिय) सदैव अपने गुरुदेव श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी की सेवा में रत है। उनके प्रमुख शिष्य श्रील ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने श्रीचैतन्य महाप्रभु के संदेश को विश्वभर में फैलाया है और इस प्रकार वे सभी पतित जीवों के लि जीवों के लिए दया और करुणा के स्रोत हैं।

आमार निताई मिले

आमार निताई मिले ना भोलामन
गौर मिले ना
सारा गाये माखिले तिलक
गौर मिले ना

मितर बहिर् ठिक ना ह'ले
गौर प्रेम कि कथाए मिले
(ओ तोर) ठिक ना ह'ले उपासना
तिल देइ ना तोर से सोना
सार गाये....

मन परिस्कर कर आगे
गौर भजन अनुरागे
अनुरागे तिलक केते
गौर भजन ह'ल ना (हाय भोलामन)

जे जोन मुक्तगोष्टी आदर करे
आमार दयाल निताई ताहाँर घरे
(ओ तोर) तरे भक्ति भारे दकले परे
उत्तर सदा सफल ह'बे

जय राधा गिरिवरधारी

जय राधा गिरिवरधारी
श्रीनंद-नंदन वृषभानु-दुलारि
(वृषभानु दुलारि राधे वृषभानु-दुलारि) ।।१।।

मोर-मुकुट मुख मुरली जोरि
वेणी विराजे मुखे हासि थोरि।।२।।

उनकि शोहे गले वनमाला
इनकि मोतिमा-माला-उजाला।।३।।

पीताम्बर जग-जन-मन-मोहे
नील उढानि बनि उनकि शोहे।।४।।

अरुण चरणे मणि-मञ्जिर बाओये
श्रीकृष्ण-दास तहिं मन भाओये।।५।।

१. वृषभानु महाराज की दुलारी श्रीराधारानी की जय हो! नन्द महाराज के प्रिय पुत्र गिरिवरधारी की जय हो!

२. उनके मुकुट में मोरपंख एवं मुख पर मुरली सुशोभित है। उनकी लटें अत्यन्त मनोहारी एवं मुखारविन्द पर मंद मुस्कान है।

३. उनके गले में वनफूलों की सुन्दर माला है एवं कण्ठ में मोतियों की माला जगमगा रही है।

४. कृष्ण के पीले वस्त्र सम्पूर्ण जगत् के लोगों का मन हर रहे हैं और राधारानी के नीले वस्त्र अत्यन्त सुन्दर लग रहे हैं।

५. दोनों के लालिमायुक्त चरणों पर मणियों की पायल मधुर ध्वनि कर रही है और युगलकिशोर का यह दर्शन कृष्णदास के मन को अत्यन्त भावविभोर कर रहा है।

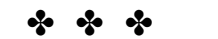

वृंदावनवासी यत

वृंदावनवासी यत वैष्णवेर गण।
प्रथमे वंदना करि सबार चरण।।१।।

नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण।
भूमिते पड़िया वन्दो सभार चरण।।२।।

नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त।
सभार चरण वन्दों हञा अनुरक्त।।३।।

महाप्रभुर भक्त यत गौड़ देशे स्थिति।
सभार चरण वन्दों करिया प्रणति।।४।।

ये-देशे, ये देशे वैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्वबाहु करि' वन्दों सबार चरण।।५।।

हञाछेन हइबेन प्रभुर यत दास।
सभार चरण वन्दों दन्ते करि घास।।६।।

ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने-जने।
ए वेद-पुराणे गुण गाय येबा शुने।।७।।

महाप्रभुर गण सब पतितपावन।
ताइ लोभे मुञि पापी लइनु शरण।।८।।

वन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि।
तमो-बुद्धिदोषे मुञि दम्भ मात्र करि।।९।।

तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास।
दोष क्षमि' मो-अधमे कर निज दास।।१०।।

सर्ववांच्छासिद्धि हय, यमबंध छूटे।
जगते दुर्लभ हञा प्रेमधन लूटे।।११।।

मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय।।१२।।

सर्वप्रथम मैं वृन्दावन में रहने वाले सभी वैष्णवों के चरणकमलों पर प्रणाम करता हूँ। उसके पश्चात् मैं नीलाचल में रहने वाले श्रीचैतन्य महाप्रभु के भक्तों के चरणकमलों पर दण्डवत् प्रणाम करता हूँ। मैं नवद्वीप में रहने वाले महाप्रभु के सभी प्रिय भक्तों के चरणकमलों में प्रणाम करता हूँ।

मैं गौड़देश में रहने वाले महाप्रभु के सभी भक्तों को प्रणाम करता हूँ। श्रीगौरांग महाप्रभु के प्रिय भक्त विश्व के किसी भी कोने में क्यों न रह रहे हों मैं उनके चरणकमलों में प्रणाम करता हूँ। मैं भविष्य में आने वाले महाप्रभु के सभी भक्तों को भी प्रणाम करता हूँ। अपने दाँतों में तृण रखकर मैं उनके चरणकमलों की वंदना करता हूँ।

सभी वेदों और पुराणों में यह कहा गया है कि महाप्रभु के प्रिय भक्त पतित-पावन हैं, और चूँकि मैं इतना पतित और निकृष्ट हूँ, मेरे हृदय में श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्रिय भक्तों का आश्रय लेने की लालसा जागृत होने लगी है। अन्यथा मेरे उद्धार का कोई मार्ग नहीं है।

यदि मैं ऐसा सोचता हूँ, ''हाँ, मैं वैष्णवों का गुणगान कर सकता हूँ,'' तो यह मेरी धृष्टता होगी। मुझमें यह घमण्ड है। मैं गूँगा हूँ और मुझमें वैष्णवों का गुणगान करने की

शक्ति नहीं है। फिर भी अपने मन में मैं आनन्दित हूँ। हे वैष्णवों! कृपया मेरे अपराधों को क्षमा करें। कृपया मुझे अपने एक दास के रूप में स्वीकार करें!

केवल वैष्णवों की कृपा से व्यक्ति यमराज के पाश से मुक्त होकर प्रेमभक्ति प्राप्त कर सकता है, जो इस संसार में अत्यन्त दुर्लभ है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। जब आप गुरु अथवा ऐसे वैष्णवों की कृपा प्राप्त करेंगे तो आपकी सभी मनोवांछायें पूर्ण हो जायेंगी। इसलिए देवकीनन्दन दास वैष्णवों की महिमा में यह भजन लिखता है।

गौड़ीय वैष्णव गीत

(भाग पाँच)

सुन्दर बाला..... १३९
सुन्दर कुण्डल १४०
ढुले ढुले गोरा-चांद १४२
हे गोविन्द, हे गोपाल! १४३
जय राधे जय राधे राधे १४४

सुन्दर बाला

सुन्दर-बाला शचीर-दुलाल
नाचत श्रीहरिकीर्तन में।
भाले चन्दन तिलक मनोहर
अलका शोभे कपोलन में।।१।।

शिरे चुड़ा दरशि बाले
वन-फुल-माला हियापर डोले।
पहिरन पीत-पीतांबर शोभे
नूपुर रुणु-झुणु चरणों में।।२।।

राधा-कृष्ण एक तनु है
निधुवन-माझे वंशी बाजाये।
विश्वरूप कि प्रभुजी सहि
आओत प्रकटहि नदीया में।।३।।

कोई गायत है राधा-कृष्ण नाम
कोई गायत है हरि-गुण गान।
मंगल-तान मृदंग रसाल
बाजत है कोई रंगण में।।४।।

१. श्रीहरि के नाम-कीर्तन पर नृत्य करता यह सुन्दर बालक शचीमाता का दुलारा पुत्र है। उसके कपाल पर चन्दन का मनोहारी तिलक लगा है और उसके घुँघराले बालों की लटें उसके गालों पर लटकती हुईं अत्यन्त शोभायमान हैं।

२. उसके सिर पर बालों का जूड़ा बना है और उसके हृदयस्थल पर वनफूलों की माला इधर-उधर डोल रही है। उसने पीले रंग के जगमगाते वस्त्र पहने हुए हैं और नाचते समय उसके पैरों में बँधे नुपूर रुण-झुण की ध्वनि करते हैं।

३. श्री श्रीराधा और कृष्ण एक ही शरीर में मिल गये हैं और दोनों मिलकर निधुवन में बाँसुरी बजाते हैं। विश्वरूप के नाथ (श्रीगौरांग महाप्रभु) ने स्वयं को नदिया में इस भाव में प्रकट किया है।

४. उस कीर्तन में कोई भक्त राधा-कृष्ण के नामों का कीर्तन कर रहा है, कोई

भगवान् हरि के गुणों की महिमायें गा रहा है, जबकि कुछ अन्य मृदंग की मधुर मंगलतान बजा रहे हैं। पूरा दृश्य ऐसा है मानो रंग बरस रहा हो।

❖ ❖ ❖

सुन्दर कुण्डल

सुन्दर कुण्डल नैन विशाला, गले सोहे वैजयन्तीमाला।
या छवि की बलिहारी ।। राधेश्याम ...
जय माधव मदनमुरारी राधेश्याम श्यामाश्याम।
जय केशव कलिमलहारी राधेश्याम श्यामाश्याम।।

कबहूँ लूट-लूट दधि खायो, कबहूँ मधुबन रास रचायो।
नाचत विपिनविहारी ।। राधेश्याम ...

ग्वालबाल संग धेनु चराई, वन वन भ्रमत फिरे यदुराई।
काँधे कामर कारी ।। राधेश्याम ...

चुरा चुरा नवनीत जो खायो, व्रज-वनितन पै नाम धरायो।
माखनचोर मुरारि ।। राधेश्याम ...

एकदिन मान इन्द्र को मारयो, नख ऊपर गोवर्धन धारयो।
नाम पड्यो गिरिधारी।। राधेश्याम ...

दुर्योधन का भोग न भायो, रूखो साग विदुर घर खायो।
ऐसे प्रेम-पुजारी ।। राधेश्याम ...

करुणा कर द्रौपदी पुकारी, पट में लिपट गये वनवारी।
निरख रहे नर नारी ।। राधेश्याम ...

भक्त-भक्त सब तुमने तारे, बिना भक्ति हम ठाड़े द्वारे।
लीजो खबर हमारी ।। राधेश्याम ...

अर्जुन के रथ हाँकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे।
चक्र-सुदर्शनधारी ।। राधेश्याम ...

श्रीलक्ष्मीपति की जय हो! मुर राक्षस के शत्रु भगवान् मदनमुरारि की जय हो! श्री श्रीराधा-श्याम की जय हो, जो श्यामा-श्याम के नाम से भी जाने जाते हैं। कोमल केश वाले भगवान् केशव की जय हो। वे कलियुग के कष्टों को हरण करने वाले हैं - राधेश्याम,

श्यामा-श्याम! (टेक)

१. हे कृष्ण, आप सुन्दर कुण्डल धारण करते हैं और आपके मधुर नयन अत्यन्त विशाल हैं। आपके कण्ठ में वैजयन्ती माला सुशोभित है। आपकी यह छवि अत्यन्त मनोहर है - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

२. कई बार आप गुपचुप माखन चुराकर खाते हैं और कई बार आप मधुबन में गोपियों के साथ रासलीला रचाते हैं। आप वृन्दावन के वनों में विहार करते हैं - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

३. अपने ग्वालमित्रों के संग आप गायें चराते हैं। आप यदुवंश-शिरोमणि हैं और अपने कंधे पर काला कम्बल लिए विभिन्न वनों में भ्रमण करते हैं - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

४. हे मुरारि! चूँकि आपने बार-बार व्रजगोपियों के घरों से ताजा माखन चुराया है, उन्होंने आपका नाम रखा है 'माखनचोर' - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

५. एक दिन आपने गोवर्धन पर्वत को अपने नाखून पर उठाकर इन्द्र का गर्व चूर-चूर किया और इसलिए आपका नाम पड़ा गिरिधारी - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

६. आपने दुष्ट दुर्योधन द्वारा अर्पित छप्पन भोग त्याग दिये और अपने भक्त विदुर द्वारा अर्पित रुखा साग खाया। इसलिए केवल प्रेम द्वारा ही आपकी पूजा की जा सकती है, बाह्य आडम्बरों से नहीं - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

७. जब द्रौपदी ने कातर भाव में आपको पुकारा तो वनों में भ्रमण करने वाले हे श्रीकृष्ण! आपने वस्त्र प्रदान करके उसकी लाज बजाई। सभी लोग इस अद्भुत दृश्य को देखते रह गये - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

८. आप अपने प्रत्येक भक्त की विशेष प्रकार से रक्षा करते हैं। किन्तु दुर्भाग्य से हम भक्तिहीन आपके द्वार पर खड़े हैं। कृपया हमारी ओर भी थोड़ा ध्यान दीजिए - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

९. आप अर्जुन के सारथी बने और युद्धभूमि में उन्हें भगवद्गीता के उपदेश सुनाये। युद्धभूमि में आपने सुदर्शनधारी का अपना रूप प्रकट किया - राधेश्याम, श्यामा-श्याम!

ढुले ढुले गोरा-चांद

ढुले ढुले गोराचाँद हरि गुण गाइ
आसिया वृंदावने नाचे गौर राय।।१।।

वृंदावनेर तरुर लता प्रेमे कोय हरिकथा
निकुञ्जेर पखि गुलि हरिनाम सुनाई।।२।।

गौर बोले हरि हरि शारी बोले हरि हरि
मुखे मुखे शुक शारी हरि नाम गाइ।।३।।

हरिनामे मत्त होये हरिणा आसिछे देय
मयूर मयूरी प्रेमे नाचिया खेलाय।।४।।

प्राणे हरि ध्याने हरि हरि बोलो बदन भोरि
हरिनाम गेये गेये रसे गले जाइ।।५।।

आसिया जमुनार कुले नाचे हरि हरि बोले
जमुना उठोले एसे चरण धोयाइ।।६।।

१. चंद्र सदृश श्रीगौरांग महाप्रभु भावविभोर होकर श्रीहरि का गुणगान एवं नृत्य करते हुए वृन्दावन में प्रवेश करते हैं।

२. वृन्दावन के वृक्ष और लतायें दिव्य प्रेम से आप्लावित हो जाते हैं और वे भगवान् हरि के गुणों की चर्चा करने लगते हैं। कुंजों में रहने वाले पक्षियों के झुण्ड श्रीहरि के नामों का कीर्तन कर रहे हैं।

३. श्रीगौरहरि कहते हैं, ''हरि! हरि!'' और एक शारी (मादा तोता) उत्तर देती है, ''हरि! हरि!'', और तब सभी नर-मादा तोते उच्चस्वर में मिलकर हरि के नामों का कीर्तन करने लगते हैं।

४. हरिनाम द्वारा मदोन्मत्त होकर हिरण वन से बाहर निकल आते हैं। मयूर और मयूरियाँ भी दिव्य प्रेम में नाचने-खेलने लगते हैं।

५. श्रीगौरहरि के हृदय और ध्यान में भगवान् हरि हैं। वे सदैव हरि के नामों को गाते रहते हैं। श्रीगौरचाँद हरिनाम में नाचते-गाते हुए दिव्य रसों में भावविभोर होकर भूमि पर लोट-पोट होते हैं।

६. यमुना नदी के तट पर पहुँचकर वे हरिकीर्तन करते हुए उन्मुक्त नृत्य करते हैं। इसे

देखकर यमुना मैया इतनी आनन्दित होती हैं कि वे अपने तटों से आप्लावित होकर श्रीगौरांग महाप्रभु के चरण धोने के लिए उठ जाती हैं। हे गोविन्द, हे गोपाल!

हे गोविन्द, हे गोपाल!

हे गोविन्द, हे गोपाल!
केशव माधव दीन-दयाल।।१।।

तुमि परम दयाल प्रभु, परम दयाल
केशव माधव दीन-दयाल।।२।।

पीत-बसन परि मयूरेर शिख धरि
मुरलीर वाणी-तुले बोले राधा-नाम।।३।।

तुमि मदेर गोपाल प्रभु, मदेर गोपाल
केशव माधव दीन-दयाल।।४।।

भव-भय-भञ्जन श्रीमधुसूदन
विपद-भञ्जन तुमि नारायण।।५।।

१. गायों को आनन्द देने वाले हे गोविन्द! गायों का पालन करने वाले हे गोपाल! सुन्दर बालों वाले हे केशव! हे लक्ष्मीपति माधव! आप पतित जीवों के प्रति सदैव दयालु रहते हैं।

२. आप परम दयालु हैं, हे भगवान्, परम दयालु! हे केशव! हे माधव! हे दीन दयाल!

३. पीत वस्त्र धारण करके और अपने मुकुट पर मोरपंख पहनकर आप अपनी मुरली के छिद्रों से राधारानी के नामों का उच्चारण करते हैं।

४. आप अत्यन्त आनन्द देने वाले गोपाल हैं, हे भगवन्! आप अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले गोपाल हैं! हे केशव! हे माधव! हे दीन-दयाल!

५. आप इस संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र द्वारा उत्पन्न भय का नाश करते हैं, और आपने मधु राक्षस का वध किया है। आप सभी विपदाओं को नष्ट करते हैं तथा सभी जीवों के आश्रय हैं।

जय राधे जय राधे राधे

नव-नवरंगी त्रिभंगी जय, श्याम सु-अंगी श्याम,
जय राधे जय हरिप्रिये, श्रीराधे सुख धाम।।

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे,
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण।।धृ.।।

श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम-जोरी श्रीराधे,
रसिक रसिलो, छैल-छबिलो गुणगर्वीलो श्रीकृष्ण।।१।।

रास-विहारिणी रस-विस्तारिणी प्रिय-उरधारिणी श्रीराधे,
नव-नवरंगी नवल-त्रिभंगी श्याम सु-अंगी श्रीकृष्ण।।२।।

प्राण-पियारी रूप-उजयारी अति-सुकुमारी श्रीराधे,
मैन-मनोहर महामोदकर सुन्दरवर-तर श्रीकृष्ण।।३।।

शोभा-सैनी मोभा-मैनी कोकिल-बैनी श्रीराधे,
किरति-वंता कामिनी-कांता श्रीभगवंता श्रीकृष्ण।।४।।

चंदा-वदनी कुंदा-रडनी शोभा-सदनी श्रीराधे,
परम-उदारा प्रभा अपारा अति-सुकुमारा श्रीकृष्ण।।५।।

हंसा-गवनी राजति-रवनी क्रीड़ा-कवनी श्रीराधे,
रूप-रसाला नैन-विशाला परम-कृपाला श्रीकृष्ण।।६।।

कांचन-बेली रति-रस-रेली अति-अलबेली श्रीराधे,
सब-सुखसागर सबगुण-आगर रूप-उजागर श्रीकृष्ण।।७।।

रवनी-रम्या तर-तर-तम्या गुण-अगम्या श्रीराधे,
धाम-निवासी प्रभा-प्रकाशी सहज-सुहासी श्रीकृष्ण।।८।।

शक्त्याह्लादिनी अति-प्रिय-वादिनी उर-उन्मादिनी श्रीराधे,
अंग-अंग-तौन सरस-सलौन सुभग-सुथौन श्रीकृष्ण।।९।।

राधानामिनी गुण-अभिरामिनी हरिप्रियस्वामिनी श्रीराधे,
हरे-हरे-हरि हरे-हरे-हरि हरे-हरे-हरि श्रीकृष्ण।।१०।।